

खुद को एक सोने के सिक्के जैसा बनाइये, जो कि अगर नाली में भी गिर जाए तो भी उसकी कीमत कम नहीं होती है....!!

ब्रीफ न्यूज़

सलमान को मिली बम से उड़ाने की धमकी

मुंबई। बॉलीवुड भाई जान सलमान खान को एक बार फिर जान से मारने की धमकी मिली है। इस बार मुंबई के वली परिवहन विभाग के व्हाट्सएप नंबर पर धमकी भरा संदेश भेजा गया है। इसमें सलमान घर में घुसकर जान से मारने की धमकी दी गई है। साथ ही उनकी कार को बम से उड़ाने की भी धमकी दी है। घटना के बाद वली पुलिस स्टेशन में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। संदेश कहां और कैसे भेजा गया? इसकी जांच भी शुरू कर दी गई है।

मेहुल गिरफ्तार, भारत ने किया प्रत्यर्पण का अनुरोध

नई दिल्ली। पीएनबी घोटाले मामले में बांछित भगोड़े हीरा व्यापारी मेहुल चोकसी को बेल्जियम में गिरफ्तार कर लिया गया है। बेल्जियम की संघीय लोक सेवा ने सोमवार को पुष्टि करते हुए कहा कि भगोड़े भारतीय व्यवसायी मेहुल चोकसी को 12 अप्रैल को गिरफ्तार किया गया था और वर्तमान में उसे हिरासत में रखा गया है। वह स्विट्जरलैंड भागने की कोशिश कर रहा था। मेहुल की पत्नी प्रीति बेल्जियम की नागरिक है। बेल्जियम का कहना है कि भारत ने उसके प्रत्यर्पण के लिए अनुरोध किया है। मेहुल ने बेल्जियम में निवास कार्ड पाने के लिए जाली दस्तावेज जमा किए। उसने यह भी छिपाया कि वह भारत और एंटिगुआ का नागरिक है।

सऊदी अरब ने दिया इटका प्राइवेट हज कोट घटया

नई दिल्ली। सऊदी अरब ने पिछले दो हफ्ते के अंदर तीसरा बड़ा इटका दिया है। पहले भारत समेत 14 देशों पर अस्थाई रूप से वीजा पर बैन लगा दिया था। उसके बाद पिछले हफ्ते उन विदेशियों को 29 अप्रैल तक देश छोड़ने का फरमान सुनाया था, जो उमराह करने वैध वीजा लेकर सऊदी अरब पहुंचे थे। अमेरिकन लोग अवैध तरीके से लंबी अवधि तक वहां ठहर जाते थे ताकि हज करके लौटें। अब मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि सऊदी अरब सरकार ने एक और सख्त कदम उठाते हुए भारत के प्राइवेट हज कोटे में 80 फीसदी तक की कटौती कर दी है।

साउथ के सुपरस्टार ने किया वक्फ बिल का विरोध

नई दिल्ली। संसद में वक्फ संशोधन बिल 2025 को मंजूरी मिलने के बाद 8 अप्रैल से ये कानून देशभर में लागू हो गया है। इसको लेकर कई जगहों पर विरोध भी हो रहा है। इसी बीच अभिनेता से नेता बने, टीवीके पार्टी के अध्यक्ष और साउथ के सुपरस्टार थलापति विजय इस कानून के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। विजय ने वक्फ एक्ट को मुस्लिम विरोधी बताया था। उन्होंने कहा कि इस बिल ने एक बुरा फिर संविधान की गरिमा और सेक्युलर भारतीय लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों पर सवालिया निशान खड़े कर दिए हैं।

खबरदार

सरकार ने जारी की नई गाइडलाइन, सभी राज्यों में ऑनलाइन सिस्टम होंगे शुरू

अब ट्रैफिक नियम तोड़ने पर फोटो से नहीं, वीडियो से बनेगा चालान

एजेंसी ■ नई दिल्ली

अब ट्रैफिक नियम तोड़ने पर चालान सिर्फ फोटो से नहीं, बल्कि वीडियो सबूत से होगा। केंद्र सरकार ने एक नया स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) जारी किया है, जिसके तहत ट्रैफिक नियमों की निगरानी ऑटोमैटिक कैमरों से की जाएगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, यह एसओपी सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने सुप्रीम कोर्ट में पेश किया है, जिसका मकसद सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना और ट्रैफिक सिस्टम को ज्यादा सख्त और पारदर्शी बनाना है। एसओपी में वीडियो साक्ष्य रिकॉर्ड करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, यहां तक कि 200 किमी प्रति



घंटा तक की रफ्तार पर भी। यह पहल सुप्रीम कोर्ट के उस आदेश के जवाब में की गई है जिसमें 23 राज्यों और 7 केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) को मोटर वाहन अधिनियम के अनुसार इलेक्ट्रॉनिक निगरानी के

कार्यान्वयन पर रिपोर्ट करने का निर्देश दिया गया है। एसओपी के अनुसार, ऑटोमैटेड कैमरा प्रवर्तन प्रणाली ट्रैफिक उल्लंघनों की निगरानी के लिए प्रार्थमिक तरीका होगा। यह प्रणाली ड्राइवरों और प्रवर्तन एजेंसियों दोनों

के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन की गई है। इस नई व्यवस्था के तहत हेलमेट या सीट बेल्ट न पहनना, मोबाइल फोन पर बात करना, रॉन्ग साइड गाड़ी चलाना, और ड्राइव करते हुए खाना

या पीना जैसी हरकतों को अब कैमरे में रिकॉर्ड किया जाएगा। यह कैमरे इतनी हाई-टेक होंगे कि 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार तक भी साफ-साफ वीडियो रिकॉर्ड कर सकेंगे।

नहीं चलेगी चालान से बचने की चाल

अक्सर देखा गया है कि लोग चालान से बचने के लिए अपना फोन नंबर या पता बदल देते हैं। इस पर लगाम लगाने के लिए मंत्रालय ने तीन महीने की मोहलत दी है, जिसमें सभी गाड़ी मालिक और ड्राइवर अपने रजिस्टर्ड नंबर और एड्रेस अपडेट कर सकेंगे। तीन महीने के बाद जो भी ट्रांसपोर्ट या ड्राइविंग से जुड़ी सर्विस लेगा, उसे अपना सही-सही डिटेल देना अनिवार्य होगा। गलत जानकारी देने पर कार्रवाई की जाएगी। पारदर्शिता बढ़ाने के लिए एसओपी में यह भी कहा गया है कि सभी राज्यों में ऑनलाइन सिस्टम शुरू किए जाएंगे, जहां गाड़ी मालिक या ड्राइवर अपने चालान के खिलाफ अपील कर सकेंगे। इससे यह सुनिश्चित किया जाएगा कि गलती से भेजे गए चालानों को लोग सही तरीके से चुनौती दे सकें और कार्रवाई निष्पक्ष तरीके से हो।

प्रधानमंत्री मोदी ने यमुनानगर में कंफ्रेस्ट बायोगैस प्लांट का शिलान्यास, महाराजा अग्रसेन एयरपोर्ट का किया उद्घाटन

जल्द चप्पल पहनने वाले लोग भी हवाई जहाज में बैठ सकेंगे

■ अब किसानों को नहर के पानी पर टैक्स नहीं देना पड़ेगा

■ हरियाणा सरकार ने अंग्रेजों के जमाने का कानून किया खत्म

एजेंसी ■ हिसार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को हरियाणा दौर पर पहुंचे थे। पीएम मोदी ने हिसार जिले में पहुंचकर महाराजा अग्रसेन एयरपोर्ट का उद्घाटन किया और हिसार से अयोध्या के लिए रवाना होने वाली पहली फ्लाइट को हरी झंडी दिखाई। साथ ही पीएम ने एयरपोर्ट के टर्मिनल का शिलान्यास किया। इस दौरान पीएम ने

वादा करते हुए कहा कि बहुत जल्द चप्पल पहनने वाले लोग भी हवाई जहाज में बैठ सकेंगे।

हिसार में जनसभा को संबोधित करने के बाद पीएम मोदी यमुनानगर पहुंचे, जहां पर उन्होंने 800 मेगावाट के थर्मल प्लांट की यूनिट और कंफ्रेस्ट बायोगैस प्लांट का शिलान्यास किया। इसके अलावा मंच से ही रिमोट का बटन दबाकर वर्चुअल तरीके से रेवाड़ी बाईपास का उद्घाटन किया। पीएम मोदी ने कहा कि जलियांवाला बाग हत्याकांड अंग्रेजों की क्रूरता के लिए जाना जाता है। पीएम ने कहा कि शंकरन नायर



की तरीफ करते हुए कहा कि उन्होंने अकेले ही पूरे ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया। पीएम मोदी ने कहा कि हरियाणा की गाड़ी विकास के पथ पर दौड़ रही है। वहीं, कांग्रेस शासित राज्यों में जनता के साथ धोखा हो रहा है। पीएम ने कहा कि हरियाणा के पड़ोसी राज्य हिमाचल लोग कितने ज्यादा परेशान हैं, इसके अलावा कर्नाटक में जनता महंगाई से जूझ रही है। पीएम मोदी ने आगे कहा कि कांग्रेस सरकार तेलंगाना में जनता से किए गए अपने सारे वादे भूल गई है।

पीएम ने बाबा साहेब अंबेडकर को दी श्रद्धांजलि

पीएम मोदी ने यमुनानगर में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मैं उस भूमि को नमन करता हूँ जहां देवी सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ, जहां देवी मंत्र का वास है, जहां पंचमुखी हनुमान जी की पूजा होती है, जहां कपाल मोचन साहिब का आशीर्वाद प्राप्त होता है और जहां संस्कृति, आस्था और समर्पण का संगम प्रवाहित होता है। पीएम मोदी ने सभी देशवासियों को बाबासाहेब अंबेडकर की 135वीं जयंती शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि बाबासाहेब का विजन और उनकी प्रेरणा हमें विकसित भारत की यात्रा पर मार्गदर्शन करती रहेगी।

पीएम मोदी ने रामपाल को पहनाए जूते

रामपाल कश्यप हरियाणा के ही कैथल जिले के निवासी हैं। उन्होंने 14 साल पहले कसम खाई थी कि जब तक नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री नहीं बन जाते, और जब तक व खुद पीएम मोदी से नहीं मिल लेते, तब तक जूते नहीं पहनेंगे। सोमवार प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे मुलाकात की और उन्हें अपने हाथों से जूते पहनाए। पीएम मोदी ने खुद टवीट कर इसके बारे में जानकारी दी है। उन्होंने लिखा-मैं रामपाल जी जैसे लोगों के प्रति नतमस्तक हूँ और उनके स्नेह को भी स्वीकार करता हूँ, लेकिन मैं ऐसे सभी लोगों से अनुरोध करना



चाहता हूँ जो ऐसी शपथ लेते हैं - मैं आपके प्यार की कद्र करता हूँ...कृपया किसी ऐसे काम पर ध्यान दें जो सामाजिक कार्य और राष्ट्र निर्माण से जुड़ा हो।

मुर्शिदाबाद हिंसा

अब तक सैकड़ों उपद्रवी

गिरफ्तार, घर लौटे कई परिवार

हालात तनावपूर्ण, खुलने लगी दुकानें व प्रतिष्ठान

एजेंसी ■ कोलकाता

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में वक्फ संशोधन विधेयक के खिलाफ हिंसा जारी है। इसके बाद अब हालात को कंट्रोल करने की कोशिश की जा रही है। बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में हुई हिंसा के सिलसिले में गिरफ्तारियों की कुल संख्या 200 को पार कर गई है, राज्य पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस सिलसिले में सोमवार को यह जानकारी दी। भांगर, मिनाखा, संदेशखली और ढाका से आईएसएफ कार्यकर्ता और स्थानीय लोग विरोध प्रदर्शन के लिए रामलीला मैदान जा रहे थे। रोकें जाने पर प्रदर्शनकारियों ने पुलिस को घेर लिया। प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा।

राज्य पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक जावेद शमीम ने इस बात की पुष्टि की है कि इस मामले में गिरफ्तारियां 200 से अधिक हो गई हैं। उन्होंने कहा कि मुर्शिदाबाद और मालदा जिलों में अशांत इलाकों में स्थिति अब सामान्य है। उन्होंने कहा कि अशांत इलाकों में लगातार मार्च किए जा रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारी मौके पर मौजूद हैं। स्थिति तेजी से सामान्य हो रही है।



दक्षिण 24 परगना में हिंसा?

इस बीच, सोमवार दोपहर पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के अल्पसंख्यक बहुल भांगर विधानसभा क्षेत्र में तनाव की स्थिति पैदा हो गई। पुलिस और भांगर के ऑल इंडिया सेक्युलर फ्रंट के समर्थकों के बीच झड़प हो गई, जब उन्हें कोलकाता में नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ अपने विरोध प्रदर्शन स्थल पर जाने से रोक दिया गया।

दुकानों और प्रतिष्ठान खुलने लगे हैं। उन्होंने कहा कि दूसरे राज्यों के कुछ निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा स्थिति के बारे में अफवाह फैलाने की कोशिश की जा रही है और अफवाहों को फैलाने से रोकने के लिए फिलहाल कुछ इलाकों में इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि विस्थापितों की उनके घरों तक वापसी सुनिश्चित करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। अब तक 19 परिवार अपने घर लौट आए हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा था यह भर्ती दागी

एजेंसी ■ नई दिल्ली

पश्चिम बंगाल के 25 हजार से ज्यादा शिक्षक एवं अन्य स्टाफ की नौकरी सुप्रीम कोर्ट के फैसले से चली गई है। इसे लेकर तीखा विरोध हो रहा है और सीएम ममता बनर्जी का भी कहना है कि वह इस फैसले को स्वीकार नहीं करेंगी। उन्होंने कहा था कि वह उच्चतम न्यायालय के फैसले का सम्मान करती हैं, लेकिन किसी टीचर की नौकरी नहीं जाने देंगी। इस बीच बेरोजगार हुए



शिक्षकों का एक वर्ग दिल्ली रवाना हुआ है। टीचरों का कहना है कि हम दिल्ली तक आवाज पहुंचाना चाहते हैं। शिक्षकों की योजना 16 अप्रैल को राष्ट्रीय राजधानी के जंतर मंतर पर

धरना देने की है। डिजिटिंग टीचर्स राइट्स फोरम के प्रवक्ता महबूब मंडल ने कहा कि शीर्ष अदालत के तीन अप्रैल के आदेश के बाद नौकरी गंवाने वाले शिक्षकों में शामिल 70 लोग दो बसों में

सवार होकर कोलकाता के एस्प्लेनड क्षेत्र से रवाना हुए। उच्चतम न्यायालय ने 26,000 शिक्षकों और गैर-शिक्षकों की भर्ती को रद्द कर दिया था। मंडल ने कहा, हमारा विरोध उन योग्य शिक्षकों को निकालने के खिलाफ है जिन्होंने 2016 में एसएससी की भर्ती परीक्षा योग्यता के आधार पर पास की थी। इसके बावजूद हमें उन लोगों के साथ अनुचित रूप से जोड़ दिया गया, जो भ्रष्टाचार में शामिल हैं।

राणा ने अब तक भोजन के लिए कोई विशेष मांग नहीं की

एजेंसी ■ नई दिल्ली

मुंबई आतंकी हमलों के मुख्य साजिशकर्ता तहक्कुर हुसैन राणा से राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआई) के अधिकारी रोजाना आठ से दस घंटे पूछताछ कर रहे हैं ताकि इस हमले के पीछे की बड़ी साजिश का पता लगाया जा सके। राणा को पिछले सप्ताह अमेरिका से प्रत्यर्पित कर भारत लाया गया था। आधिकारिक सूत्रों ने सोमवार को बताया कि एनआई के अधिकारी राणा की मेडिकल जांच सुनिश्चित कर रहे हैं और उसे उसके वकील से मिलने की भी इजाजत दी जा रही है। दिल्ली की एक अदालत ने शुक्रवार सुबह उसे अमेरिका से

हर दिन 10 घंटे हो रही है पूछताछ जांच में कर रहा सहयोग



प्रत्यर्पित किए जाने के बाद जांच एजेंसी को 18 दिनों की हिरासत में सौंप दिया था। सूत्रों ने बताया कि एनआई जांचकर्ताओं द्वारा राणा से प्रतिदिन लगभग आठ से दस घंटे तक पूछताछ की जा रही है, ताकि 2008 में लश्कर-ए-तैयबा द्वारा किए गए कारगरान हमलों के पीछे की बड़ी साजिश का पता लगाया जा सके। इस हमले में

166 लोग मारे गए थे और 238 से अधिक लोग घायल हुए थे। एक सूत्र ने बताया, पूछताछ के दौरान राणा सहयोग कर रहा है। राणा ने अब तक केवल तीन चीजें मांगी हैं-एक कलम, कागज की शीट या नोटपैड और कुरआन। जो एनआई की ओर से उसे मुहैया करा दिए हैं। राणा ने अब तक भोजन से संबंधित कोई विशेष मांग नहीं की है और उसे बनाए गए मानक प्रोटोकॉल के अनुसार वही खाना दिया जा रहा है। राणा को सीजीओ कॉम्प्लेक्स में एजेंसी के मुख्यालय के अंदर एक उच्च-सुरक्षा सेल में रखा गया है और चौबीसों घंटे सुरक्षाकर्मी उसकी सुरक्षा में तैनात रहते हैं।

भारत और चीन के बीच दोबारा शुरू होगी सीधी फ्लाइट?

दोनों ने व्यापार व आर्थिक मतभेदों को सुलझाने जताई थी सहमति

एजेंसी ■ नई दिल्ली

क्या भारत और चीन के बीच सीधी फ्लाइट फिर से शुरू होने वाली है? इसे लेकर दोनों देशों के अधिकारियों के बीच बातचीत हुई, लेकिन अभी तक कोई तारीख तय नहीं की गई है। नई दिल्ली की ओर से सोमवार को कहा गया कि 5 साल पहले सीमा पर हुई झड़प के बाद संबंधों में सुधार जारी है। दोनों पड़ोसी देशों ने व्यापार और आर्थिक मतभेदों को सुलझाने पर बीते

जनवरी में सहमति जताई थी। इससे उनके बीच विमानन क्षेत्रों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। बीजिंग को लेकर कहते हैं कि कोरोना महामारी से उबरने में अन्य देशों से पीछे रह गया है। नागरिक उड्डयन सचिव वुमलुनानांग वुअलनाम ने नई दिल्ली में भारतीय वाणिज्य मंडल की ओर से आयोजित सम्मेलन में बयान दिया। उन्होंने कहा कि हमारे मंत्रालय और चीनी समकक्ष के बीच एक दौर की बैठक हुई है। उन्होंने कहा कि अभी कुछ मुद्दों को सुलझाना बाकी है, लेकिन सीधी विस्तार से जानकारी नहीं दी जा सकती।

कृष्णा क्लीनिक



बवासीर, भगन्दर, फीशर, हाईड्रोसिल

जीवनभर के लिए जड़ से
मिटायें। अगर बीमारी सही
नहीं हुआ तो पैसे वापस गारण्टी
लिखित में दिया जायेगा।

पुरुष एवं महिलाओं का सभी प्रकार के गुप्त रोगों का
इलाज किया जाता है (60 साल की उम्र में 25 साल की जवानों पाए)।

Dr. P.K. Hazra

(B.A.M.S.) Mob.: 810128101

समय : प्रातः 10 :00 बजे से रात्रि 8 :00 बजे तक

डॉ. डी. नगर गेट के पास, वायु नगर गेट के सामने, टॉप सुपर
बाजार के पीछे, मिण्ड रोड, ग्वालियर (म.प्र.)

केवी- 4 के पास तेज बाइक में टक्कर मारता हुआ निकला रफ्तार वाहन

इयूटी जा रहे सूर्या फैक्ट्री के दो कर्मचारियों की सड़क हादसे में मौत

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

ज्वालियर में हिट एंड रन का एक और मामला सामने आया है, जिसमें इयूटी जा रहे सूर्या फैक्ट्री के दो कर्मचारियों की मौके पर ही मौत हो गई। सुबह पांच बजे के लगभग भिंड रोड पर स्थित केवी- 4 के पास उनकी बाइक में तेज रफ्तार वाहन चालक टक्कर मारता हुआ निकल गया। घटना की सूचना पाकर पहुंची महाराजपुरा थाना पुलिस द्वारा शवों का पीएम करवाने के उपरांत अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर उसका पता लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पिंटो पार्क स्थित भूप्रसिंह सिकरवार (50 वर्ष) और उनके पड़ोस में रहने वाला मुकेश



अग्निहोत्री मालनपुर स्थित सूर्या फैक्ट्री में जाँब करते थे। जो सुबह पांच बजे एक साथ बाइक पर सवार होकर घर से इयूटी जाने के लिए निकले थे। जब वह



महाराजपुरा थाना क्षेत्रांतर्गत भिंड रोड पर केंद्रीय विद्यालय- 4 के सामने से होकर गुजर रहे थे, तभी कोई तेज रफ्तार वाहन चालक उनकी बाइक में जोरदार टक्कर

मारता हुआ निकल गया। टक्कर लगते ही दोनों बाइक सवार सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्होंने कुछ देर में मौके पर ही तड़पड़े हुए दम तोड़ दिया।

पीछे आ रहे सहकर्मियों ने दो सूचना

चूंकि हादसा अलसुबह हुआ है, जिससे उसे वक्त रोड पर अधिक चहल- पहल नहीं थी। बताया गया है कि ऐसे में दोनों घायल सड़क पर ही पड़े रहे। पीछे से इयूटी जाने वाले अन्य सहकर्मियों ने जब उन्हें देखा, तो उनके परिजनों व पुलिस को जानकारी दी। भूप्रसिंह का बेटा विष्णु जब तक मौके पर पहुंचा, तब तक पिता व उनके दोस्त की

मौत हो चुकी थी। इसी दौरान पुलिस भी पहुंच गई, जिसने शवों को पीएम के लिए पहुंचाया।

सीसीटीवी फुटेज से होगी आरोपी की शिनाख्त

बताया गया है कि भूप्रसिंह और मुकेश अधिकांशतः बस से ही इयूटी जाते थे। वह तो कोई काम होने के कारण वह सोमवार को बाइक से निकले थे। इसी दौरान अज्ञात वाहन चालक ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया, जिससे दोनों की मौत हो गई। पुलिस द्वारा आरोपी का पता लगाने के लिए घटनास्थल व समीपी स्थित टोल प्लाजा पर लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज चेक किए जा रहे हैं।

अवैध रेत खनन पर माइनिंग विभाग की कार्रवाई लुहारी घाट पर एक पनडुब्बी जलाई, सूचना लीक होने से दूसरी भागी

भितरवार। माइनिंग विभाग ने सोमवार की सुबह भितरवार क्षेत्र के सिंध नदी के लुहारी घाट पर अवैध रेत खनन के खिलाफ कार्रवाई की। विभाग को इस क्षेत्र में पनडुब्बियों के माध्यम से अवैध रेत के खनन की शिकायतें मिल रही थीं। जिस पर पहुंची माइनिंग विभाग की टीम को नदी के एक पनडुब्बी रेत का अवैध खनन करती हुई मिली जिस पर कार्यवाही करते हुए उसे जलकर नष्ट किया गया तो वहीं विभाग की सूचना लीक होने के कारण चल रही एक पनडुब्बी वहां से भाग खड़ी हुई जिससे अवैध के खनन पर होने वाली माइनिंग विभाग



घाट पर और भी पनडुब्बियां पकड़ी जा सकती थीं। लेकिन सूचना लीक होने के कारण माफिया समय रहते अपनी पनडुब्बियां लेकर नदी घाट से भाग गए, जिससे बड़ी कार्रवाई का प्रभाव कम हो गया।

दिन-रात चलता है अवैध खनन और परिवहन

पिछले 7- 8 महीने से भितरवार की नजदीकी ग्रामों से होकर निकली सिंध नदी का लुहारी घाट हो या पवाया

मेडिकल न होने से बाबा अमरनाथ के भक्तों की यात्रा अधर में, अस्पतालों से डॉक्टर नदारत

बाबा बर्फानी समिति ने हालात न सुधरने पर दी सीएमएचओ ऑफिस के घेराव, उग्र प्रदर्शन की चेतावनी

ज्वालियर। प्रति वर्ष ज्वालियर चंबल क्षेत्र से हजारों की तादाद में श्रद्धालु बाबा अमरनाथ की यात्रा पर जाते हैं, नियमानुसार उनके मेडिकल की प्रक्रिया पूर्ण किया जाना अनिवार्य है, तभी रजिस्ट्रेशन पूर्ण होता है लेकिन इस बार ज्वालियर शहर के सरकारी अस्पतालों में बाबा अमरनाथ के भक्तों को यात्रा के लिए अपना मेडिकल कराने के लिए भटकना पड़ रहा है। श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड द्वारा अमरनाथ यात्रा की तारीखों की घोषणा होते ही ज्वालियर के श्रद्धालुओं की सुरक्षित एवं निर्विघ्न यात्रा की दिन रात तैयारियों में जुटी बाबा बर्फानी समिति के संरक्षक महेंद्र भदकारिया एवं बृज कटारिया सहित लोकेश शर्मा, पन्नालाल गौड़, श्याम लहारिया, भरत ढींगरा, गजेन्द्र शर्मा ने मेडिकल कराने के

लिए ज्वालियर के अस्पतालों में भटक रहे बाबा अमरनाथ के भक्तों की व्यथा को उजागर करते हुए बताया कि कभी अस्पतालों में जिम्मेदार डॉक्टर नदारत रहते हैं तो कभी अस्पताल में अन्य स्टाफ नहीं रहता है। कभी डॉक्टर काफी देर से आकार जल्दी चले जाते हैं तो कभी अस्पताल समय से पहले बंद हो जाता है। कई चक्कर लगाने के बाद अनेक श्रद्धालु इस हद तक निराश हो चुके हैं कि उन्होंने अमरनाथ यात्रा करने का विचार ही छोड़ दिया है। बाबा बर्फानी समिति के संरक्षक महेंद्र भदकारिया एवं बृज कटारिया ने इस निराशाजनक स्थिति पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि ज्वालियर के सीएमएचओ को कई दफा इन हालात से अवगत कराया गया लेकिन उन्होंने अपने अधीनस्थ अस्पतालों की व्यवस्था सुधारने और उत्तरदायी डॉक्टरों को श्रद्धालुओं का निर्विघ्न मेडिकल कराने के लिए निर्देशित करने की जहमत नहीं की। बाबा बर्फानी समिति ने अब सख्त चेतावनी दी है कि ज्वालियर के सरकारी

अस्पतालों में बाबा अमरनाथ यात्रियों के मेडिकल के लिए मुकम्मल व्यवस्थाएं दुरुस्त नहीं की गईं तो बाबा अमरनाथ यात्रियों द्वारा ज्वालियर सीएमएचओ के दफ्तर पर घेराव एवं उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। ज्वालियर जिला प्रशासन के आला अधिकारियों को भी ज्ञापन पत्र देकर आंदोलन का अल्टीमेटम दिया जाएगा। उन्होंने सख्त चेतावनी दी कि सीएमएचओ एवं अन्य अधिकारी यह न भूलें कि बाबा के भक्त शांति के पथ के अलावा शिव के तांडव में भी सुत्कीन रखते हैं।

अमरनाथ यात्रियों की मदद के लिए बाबा बर्फानी समिति ने तैनात किए पदाधिकारी: बाबा बर्फानी समिति के संरक्षक महेंद्र भदकारिया ने बताया यात्रा जुलाई की अंतिम तारीखों को यात्रा पर जाने के लिए मेडिकल और रजिस्ट्रेशन होना अनिवार्य है 7 यात्री आनंदाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार से रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं यात्रा पर जाने वाले की आयु 13 वर्ष कम व 70 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। ज्वालियर के श्रद्धालुओं के

मेडिकल और रजिस्ट्रेशन से लेकर अन्य सभी तरह की समस्याओं के निराकरण एवं शंकाओं के समाधान के लिए एक कमेटी बनाई गई है। कमेटी में महेंद्र भदकारिया 9893219925, बृज कटारिया 9303457766, लोकेश शर्मा 9826730666, श्याम लहारिया 9826650300, सुनील शिवहरे 9229117105, भरत ढींगरा 9425112568, पन्नालाल गौड़ 9009479083, गौरव नागवानी 9685295881, तेजेन्द्र गर्ग 9074701299, विकास बाधवानी 8319567853 शामिल हैं।

यात्रा जुलाई की अपेक्षा जून में ही शुरू कर देनी चाहिए- महेंद्र भदकारिया ने यह भी कहा कि श्राइन बोर्ड को यात्रा जुलाई की अपेक्षा जून में ही शुरू कर देनी चाहिए जिससे सभी यात्रियों को हिम शिवलिंग के दर्शन हो सकें। बढ़ते प्रदूषण के कारण वर्ष 2024 में भी बाबा बर्फानी का हिम शिवलिंग यात्रा की शुरुआत में ही अंतर्धान हो गया था।



मीना सचान, राकेश माहौर, जितेंद्र गुर्जर, अशोक जादीन, जिला महामंत्री राजू पलैया, विनय जैन, विनोद शर्मा, मधुसूदन भदौरिया, जिला उपाध्यक्ष अरुण कुलश्रेष्ठ, श्री धर्मेन्द्र राणा, रामेश्वर भदौरिया, धर्मेन्द्र सिंह तोमर (विट्टू), कनकर किशोर मंगलानी, महेश उमरैया, अनुसूचित जाति मोर्चा अध्यक्ष संतोष गोडवाले, सुधीर गुप्ता, श्रीमती हेमलता बुधोलिया, दीपक शर्मा, केशव माझी, सुरेंद्र शर्मा, राजू सेंगर, जिला मंत्री धर्मेन्द्र सिंह कुशवाहा, दारा सिंह सेंगर, गिरांज कंसाना, शैली शर्मा, संतेंद्र शर्मा, नवीन राहेंद्र, श्रीमती लता सिंह, श्रीमती विद्या थोराट, जिला

कोषाध्यक्ष महेंद्र सोलंकी, रमेश सेन, राजेंद्र जैन, सुधर सिंह पवैया, जिला मीडिया प्रभारी नवीन चौधरी, अरविंद रघुवंशी, राघवेंद्र कुशवाह, धर्मेन्द्र आर्य, प्रमोद खंडेलवाल, मोनू कंसाना, हेमंत चौपड़ा, मंडल अध्यक्ष सतपाल जादौन, कौशलेन्द्र राजावत, विनय शर्मा, अरुण वाजपेई, प्रवीण भारद्वाज, प्रमोद परमार, मुकेश दुबे, योगेंद्र सिंह तोमर, लवी खंडेलवाल, जबर सिंह गुर्जर, शिव सिंह यादव, बृजमोहन शर्मा, महेश भदौरिया, उमेश भदौरिया, अमर कुटे, प्रतीक तिवारी, अनिल सांखला सहित जिला पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शैलेन्द्र सक्सेना राष्ट्रीय कायस्थ महापरिषद के जिला अध्यक्ष बने

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

राष्ट्रीय कायस्थ महापरिषद के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अजय श्रीवास्तव की अनुशंसा पर प्रदेश महामंत्री मनीष कुमार माथुर एवं संभागीय अध्यक्ष संदीप जौहरी ने शिवाजी नगर, थाटीपुर निवासी शैलेन्द्र सक्सेना को महापरिषद का जिला अध्यक्ष मनोनीत किया है। उक्त संस्था का प्रादुर्भाव विभिन्न कायस्थ संगठनों को समान उद्देश्य के लिए एक मंच पर लाने के लिए किया गया है। यह संस्था किसी भी संस्था के अपने कार्यक्रम में हस्तक्षेप न कर समाज व सरकारों को कायस्थ एकता के प्रदर्शन एवं समाजउपयोगी बड़े व महत्वपूर्ण कार्य करने के विचार को लेकर कार्य करती है। आशा है कि शैलेन्द्र सक्सेना अपने अनुभव, कार्यकुशलता, समाज एवं सरकार के रस्तर पर अपने संबंधों से इस संस्था को और ऊँचाईयों पर ले जाएंगे। इनका मनोनयन दो वर्ष के लिए रहेगा। महापरिषद के नियमानुसार अपना उत्तरदायित्व वहन न करने पर या आपको अनैतिक गतिविधियों में लिप्त पाया जाने पर उक्त पद से विमुक्त कर दिया जाएगा। यह पद धारण करने वाले कायस्थ साथी को अपनी कार्यकारिणी गठित करनी होगी।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत बैसली नदी पर किया श्रमदान



ज्वालियर। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत सोमवार को बैसली नदी पर जन अभियान परिषद से जुड़ी नवांकर संस्था सर्वे भवन्तु सुखिन व अन्य प्रसफुटन समितियों एवं विद्यार्थियों ने नदी गहरीकरण व साफ-सफाई का काम किया। साथ ही पौधे रोपकर उन्हें ट्रीगाड व कांटों की बाड़ लगाकर सुरक्षित किया। हुरावली चौराहे के समीप आयोजित हुए इस श्रमदान कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के संभागीय अध्यक्ष सुशील बरूआ व जिला अध्यक्ष धर्मेन्द्र दीक्षित सहित अन्य सेवाभावी नागरिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर सभी ने जल संरक्षण व संवर्धन कार्य करने की शपथ भी ली।

बाबा साहब पर सियासत, कांग्रेस भाजपा आई आमने-सामने

ज्वालियर। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती पर फूलबाग स्थित अंबेडकर पार्क में सभी समाज के लोगों के साथ ही बीजेपी-कांग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दल भी बाबा साहब को नमन करने पहुंचे। चूंकि राजनीतिक कार्यक्रम था तो ऐसे में सियासत दिखाई न दे ऐसा नहीं हो सकता। ज्वालियर पूर्व से कांग्रेस विधायक सतीश सिकरवार ने 2 लाख लोगों के लिए महाभंडारा आयोजित करके कहीं न कहीं भाजपा पर अप्रत्यक्ष तरीके से हमला करने की कोशिश की है। क्योंकि इसी पार्क में स्थापित अंबेडकर की प्रतिमा पर सरकार के मंत्री नारायण सिंह कुशवाह सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता बाबा साहब को नमन करने पहुंचे थे। वहीं कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने खुला भंडारा चला दिया, साथ ही कहा कि भारतीय जनता पार्टी बाबा साहब के बनाये सविधान को बदलना चाहती है, बीजेपी के लिए कहावत है मुंह में राम बगल में छुरी। भाजपा सिर्फ जातीयों को लड़ाने और देश को बांटने का काम कर रही है। कांग्रेस विधायक के आरोपों पर मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने पलटवार करते हुए कहा कि बाबा साहब को सही सम्मान भाजपा ने ही दिया है। जबकि कांग्रेस ने तो लगातार बाबा साहब का अपमान ही किया है। कांग्रेस आज भी बाबा साहब के नाम के जरिए जनता को बरगलाने का काम कर रही है।

निगम आयुक्त ने किया विकास कार्यों का निरीक्षण, अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

ज्वालियर। नगर निगम आयुक्त संघप्रिय ने सोमवार को शहर के विभिन्न क्षेत्रों में विकास कार्यों का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निगम आयुक्त संघप्रिय ने सर्वप्रथम वार्ड 55 में खजंजी बाबा क्षेत्र में बन रही रोड एवं साइन नगर बिजली घर के आसपास की सड़कों का निरीक्षण किया तथा क्षेत्रीय नागरिकों से भी चर्चा की एवं समय सीमा में तथा गुणवत्तापूर्ण कार्य पूर्ण करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। इसके साथ ही वार्ड 55 स्थित अवाडगुरा पार्क का भी निरीक्षण किया तथा पार्क में हरियाली एवं फाउंटेन इत्यादि को देखा तथा फाउंटेन को चलवा कर भी देखा। इसके साथ ही क्षेत्र के नागरिकों से पार्क को साफ स्वच्छ व मटेन रखने का आग्रह किया। साथ ही आसपास साफ सफाई का व्यवस्था का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निगम आयुक्त संघ प्रिय ने केदारपुर



पर निगम द्वारा विकसित की जा रही आदर्श कॉलोनी का अवलोकन किया, उक्त कॉलोनी में 287 स्व घटक निर्माण योजना के अंतर्गत आवासों का निर्माण प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों द्वारा किया जाना है। उक्त कॉलोनी के अधो संरचना

विकास का कार्य निगम द्वारा 4.83 करोड़ रूपए से कराया जा रहा है। जिसमें सड़क, सीवर, पेयजल, नाली एवं विद्युत व्यवस्था का प्रावधान है, उक्त कार्य पूर्ण किया जा रहा है। जिसमें निगम आयुक्त संघप्रिय ने कार्य को गुणवत्तापूर्ण एवं सुचारु तरीके से पूर्ण करने के

निर्देश दिए तथा दो अन्य सड़क निर्माण के लिए भी निर्देशित किया। इसके साथ ही उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि जो हितग्राही अभी तक भवन निर्माण का कार्य प्रारंभ नहीं कर सके हैं उन्हें नोटिस जारी करें। नगर निगम आयुक्त संघप्रिय ने जड़ेरुआ से बेहटा हाईवे तक किए

जा रहे रोड निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया। इसमें 6 किलोमीटर सड़क का निर्माण स्मार्ट सिटी द्वारा किया जा रहा है जिसमें बीच में 200 मीटर सड़क पर निजी भूमि के विवाद के चलते सड़क निर्माण पूर्ण नहीं हो पा रहा जिसको लेकर निगमायुक्त ने निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि संबंधित एसडीएम के माध्यम से दस्तावेज एवं मौका का निरीक्षण किया जाकर सीमांकन कराया जाए। उक्त स्थानों पर निरीक्षण के दौरान उपायुक्त अमर सत्य गुप्ता, सिटी प्लानर पवन सिंहवाल, कार्यपालन यंत्री सुरेश अहिवार, सहायक यंत्री महेंद्र प्रसाद अग्रवाल, राजू गोयल, क्षेत्राधिकारी सोरब शाक्य, स्मार्ट सिटी के इंजीनियर अभिषेक त्रिपाठी, नोडल अधिकारी आवास योजना मनीष यादव, आशीष राजपूत, मुख्य स्वच्छता अधिकारी डॉ. वैभव श्रीवास्तव, स्वास्थ्य अधिकारी भीष्म पमनानी सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

जयंती पर जय भीम के नारों के साथ रैली में उमड़ी भीड़

भितरवार। अंबेडकर की 134 वीं जयंती के अवसर पर भितरवार नगर में बिशाल रैली का आयोजन किया गया। यह रैली नगर के वार्ड क्रमांक 03 स्थित श्री रामगिरी आश्रम से आरंभ हुई और करेरा तिराहा, मुख्य बाजार, मेन तिराहा होते हुए बस स्टैंड पहुंची जहां से भितरवार-डबरा स्थित पाताली हनुमान रोड तक पहुंची जहां से वापस रामगिरी आश्रम पहुंची जहां उसका विशाल जनसभा के साथ समापन किया गया।

कार्यालय संयुक्त संचालक पशुपालन विभाग संभाग ज्वालियर एवं चंबल
गंधी रोड, किरार भवन के पीछे, पटेल नगर सिटी सेंटर ज्वालियर फोन 0751-2424717
Mail: Jdvs.ahgwa@mp.gov.in

क्रमांक 1070 प्रक्षेत्र / 2024-25/ज्वालियर दिनांक 28-03-2025

रुने का भूसा हेतु निविदा

कार्यालय संयुक्त संचालक पशुपालन विभाग ज्वालियर के अधीन स्थापित शासकीय बकरी पालन प्रक्षेत्र आरेन (चांदीगढ़) के बकरी धन के खायान हेतु वर्ष 2025-26 के लिये चना-भूसा क्रय हेतु निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। इच्छुक निविदाकार निविदा फार्म तथा शर्तें रुपये 1000/- (एक हजार मात्र) नगद अघोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में जमा कर दिनांक 15.04.2025 से दिनांक 29.04.2025 तक प्राप्त कर सकते हैं, तथा निविदाप्रपत्र पूर्ण कर दिनांक 01.05.2025 को दोपहर 4.00 बजे तक अघोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत अथवा पंजीकृत डॉक द्वारा जमा किये जा सकते हैं। प्राप्त निविदाएं दिनांक 02.05.2025 को दोपहर 1.00 बजे कार्यालय में गलित समिति द्वारा खोली जावेगी तथा उक्त समय समस्त निविदाकर्ता अथवा उनके प्रतिनिधि उपस्थित रह सकते हैं। निविदा के शेष नियम एवं शर्तें निविदा प्रपत्र अनुसार रहेंगी। भूसे की अनुमानित राशि 2.40 लाख होगी।

संयुक्त संचालक पशुपालन विभाग ज्वालियर एवं चंबल संभाग

G-11514/25

ब्रीफ न्यूज

रुस ने सूमी शहर पर दागी मिसाइल, 34 की मौत

कीव। यूक्रेन के सूमी शहर में रविवार को रूस के मिसाइल हमले में कम से कम 34 लोगों की मौत हो गई और 117 घायल हो गए। यह हमला उस समय हुआ जब लोग पाम संडे मना रहे थे। मीडिया रिपोर्ट में यूक्रेनी अधिकारियों ने बताया कि यह हमला सुबह करीब 10-15 बजे दो बैलिस्टिक मिसाइलों के जरिए किया गया। मृतकों में दो बच्चे भी शामिल हैं, जबकि घायलों में 15 बच्चे हैं। घटना के वीडियो फुटेज में शवों को कम्बलों में लपेटकर सड़क किनारे रखा गया और अग्निशमन दल क्षतिग्रस्त इमारतों से धधकती कारों की आग बुझाते नजर आया। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा कि यह हमला आम नागरिकों को निशाना बनाकर किया गया है। राष्ट्रपति कार्यालय के प्रमुख ने आरोप लगाया कि रूस ने हमले में क्लस्टर बमों का इस्तेमाल किया, हालांकि इसकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है। यह सूमी पर एक सप्ताह में दूसरा बड़ा हमला है। इससे पहले, 4 अप्रैल को क्रिवी रीह में मिसाइल हमले में 20 लोगों की मौत हो गई थी। जेलेंस्की ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से तत्काल और ठोस प्रतिक्रिया की अपील करते हुए कहा कि बातचीत से मिसाइलें नहीं रुकतीं। अब समय है कि रूस को आतंकवादी राष्ट्र जैसा ही जवाब दिया जाए।

अफगानिस्तान में 4 लोगों को दी मौत की सजा, बतौर सजा स्टैंडियम में मारी गोली

काबुल। अफगानिस्तान में हत्या के एक मामले में दोषी चार लोगों को मौत की सजा सुनाई गई। इसके कुछ दिनों बाद चारों दोषियों को शुक्रवार को स्टैंडियम में गोली मार दी गई और यह 2021 में तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद से एक दिन में सबसे ज्यादा लोगों को मौत की सजा दी गई है। मानव अधिकार समूहों और संयुक्त राष्ट्र ने इस घटना की निंदा की है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक तालिबान नेता हिबतुल्ला अखुंदजादा ने पूर्व में अफगानिस्तान में पश्चिमी कानूनों की जरूरत को खारिज कर दिया था। तालिबान के मुख्य प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद ने रविवार को एक्स पर एक ऑडियो जारी किया। इसमें अखुंदजादा ने कहा कि हमें अनुशासन और इबादत के काम करने चाहिए। हमें पूरी तरह से इस्लाम अपनाना चाहिए। इस्लाम सिर्फ कुछ रस्मों तक सीमित नहीं है। यह सभी अल्लाह के आदेशों की एक व्यापक व्यवस्था है।

पाकिस्तान आतंकवाद और दुनिया के बीच दीवार की तरह खड़ा है: नकवी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने कहा है कि उनका देश आतंकवाद और दुनिया के बीच दीवार की तरह खड़ा है। उन्होंने अमेरिकी संसद के शिष्टमंडल से मुलाकात की और अर्थव्यवस्था, व्यापार, सुरक्षा व आतंकवाद-रोधी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने पर चर्चा की। अमेरिकी शिष्टमंडल में जैक बर्गमैन, थॉमस रिचर्ड सुओजी और जोनाथन एल जैक्सन शामिल थे। मीडिया रिपोर्ट में जारी आधिकारिक बयान के मुताबिक दोनों पक्षों ने अर्थव्यवस्था, व्यापार, निवेश, सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी सहयोग को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए आपसी हितों के मामलों पर बातचीत की।

चेतावनी

पूर्व पीएम शेख हसीना ने युनुस पर बांग्लादेश के इतिहास को मिटाने का आरोप लगाया

वीडियो जारी कर बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना ने यूनुस को दी चेतावनी

एजेंसी ■ ढाका

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने वीडियो जारी कर अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस को चेतावनी दी। शेख हसीना ने अंतरिम सरकार को खुदाजंज सूदखोर करार दिया। वहीं ढाका कोर्ट से गिरफ्तारी वारंट जारी होने के बाद शेख हसीना की भतीजी और बिडिशा सांसद ट्यूलिप सिद्दीकी ने भ्रष्टाचार के आरोपों को खारिज किया। पूर्व पीएम शेख हसीना ने आम मिन्ट के वीडियो में कहा कि अंतरिम सरकार ने सत्ता की प्यास बुझाने के लिए विदेशी शक्तियों के साथ मिलकर देश के पतन की साजिश रची। उन्होंने युनुस पर बांग्लादेश के इतिहास को मिटाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश के



स्वतंत्रता संग्राम के सभी चिह्न मिटाए जा रहे हैं। स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान किया जा रहा है। हमने उनकी यादों को जिंदा रखने के लिए सभी जिलों में मेमोरियल बनाए थे, लेकिन उन्हें जला दिया जा रहा है। क्या डॉ.



यूनुस इसे सही मान रहे हैं? अगर युनुस आप से खेलेंगे तो यह आपको भी जला देगी। उन्होंने कहा कि उस कर्जदार, सत्ता के भूखे, पैसे के भूखे और आत्मकेंद्रित व्यक्ति ने विदेशी साजिश रची और देश को नष्ट करने

के लिए विदेशी फंड का इस्तेमाल किया। बीएनपी और जमात ए इस्लामी हत्याएं कर रहे हैं और आवामी लोग को परेशान कर रहे हैं। शेख हसीना ने कहा कि आवामी लोग के नेताओं को उपद्रवियों की मौत के लिए फंसाया जा रहा है। जिन लोगों ने पुलिस स्टेशन जलाए और पुलिसकर्मियों को मार डाला, उन पर आरोप नहीं लगाए जा रहे हैं। आवामी लोग के नेताओं के खिलाफ मामले दर्ज किए जा रहे हैं। मोहम्मद यूनुस को इसके परिणाम पता थे, लेकिन वे सत्ता के भूखे हैं। ढाका कोर्ट से गिरफ्तारी वारंट जारी होने के बाद शेख हसीना की भतीजी और ब्रिटिश सांसद ट्यूलिप सिद्दीकी ने भ्रष्टाचार के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने कहा कि मैंने कोई गलत काम नहीं

किया है। सिद्दीकी के प्रवक्ता ने कहा कि सिद्दीकी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप पूरी तरह से झूठे हैं और उनके वकीलों ने इस मामले को निपटा दिया है। प्रवक्ता ने बताया कि भ्रष्टाचार निरोधक आयोग ने सिद्दीकी को कोई जवाब नहीं दिया और न ही सीधे या उनके वकीलों के माध्यम से उन पर कोई आरोप लगाया है। सिद्दीकी को ढाका में उनके संबंध में चल रही सुनवाई के बारे में कुछ भी पता नहीं है और उन्हें किसी भी गिरफ्तारी वारंट के बारे में कोई जानकारी नहीं है। उन पर लगाए गए किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं है और इस आरोप में कोई सच्चाई नहीं है कि उसने अवैध तरीकों से ढाका में जमीन का एक प्लॉट लिया।

जम्मू- कश्मीर में चार दमकल कर्मी बलिदान, 486 लोगों ने गंवाई जान



संके। 2022 में यह कार्यक्रम शुरू किया था। इसके तहत शिक्षा, स्वास्थ्य और अद्योगिक संस्थानों में कार्यक्रम किए हैं। मार्च 2025 में इन संस्थानों में 7551 कार्यक्रम हुए हैं। इसमें 8.23 लोगों को शामिल किया, जिसमें 5.86 विद्यार्थी है। विभाग फायर सेफ्टी आडिट करवाता है।

प्रदेश में 2020 में 4072 और 2024 में 7749 आगजनी की घटनाएं हुईं समय पर सूचना न मिलना और घटना स्थल के आसपास ट्रैफिक जाम व अवैध पार्किंग सबसे बड़ी चुनौती होती है। 2020 से 2024 तक आग पर काबू पाते हुए चार दमकल कर्मी बलिदान हुए।

आगजनी की बढ़ती चुनौती को देखते हुए जम्मू-कश्मीर अग्नि एवं आपातकालीन सेवा विभाग खुद को भी मजबूत कर रहा है। दिसंबर 2024 में विभाग ने बाड़ी बाहण्णा में आपातकालीन सेवा प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया है। मार्च में दमकल कर्मियों के पहले बैच ने प्रशिक्षण पूरा किया। केंद्र में अब रिफ्रेशर कोर्स करवाया जाता है, ताकि दमकल कर्मियों को घेर-घेरकर उनके अंजाम तक पहुंचाने का काम जारी रखना होगा। बेहद प्रशिक्षित हैं आतंकी...विलेज डिफेंस कमेटी को मजबूत करना होगा - सैयद अता हसनैनजम्मू-कश्मीर मामलों के जानकार लैप्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) सैयद अता हसनैन कहते हैं कि घुसपैठ कर आए आतंकी वेल् टेंड हैं। ये 25 से 35 की टुकड़ियों में अलग-अलग स्थानों पर बिखरे हुए हैं। छिपने के लिए ये तीन-चार के ग्रुप में बंट जाते हैं। जिस तरह से इनका प्रशिक्षण है उससे पाकिस्तान की स्पेशल फोर्स के भी इसमें शामिल होने की आशंका है। जो कुछ अब तक देखने में आया है उससे तो एक बात साफ है कि ये आतंकी गांव के लोगों के साथ घुल-मिलकर रहने में माहिर हैं।

कश्मीर संभाग में तीन माह में 41 घटनाएं, एक बच्चे की मौत - दमकल विभाग के अनुसार 2025 में कश्मीर संभाग में अब तक 41 आग की घटनाएं

उपकरणों के बड़े को बढ़ाया जा रहा

आपात स्थिति में अग्निशमन और बचाव कार्यों की चुनौतियों का सामना करने के लिए विभाग के पास अग्निशमन उपकरणों का एक बड़ा बेड़ा है। इसमें उन्नत एरियल लैंडर प्लेटफॉर्म, बहुउद्देशीय फोम टैंडर, फायर टैंडर, एडवांस रेस्क्यू टैंडर, त्वरित प्रतिक्रिया वाहन, वाटर बुजर, फायर और रेस्क्यू बोट, इमरजेंसी टैंडर, एम्बुलेंस, आयातित हाई-पावर पोर्टेबल फायर पंप, पोर्टेबल वाटर मिस्ट टेक्नोलॉजी सिस्टम शामिल हैं।

983 में हुई थी दमकल विभाग की शुरुआत

जम्मू-कश्मीर में अग्निशमन और आपातकालीन सेवाएं विभाग 1893 में श्रीनगर फायर ब्रिगेड के रूप में स्थापित किया गया था। आग पर पानी फेंकने के लिए बाल्टियों का इस्तेमाल किया जाता था। बाद में इसे भाप के इंजनों से बदल दिया गया, जिन्हें पानी गमी करने के लिए जलाऊ लकड़ी जलाकर चालू किया जाता था और उन्हें दमकलकर्मियों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों पर ले जाया जाता था। विभाग के पास शुरू में पांच फायर स्टेशन और 60 फायरमैन थे और यह मुंबई (1803) और कोलकाता (1822) के बाद देश की तीसरी सबसे पुरानी फायर ब्रिगेड है। वर्तमान में यह देश की चौथी सबसे बड़ी अग्निशमन सेवा है, विभाग के 180 स्टेशन हैं।

हो चुकी हैं। इनमें नौ घटनाएं सिर्फ शहर में घटी हैं। 16 अक्टूबर को किरतवाड़ के मुलवाड़वन गांव में 70 मकान जले थे।

20 मार्च को अनंतनाग के कादिपोरा में एक घर में भीषण आग लगी थी। वहीं, जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ी हैं।

यूएस भारत की मदद का इच्छुक स्वच्छ ऊर्जा पर पीएम मोदी के नेतृत्व में बढ़ेगी बात : होलटेक

एजेंसी ■ न्यूयॉर्क

भारत को परमाणु ऊर्जा पर नए सिरे से काम करने की जरूरत है। अमेरिका परमाणु बुनियादी ढांचा विकसित करने में भारत की मदद करने की इच्छा रखता है, क्योंकि दोनों देशों की इस क्षेत्र में काफी दिलचस्पी है। यह कहना है होलटेक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) डॉ. क्रिस सिंह का। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में इस दिशा में बात आगे बढ़ेगी। केमडेन, न्यूजर्सी स्थित कृष्णा पी सिंह प्रौद्योगिकी परिसर में खास बातचीत में सिंह ने कहा, भारत व अमेरिका की स्वच्छ ऊर्जा में रणनीतिक रुचि हैउ परमाणु ऊर्जा को एकता का सूत्रधार होना चाहिए और भारत को स्वाभाविक रूप से इसमें अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। इसके लिए, भारत के पास नियात योग्य प्रौद्योगिकी होनी चाहिए। होलटेक इंटरनेशनल एक विविध ऊर्जा प्रौद्योगिकी कंपनी है। कंपनी ने पिछले महीने घोषणा की थी कि अमेरिकी ऊर्जा विभाग ने नई दिल्ली की सहमति से होलटेक इंटरनेशनल को भारत में कंपनी के छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर एएसएमआर-300 को बेचने के लिए विशिष्ट अधिकार प्रदान किया है।



8.5 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता में होना चाहिए कई गुना विस्तार

क्रिस सिंह ने कहा कि भारत का परमाणु ऊर्जा उत्पादन वर्तमान में 8.5 गीगावाट है। वर्ष 2047 तक इसे कई गुना बढ़ाया जाना चाहिए। तब भारत अपनी स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष मनाएगा। पीएम मोदी ने स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने भारत में हमारे रिएक्टर की स्थापना के लिए बाधाओं को दूर किया है। भारत अब अपना काम करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि भारत, कानून बनाने के लिए काम कर रहा है। शायद संसद के मानसून सत्र में देश में छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर) बनाने के लिए कंपनियों को रोकने वाले पिछले अधिनियमों में संशोधन का प्रस्ताव पेश किया जा सकता है।

भारत ने की नई तकनीक इजाद, लेजर सिस्टम छोटे विमानों व ड्रोन को गिराने में सक्षम

एजेंसी ■ नई दिल्ली

भारत ने ऐसी तकनीकी क्षमता हासिल की है जिससे 30-किलोवाट के लेजर सिस्टम से छोटे विमानों और ड्रोन को निशाना बनाया जा सकता है। यह सिस्टम मिसाइलों और सेंसर को भी बेकार कर देगा। यह कामयाबी हासिल करने वाला भारत चौथा देश है। अमेरिका, रूस, चीन, यूके जैसे देशों के पास यह टेक्नोलॉजी पहले से ही मौजूद है। ये देश भी स्टार वार्स जैसे हथियार बनाने में लगे हैं। इन हथियारों को डायरेक्टेड एनर्जी वेपन मान दिया गया है।

आंध्र प्रदेश के कुरनूल में परीक्षण में लेजर-डीईडब्ल्यू मार्क-2(ए) सिस्टम का इस्तेमाल किया गया है। इस सिस्टम ने एक छोटे विमान और सात ड्रोन के झुंड को मार गिराया और ड्रोन पर लगे कैमरों और सेंसर को भी निष्क्रिय कर दिया। ये परीक्षण 3.5 किलोमीटर की दूरी तक किया गया। डीआरडीओके डायरेक्टर-जनरल

डॉ. बी के दास ने कहा कि यह एक शक्तिशाली हथियार है। यह मिसाइलों और गोला-बारूद से काइनेटिक किल्स करने के बजाय बीम किल्स करता है। इससे दुश्मन को मार गिराया जा सकता है। यह खासकर लंबी चलने वाली लड़ाइयों के लिए बहुत उपयोगी है। यह भविष्य की तकनीक है।

उन्होंने कहा कि बीम किल्स और काइनेटिक किल्स शब्दों का इस्तेमाल किया। बीम किल्स का मतलब है लेजर से मारना और काइनेटिक किल्स का मतलब है मिसाइल से मारना। 30-किलोवाट का यह सिस्टम ड्रोन को पहचानने और उन्हें रोकने के लिए बनाया गया है। इसे इंटीग्रेटेड ड्रोन डिटेक्शन एंड इंटरडिक्शन सिस्टम कहा जाता है। भारत इस तरह के सस्ते ड्रोन-रोधी सिस्टम बनाने में पीछे था। अब चुनौती यह है कि इस सिस्टम को छोटा कैसे किया जाए। इसे विमानों और युद्धपोतों पर भी लगाया जाना है। सेना ने अभी तक 23 इंटीग्रेटेड

ड्रोन डिटेक्शन एंड इंटरडिक्शन सिस्टम शामिल किए हैं। इनमें 2-किलोवाट के लेजर लगे हैं और इनकी कीमत करीब 400 करोड़ है। डीआरडीओ ने 10-किलोवाट के लेजर भी बना लिए हैं, लेकिन इनकी मारक क्षमता सिर्फ 1 से 2 किलोमीटर ही है। आजकल ड्रोन का इस्तेमाल बढ़ गया है। ड्रोन के झुंड एक बड़ा खतरा बन गए हैं। इसलिए डीआरडीओ अब 50 से 100-किलोवाट के डीईडब्ल्यूस पर काम कर रहा है। इसके साथ ही वह हाई-एनर्जी माइक्रोवेव पर भी काम कर रहा है। डीआरडीओ ने इसके लिए एक योजना बनाई है। इस योजना में छोटे, मध्यम और लंबे समय के लक्ष्य शामिल हैं। एक डीआरडीओ अधिकारी ने कहा कि काम लागत बढ़े ड्रोन हमलों से निपटने के लिए डीईडब्ल्यूस का इस्तेमाल बढ़ रहा है। इसलिए यह दुश्मनों को हराने का एक सस्ता तरीका हो सकता है।

दुबई से वापस लौटने समय युवक की मौत

सीकर । सीकर जिले में एक दुखद हादसे की खबर सामने आई है। दुबई से कमाई करके अपने घर लौट रहे एक युवक के लिए बीच रास्ते में ही मौत हो गई। अनिल महला नाम का युवक जो दुबई में नौकरी कर रहे थे, पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार अपने घर को पहुंचने के लिए रविवार को एयरपोर्ट से निकले थे। उन्हें उनके मामा के बेटा और उनका दोस्त जयपुर तक लेने आए थे, लेकिन रास्ते में एक दुर्घटनाग्रस्त कंटेनर से होने वाली टक्कर ने उनकी मौत का कारण बन दिया। उन्हें तुरंत चिकित्सा सहायता दी गई है। कृष्णा के दोस्त श्रवण को भी गंभीर चोटें पहुंची हैं और उन्हें सीकर के अस्पताल में भर्ती करना पड़ा है। अनिल झुंझुनूं जिले के जुहापुरा गांव का रहने वाला था। रविवार को अनिल दुबई से वापस लौटा था। उसे लेने के लिए उसके मामा का बेटा बालरासर निवासि कृष्णा जाखड़ और उसका दोस्त श्रवण कार लेकर जयपुर पहुंचे थे। फिर तीनों कार से घर के लिए रवाना हो गए।

24 घंटे के अंदर दूसरी बार कांपा म्यांमार पिछले महीने मची तबाही के बाद से लगातार आ रहे भूकंप के झटके

एजेंसी ■ नेपीताल

म्यांमार 24 घंटे के अंदर दूसरी बार भूकंप के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (एनसीएस) के मुताबिक, भूकंप की तीव्रता 4. मापी गई। भूकंप सोमवार सुबह 10 बजकर छह मिनट पर जमीन से 103 किमी. की गहराई में आया। इस भूकंप का असर भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में महसूस किया गया। मणिपुर में इसका असर सबसे ज्यादा रहा। इससे पहले रविवार को म्यांमार में 4.5 तीव्रता का भूकंप आया था। भूकंप 10 किमी. गहराई में दर्ज किया गया था, जिससे यह आफ्टरशॉक के लिए अतिव्यवदेशशील माना गया। 28 मार्च के भूकंप के बाद आए सैकड़ों झटकों में से इस भूकंप के कारण किसी बड़े नुकसान या हाताहत होने की तत्काल कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। म्यांमार की सैन्य सरकार के प्रवक्ता मेजर जनरल जॉ मिन टुन के मुताबिक, शुक्रवार तक 28



मार्च के भूकंप में मरने वालों की संख्या 3,649 थी, जबकि 5,018 लोग घायल हुए थे।

म्यांमार के मौसम विभाग ने बताया कि रविवार का भूकंप मंडालय से 97 किलोमीटर (60 मील) दक्षिण में वुंडविन टाउनशिप के क्षेत्र में 20 किलोमीटर (12 मील) की गहराई में आया। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने गहराई 7.7 किलोमीटर (4.8 मील) होने का अनुमान लगाया। वुंडविन के लोगों ने बताया कि भूकंप इतना शक्तिशाली था कि लोग इमारतों से बाहर निकल आए।

कुछ घरों की छतें क्षतिग्रस्त हो गईं। संयुक्त राष्ट्र ने पिछले सप्ताह चेतावनी दी थी कि 28 मार्च को आए भूकंप से होने वाली क्षति म्यांमार में मौजूदा मानवीय संकट को और भी बदतर बना देगी। म्यांमार फिलहाल गृहयुद्ध से जूझ रहा है। इस वजह से पहले ही 30 लाख से अधिक लोग यहां से विस्थापित हो चुके हैं। भूकंप ने कृषि उत्पादन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। कई चिकित्सा सुविधाओं के क्षतिग्रस्त या नष्ट होने से म्यांमार में स्वास्थ्य आपातकाल के हालात बन गए हैं।

अमेरिका में एक शो ने उड़ाया ट्रंप का मजाक, नाराज ट्रंप ने दे डाली धमकी

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप रेसिप्रोकल टैरिफ लगाकर और चीन पर एक्शन को लेकर खूब सुर्खियां में हैं। ट्रंप के इस तरह से झूठे हैं और उनके वकीलों ने इस मामले को निपटा दिया है। प्रवक्ता ने बताया कि भ्रष्टाचार निरोधक आयोग ने सिद्दीकी को कोई जवाब नहीं दिया और न ही सीधे या उनके वकीलों के माध्यम से उन पर कोई आरोप लगाया है। सिद्दीकी को ढाका में उनके संबंध में चल रही सुनवाई के बारे में कुछ भी पता नहीं है और उन्हें किसी भी गिरफ्तारी वारंट के बारे में कोई जानकारी नहीं है। उन पर लगाए गए किसी भी आरोप का कोई आधार नहीं है और इस आरोप में कोई सच्चाई नहीं है कि उसने अवैध तरीकों से ढाका में जमीन का एक प्लॉट लिया।

कोशिश करता है, लेकिन इस वीकेंड का 'ब्रॉडकास्ट' अब तक का सबसे बुरा था। उन्होंने अमेरिका के फेडरल कम्युनिकेशन कमिशन के चेयरमैन से इस चैनल पर अवैध और गैरकानूनी व्यवहार के लिए जुर्माना और सजा देने की मांग की है। चैनल ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। रविवार को प्रसारित एपिसोड में +60 मिनट्स+ के सीनियर संवाददाता यूक्रेन पहुंचे थे। जहां उन्होंने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से मुलाकात की। यह मुलाकात एक रूसी हमले की जगह पर की गई थी, जहां हाल ही में 9 बच्चों की मौत हुई थी। जेलेंस्की ने कहा कि उन्हें पुतिन से 100 फीसदी नफरत है।



वक्त कभी किसी का सगा नहीं

खूबसूरत सृष्टि की रचना करने वाली कुदरत ने खूबसूरत मानवीय जीवन के साथ वक्त का एक ऐसा पहिया संलग्न कर दिया है कि मानवीय जीवन चक्र के साथ वक्त का पहिया भी घूमता रहता है ! जो किसी का सगा नहीं है !! बस मानवीय जीवन को ही अपनी बुद्धि के बल पर परिस्थितियों के अनुसार कुशाग्र बुद्धि से वक्त का सकारात्मक उपयोग कर ऐसा कार्य करना चाहिए कि हमारा नाम सदियों, पीढ़ियों तक टिमटिमाते तारों की तरह इस सृष्टि में जगमगाता रहे, क्योंकि वक्त हमेशा एक सा नहीं रहता वक्त का पहिया कैसे करवट बदल देता है, पता ही नहीं चलेगा, क्योंकि वक्त अपनी गति से चलता रहेगा वक्त का पहिया हमेशा एक जैसा नहीं रहता कितना भी पकड़ लो फिसलता जरूर है,यह वक्त है साहब बदलता जरूर है। साथियों बात अगर हम वक्त के तकाज़े की करें तो हम खुद अपने पुराने और आज के वक्त का ही विश्लेषण कर ले कि कुछ साल या दशक पूर्व हम क्या थे और अब क्या हैं, तो हमें पता चल ही जाएगा कि वक्त कभी एक सा नहीं रहता !! इतना ही नहीं अगर हम अपने ही समाज या पीढ़ियों

का विश्लेषण करें तो हमें अंदाज लग जाएगा कि वक्त का पहिया कैसे घूमकर बदलते रहता है इसलिए ही बड़े बुजुर्गों का कहना है, समय-समय की बात है आज तुम्हारा समय है कल हमारा समय भी आएगा साथियों बात अगर हम हमारे शहर जिले राज्य या राष्ट्र की करें तो हमें ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे, अपने को बड़े शहशाह, तीरंदाज कहने मानने वाले लोगों को भी हमने लाचार, तारतार होते देखा होगा, जिनके पास बेशुमार,दौलत पावर था और सबकुछ खरीद सकते थे परंतु वक्त का पहिया ऐसा फिसला कि उनका पैसा, पावर सब कुछ ज़मींदороज हो गया और पैसे पैसे को मोहताज हो गए,हमने सुना ही नहीं अपनी आंखों से देखा भी जरूर होगा या फिर हमें यह अपने उम्र के बढ़ते चढ़ाव पर देखने को जरूर मिल जाएगा।

साथियों बात अगर हम वक्त के पहिए की करें तो यह किसी का सगा नहीं है बड़े से बड़े उद्योगपति, राजनीतिज्ञ अधिकारी, मंत्री, उच्च पदस्थ व्यक्ति यहां तक कि कभी उनके पास उद्योग, सत्ता, शासन-प्रशासन पावर की चाबी उनके हाथ में रहने वालों के वक्त के पहिए ने भी कैसे

करवट बदल ली है कि उनका हाथ आज खाली है ! जिनकी तूती बोलती थी आज उनकी बोलती बंद है !! इसलिए कहते हैं साहब यह वक्त है बदलता जरूर है इसलिए समय रहते कुछ ऐसा काम करो कि वक्त को भी तुम्हारे पास रुकने पर मजबूर होना हो जाना पड़े साथियों बात अगर हम कुछ सालों से वक्त के पहिए की करवट बदलने की करें तो कैसे हम खुशहाल थे, फिर कोरोना महामारी आई, वैक्सीनेशन ड्राइव चला, आज करीब-करीब नियंत्रित है, सत्ता के बदलाव, कुछ चिन्हित उद्योगपतियों द्वारा बैंक घोटाला, देश के बाहर और भगोड़े घोषित इत्यादि यह सब बातें हमने राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सत्ता परिवर्तन, 90 दिन से चले आ रहे हैं रूस यूक्रेन युद्ध सहित अनेक व्यवहार देखें जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि वक्त किसी का सगा नहीं करवट जरूर बदलता है। साथियों बात अगर हम वक्त के पहिए की करें तो, जीवन में सबसे अनमोल चीज है वक्त जिसका चक्र निरंतर रूप से चलते रहता है। इसे कोई रोक नहीं सकता जैसे रेत को कितनी भी जोर से मुट्ठी में बांध के रखो वह फिसलती रहती है।

खादी संवारे भविष्य: क्रिएट इन इंडिया चैलेंज से स्थायित्व को बढ़ावा

हम एक ऐसे वस्त्र को पहनने के बारे में कल्पना करें, जो न केवल स्टाइलिश हो, बल्कि स्वतंत्रता, स्थायित्व और वैश्विक प्रभाव की गाथा को भी अभिव्यक्ति देता हो। वह खादी ही है - भारत का प्रतिष्ठित वस्त्र ! अभी हम खादी के बारे में क्यों बात कर रहे हैं? क्या इसलिए कि गर्मी का मौसम है और खादी के अलावा और कौन-सा कपड़ा त्वचा और सेहत को आराम दे सकता है? बेशक, यह खादी ही है। लेकिन इस संवाद को लाने का एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि उम्मीद है कि आपने मेक द वर्ल्ड वियर खादी चैलेंज के बारे में सुना होगा। यह चैलेंज 1 से 4 मई, 2025 तक मुंबई में होने वाले विश्व ऑडियो विजुअल और मनोरंजन सम्मेलन (वेक्स) के उद्घाटन के हिस्से के रूप में आयोजित किए जा रहे 32 क्रिएट इन इंडिया चैलेंजों में से एक होगा। यह महज एक अभियान भर ही नहीं है। यह चैलेंज सिर्फ कार्रवाई के लिए आह्वान से कहीं अधिक है। यह एक ऐसी पहल है, जिसमें दुनिया भर के रचनात्मक व्यक्ति डिजिटल कला, सोशल मीडिया स्टोरीटेलिंग या विज्ञापन संबंधी अवधारणाओं के माध्यम से खादी को पारंपरिक वस्त्र से वैश्विक फैशन आइकन में बदलने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह पहल दुनिया भर के रचनाकारों को किसी महान चीज पर अपनी रचनात्मक छाप छोड़ने में मदद करती है। क्रिएट इन इंडिया चैलेंज और विशेष रूप से मेक द वर्ल्ड वियर खादी सेगमेंट रचनात्मक पेशेवरों को दुनिया के खादी को देखने के तरीके को नया रूप देने का एक अविश्वसनीय अवसर प्रदान करता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक रचनात्मकता के साथ मिलाकर, प्रतिभागी खादी को एक वैश्विक तौर पर फैशन की एक शक्ति के रूप में स्थापित करने में मदद कर सकते हैं, जो आधुनिक मूल्यों को दर्शाती है।

भारत और दुनिया भर से मेक द वर्ल्ड वियर खादी चैलेंज के लिए पंजीकृत 750 से अधिक प्रतिभागियों के साथ, एक रचनात्मक प्रदर्शन के लिए मंच तैयार है, जो वैश्विक मंच पर भारत की अभिनव भावना को उजागर करता है। प्रतिभागियों को एक प्रिंट क्रिएटिव, एक आउटडोर होर्डिंग और एक डिजिटल/सोशल मीडिया क्रिएटिव बनाने का काम सौंपा गया था। पंजीकरण 27 जनवरी को खुला, मार्च में शॉर्टलिस्टिंग हुई और कल शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवारों की अंतिम सूची की घोषणा

की गई। विज्ञापन और रचनात्मक उद्योगों के दिग्गजों से बनी एक प्रतिष्ठित जुरी ने मौलिकता, सांस्कृतिक प्रतिध्वनि, वैश्विक अपील और प्रतियोगिता के दृष्टिकोण के साथ तालमेल के आधार पर प्रस्तुतियों का मूल्यांकन किया। शॉर्टलिस्ट की गई प्रविष्टियां अपनी रणनीतिक अंतर्दृष्टि, शक्तिशाली कहानी कहने और खादी के ईर्द-गिर्द वैश्विक बातचीत को बढ़ावा देने की क्षमता के लिए अलग से उभरीं। कुल पांच उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट किया गया है- इमान सेनगुप्ता और सोहम घोष - हवास वर्ल्डवाइड इंडिया; कार्तिक शंकर और मधुमिता बसु - 22 फीट ट्राइबल; काजल तिरलोतकर - इंटरएक्टिव एवेन्यूज; तन्मय राउल और मंदार महादिक - डीडीबी मुद्रा समूह; आकाश मेजरी और काजोल जैसवानी - डीडीबी मुद्रा समूह। विजेताओं की घोषणा मई 2025 में वेक्स समिट में की जाएगी।

खादी: टिकाऊ फैशन का कूल फैक्टर: खादी सिर्फ पुराने जमाने की नहीं है; यह टिकाऊ फैशन का भविष्य है। हाथ से बुनी हुई, पर्यावरण के अनुकूल और थ्यार से बनाई गई खादी जेनरेशन जेड और मिलेनियल की हर पसंद का प्रतिनिधित्व करती है, जैसे प्रामाणिकता, स्थायित्व और नैतिक विकल्प। साथ ही, इसे कारीगरों द्वारा बनाया जाता है, जो पर्यावरण को अनुकूल रखते हुए स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है। खादी सिर्फ एक फैशन ट्रेंड ही नहीं, बल्कि यह एक आंदोलन भी है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में निहित, खादी महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का प्रतीक बन गई। आज, यह एक टिकाऊ, हस्तनिर्मित और पर्यावरण के अनुकूल कपड़ा है, जो खासकर ग्रामीण भारत में कारीगरों को सशक्त बनाता है, जबकि फास्ट फैशन के पर्यावरणीय नुकसान के खिलाफ लड़ाई में योगदान देता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद, क्योंकि उन्होंने कई साल पहले ऐसे उत्पादों के निर्माण हेतु शंखनाद किया था, जो जीरो डिफेक्ट, जीरो इफेक्ट वाले हों। खादी अपनी पर्यावरण के अनुकूल प्रक्रियाओं और टिकाऊ उत्पादन के साथ पूरी तरह तालमेल रखती है, जो नैतिक फैशन की ओर वैश्विक बदलाव में अपनी भूमिका को मजबूत करती है। सरकार की मेक इन इंडिया पहल भी यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि खादी उत्पाद अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करते हैं। बिल्कुल सही कहा गया है, हमें पृथ्वी अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिलती है, हम इसे अपने बच्चों से उधार लेते

हैं। यह भावना खादी के लोकाचार के साथ पूरी तरह मेल खाती है, एक टिकाऊ, पर्यावरण के प्रति अनुकूल वस्त्र, जो हमारे अतीत से हमें जोड़ता है और साथ ही भविष्य की पीढ़ियों के लिए धरती की सुरक्षा करता है। दुनिया सतत, पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रणालियों को अपना रही है। इसके साथ ही, वैश्विक मंच पर खादी का स्थान पहले से कहीं ज्यादा स्पष्ट होता जा रहा है। यह वस्त्र केवल अतीत का अवशेष नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए एक प्रकाश स्तंभ है। ग्रामीण कारीगरों की हस्तनिर्मित कलात्मकता से लेकर इसके कालातीत वस्त्र की वैश्विक अपील तक, खादी एक बार फिर आज की दुनिया में स्टाइलिश और टिकाऊ होने के अर्थ को फिर से निर्धारित करने के लिए तैयार है।

केवीआईसी की भूमिका और सरकारी पहल : खादी के पुनरुत्थान के केंद्र में खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) की प्रतिबद्धता है। खादी के प्रचार के लिए नोडल एजेंसी के रूप में, केवीआईसी कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार तक पहुंच को सुविधा प्रदान करके स्थानीय कारीगरों के सशक्तिकरण का समर्थन करता है। सरकार समर्थित पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से, केवीआईसी ने सुनिश्चित किया है कि खादी न केवल अपनी समृद्ध परंपरा को बनाए रखे, बल्कि आज के वैश्विक फैशन बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए विकसित हो। वेक्स समिट सिर्फ एक और आयोजन नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक रचनात्मक खेल का मैदान है। इसे मीडिया और मनोरंजन जगत का केंद्र समझें, जहां प्रसारण, गेमिंग, डिजिटल मीडिया और अन्य क्षेत्रों के उद्योग जगत के दिग्गजों के साथ कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं और नेटवर्किंग के अवसर उपलब्ध हैं। 'मेक द वर्ल्ड वियर खादी' चैलेंज को दुनिया भर से नए, साहसिक विचारों को सामने लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो रचनात्मकता को प्रेरित करता है जो शायद दुनिया को खादी पहनने के लिए प्रेरित करें। हम वेक्स 2025 के दौरान विजेताओं की घोषणा का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। यह चैलेंज खादी को एक आधुनिक, आकांक्षी और टिकाऊ ब्रांड के रूप में स्थापित करने के लिए नए और रचनात्मक तरीकों को सामने लाने का वादा करती है और आने वाले समय के लिए उत्साह बढ़ाता जा रहा है।

(लेखिका पीआईबी मुंबई में मीडिया और संचार अधिकारी हैं)

कौन है फ़र्ज़ी कौन है नफ़ली कैसे हो पहचान

नकली और मिलावटी वस्तुओं यहाँ तक कि मिलावटी खाद्य सामग्री,नकली जीवन रक्षक दवाइयां,जहरीले फल व सब्जियाँ,मिलावटी ची,पनीर,दूध,खोया,मिलावटी मिठइयां,मिलावटी मसालों जैसी अनेक चीजों का कारोबार हमारे देश में दशकों से बेरोकटोक होता आ रहा है। और न जाने कितने लोग ऐसी खाद्य वस्तुओं के सेवन से मौत की गोद में भी समा चुके हैं। जब कभी ऐसा कोई नेटवर्क कानून की गिरफ्त में आता है तो उसकी खबरें भी प्रकाशित होती हैं। परन्तु ऐसी नकली और मिलावटी वस्तुओं के उत्पादक,निर्माता,वितरक व विक्रेताओं के विरुद्ध सरकार व प्रशासन क्या और कितनी कार्रवाई करता है इसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह जानलेवा धंधा कम होने के बजाये और भी अधिक फलता फूलता जा रहा है। हद तो यह है कि देश में तमाम ब्रांडेड सामग्रियां भी नकली बिक रही हैं। मगर कोई पृछने वाला नहीं है। जाहिर है यह सब नक्कालों,मिलावटखोरों तथा प्रशासन के मिलेजुल नेटवर्क का ही परिणाम है। और शायद सरकार व प्रशासन की इसी अनदेखी का ही नतीजा है कि अब केवल खाद्य सामग्री या दैनिक उपभोग की वस्तुयें मात्र ही नकली या मिलावटी नहीं बल्कि यही फ़र्ज़ी लोग बड़े बड़े सवेदनशील पदों को भी कलाकित करते दिखाई दे जाते हैं।

हमारे देश में कभी कोई फ़र्ज़ी आई ए एस पकड़ा जाता हो तो कभी कोई फ़र्ज़ी आई पी एस अधिकारी बना घूमता रहता है। हद तो यह है कि अब तो देश में न केवल स्वयं को प्रधानमंत्री कार्यालय का एडिशनल डायरेक्टर बताने वाला गुजरात का एक फ़र्ज़ी व्यक्ति पकड़ा जा चुका बल्कि गत दिनों तो एक नकली हार्ट सर्जन तक गिरफ्तार किया गया। देश के सुधी व जागरूक लोगों को याद होगा कि मार्च 2023 में श्रीनगर में किरण पटेल पुत्र जगदीश पटेल नाम के एक फ़र्ज़ी व्यक्ति को रो हाथों पकड़ा गया था। यह ठग खुद को प्रधानमंत्री कार्यालय का एडिशनल डायरेक्टर बताता था तथा ज़ेड प्लस सुरक्षा के साथ बुलेटप्रूफ गाड़ी पर चला करता था। जबकि जेड

प्लस सुरक्षा पर प्रति व्यक्ति 40 से 45 लाख रुपए महीना तक का खर्च होता है। ठग पटेल हमेशा फ़ाइव स्टार होटल में ही ठहरा करता था। आकर तमाम अधिकारी उसकी खुशामद में लगे रहते। सुरक्षा एजेंसियों की इससे बड़ी नाकामी और क्या हो सकती है ? जरा सोचिये कि एक तरफ़ तो जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक हैं जिन्हें जेड प्लस सुरक्षा व बुलेटप्रूफ गाडी मिलनी चाहिये परन्तु उनकी सुरक्षा के लिये तो केवल एक निजी अधिकारी तैनात किया गया जबकि गुजरात का एक ठग यह सभी सुविधायें लेकर सुरक्षा एजैसियों व बड़े बड़े अधिकारियों की आंखों में धूल झाँककर घूमता रहा ? पिछले दिनों ऐसा ही एक और दिल दहलाने वाला मामला सामने आया। फ़र्ज़ी डॉक्टर तो देश में बहुत सुने गए थे परन्तु फ़र्ज़ी हार्ट सर्जन में ने तो कभी नहीं सुना।मध्य प्रदेश के दामोदर में अपना नाम एन जॉन केम बताने वाला एक व्यक्ति एक निजी ईसाई मिशनरी अस्पताल में सेबात था। वह स्वयं को प्रसिद्ध ब्रिटिश डॉक्टर व कार्डियोलॉजिस्ट बताया करता था। जबकि जांच के बाद पता चला कि उस कथित डॉक्टर का वास्तविक नाम नरेंद्र विक्रमादित्य यादव है। यह मिशनरी अस्पताल आयुष्मान भारत योजना के तहत सरकार से पैसे भी लेता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि इस फ़र्ज़ी व्यक्ति ने अनेक मरीजों की हार्ट सर्जरी तक कर डाली। परिणाम स्वरूप एक महीने में ही इसके द्वारा हार्ट सर्जरी किये गये 7 मरीजों की मौत हो गयी। सूत्रों के अनुसार मरने वाले मरीजों की संख्या इससे ज्यादा भी हो सकती है। इस का कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं है कि देश में कितने फ़र्ज़ी डॉक्टर बिना योग्यता के मेडिकल प्रैक्टिस कर रहे हैं,अपना अस्पताल चला रहे हैं यहाँ तक कि मरीजों की शल्य चिकित्सा तक कर रहे हैं।

और तो और हमारे देश में नकली धर्मगुरु व उपदेशक का रूप धारण किये अनेक लोग घूम रहे हैं। इनमें कुछ ऐसे हैं जिन्हें उनके भक्तगण देवता तुल्य समझते थे परन्तु जब उनका वास्तविक चरित्र उजागर हुआ तो पता चला कि वे संत नहीं बल्कि राक्षस हैं,व्यभिचारी,बलात्कारी व हत्यारे हैं। ऐसे नकली लोग अपने अनुयायियों को कितना बड़ा धोखा देते रहे हैं ? इसी तरह देश के एक बाबा रुपी व्यक्ति ने पहले तो योग विद्या के द्वारा लोगों को स्वस्थ रखने के नाम पर जनता में अपनी पैठ बनाई। उसके बाद वही व्यक्ति अंग्रेज़ी दवाइयों व विदेशी वस्तुओं के विरुद्ध प्रवचन देकर लोगों में राष्ट्रभक्ति जगाने लगा और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की वकालत करने लगा। फिर बड़े ही सुनियोजित तरीक़े से अपने धनाढ्य व्यवसायी अनुयायियों के सहयोग से वह स्वयं अपनी कम्पनी खोलकर अनेक उत्पाद स्वदेशी के नाम पर बेचने लगा। और अब इसी बहुरूपिये ने ताज़ातरीन विवाद एक ऐसे स्वदेशी आयुर्वेदिक शीतल पेय को लेकर खड़ा कर दिया है जिसकी देश ही नहीं विदेशों में भी भरपूर मांग है। परन्तु केवल अपना ब्रांड बेचने के लिये इसे साम्प्रदायिकता का जहर तक फैलाना पड़ा। यहाँ तक कि इसे शरबत जिहाद तक बता डाला। जबकि अनेक बार इसके अपने अनेक उत्पाद मिलावटी,नकली व अनउपयुक्त पाए जा चुके हैं।

प्रेरणा वीरत्व की अलंकृति है क्षमा

क्षमा वीरत्व की अलंकृति है। दुर्बल और विवश व्यक्ति द्वारा उद्गीत क्षमा का माहात्म्य उतना प्रखर नहीं हो सकता। ज्ञान की स्फुरण में मौन की सार्थकता है। शक्ति-संपन्नता में क्षमा की सार्थकता है और त्याग-भावना में आत्मगोपन या अप्रशस्ति की सार्थकता है। शक्ति के अभाव में स्वीकृत का कवच व्यक्ति को कई अवांछनीय परिस्थितियों से त्राण तो दे सकता है, पर उससे क्षमा का वर्चस्व धुंधला हो जाता है। मन के प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न होने पर संभावित प्रोध को शांति से प्रिहत करने वाला व्यक्ति अपनी क्षमा को तेजस्वी बनाता है।

क्षमा के स्वरूप और उसकी क्रियान्विति के संबंध में कोई निश्चित सिद्धांत नहीं बन सकता। अपराध करने वालों और क्षमाशील रहने वालों की अनेक भूमिकाएँ हैं। एक मुनि, अपराधी व्यक्ति को क्षमा नहीं करता है तो उसका मुनित्व सदिग्ध हो जाता है। भगवान महावीर के साधना काल में कितनी बार प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा की गईं, पर महावीर का महावीरत्व उनकी क्षमाशीलता में ही पल्व्वित हुआ। राजधर्म क्षमा को ऐकांतिक महत्व नहीं देता। दुष्ट व्यक्ति को दंडित करना राजधर्म के अनुसार विहित है। दंडनीय को दंड न देना राजधर्म का लोप माना जाता है। इससे अराजकता को प्रोत्साहन मिलता है और अपराधी तत्व निरस्त्र हो जाते हैं। दंडसंहिता की सारी धाराएं अपराधों का प्रतिकार करने के लिए हैं। समाज के साथ अपराध और अपराधों के साथ दंड-पद्धति का सृजन स्वाभाविक माना जाता है। किंतु यह लोक-व्यवस्था या राज्य-व्यवस्था का सिद्धांत है।



राज भवन के लाट साहबों पर सुप्रीम कोर्ट का शिकंजा

सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपालों की भूमिका को लेकर जो फैसला दिया है। उसके बाद राज भवन की सुख सुविधा भोगने वाले लाट साहबों पर शिकंजा कस दिया गया है। केंद्र सरकार के इशारे पर मुख्यमंत्री के बास बनकर लाट साहब एशर करते थे। राज्यपालों के चक्कर में राष्ट्रपति का पद भी सुप्रीम कोर्ट की समीक्षा के दायरे में आ गया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद हर हालत में तीन माह के अंदर राज्य सरकारों के विधान सभा से पारित बिलों को मंजूर करना होगा, नहीं तो सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद संवैधानिक पद पर बैठे हुए लोग पर भी सुप्रीम कोर्ट का डंडा आज नहीं तो चल चल ही जाएगा। विपक्षी दलों की राज्य सरकारों को केंद्र सरकार चलने नहीं देती थी। अब केंद्र सरकार को कोई नया रास्ता खोजना पड़ेगा। राज्य सरकारों को गिराना भी आसान नहीं होगा।

लाट साहब को कहना होगा मेरी सरकार का अरुण काम

पिछले कुछ वर्षों से विपक्षी दलों की जिन राज्यों में सरकार होती थी। वहां के लाट साहब राज्य सरकार के कामकाज को सरकार लाट भाषण तैयार करती थी उस भाषण को नहीं देकर सरकारों को नीचा दिखा रहे थे। अब लाट साहबों को सरकार द्वारा लिखित भाषण ही पढ़ना होगा। सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने लाट साहबों को बता दिया है। वह राज्य सरकार के प्रतिनिधि हैं। चुनी हुई सरकार ही सर्वोच्च है। लाट साहब को उनकी इच्छा के अनुसार काम कर आ होगा।

राजकाज

कब आएगी 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था

केंद्र सरकार कई सालों से 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थ व्यवस्था का पहाड़ा पढ़ रही है। लेकिन अर्थव्यवस्था की हालत दिनों दिन गत की ओर जाती हुई दिख रही है। मुडीज ने भारत सरकार को विकास दर रेटिंग को कम कर दिया है। 6.4 से घटकर 6.1 फीसदी कर दिया है। रही सही कसर शेयर बाजार ने पूरी कर दी है। टैरिफ बार ने निर्यात व्यापार को प्रभावित करने का काम किया है। 5 ट्रिलियन डॉलर अब एक सपना बनकर रह जाएगा। यह अर्थशास्त्री कहने लगे हैं। आंकड़ों की बाजीगिरी में सरकार खुद फंस गई है। 2 करोड़ नौकरी की तरह अब 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था सरकार के गले में फांस की तरह अटक गया है।

डिजिटल कानून और वक्फ कानून ने विपक्ष को किया एकजुट

केंद्र सरकार ने डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने की तैयारी की है। वक्फ बिल को लेकर जिस तरह की प्रतिक्रिया हो रही है। उसने विपक्ष को एकजुट कर दिया है। डिजिटल पर्सनल डाटा एक्ट में जिस तरह से सूचना अधिकार कानून की धज्जियां उड़ाई गई हैं। उसके बाद नागरिकों के मौलिक अधिकार और सरकार क्या कर रही है। यह संवैधानिक अधिकार खत्म हो रहे हैं। अब विपक्ष एकजुट होकर केंद्र सरकार के खिलाफ खड़ा हो गया है। आर्थिक मंदी, महंगाई, बेरोजगारी के मुद्दे के साथ-साथ अब कानून व्यवस्था भी एक बड़ा मुद्दा बनता चला जा रहा है।



फीचर

काँफी पीने से दिल की बिमारियों का खतरा होता है कम

शोधकर्ताओं के अनुसार

दिन में अर्धा?कतम 4 कप काँफी काफी है। इससे ज्यादा काँफी पीने से नुकसान पहुंच सकता है। यूरोपियन फूड सेफ्टी एजेंसी की सलाह मानें तो रोजाना किसी भी व्यक्तिध को 0.4 ग्राम से ज्यादा कैफीन का सेवन नहीं करना चाहिए।

अगर आप काँफी पीते हैं तो आपको दिल की बिमारियों का खतरा कम होता है। एक अध्ययन रिपोर्ट में यह बात सामने आई कि दिन में चार कप काँफी पीने से दिल की बीमारियों की वजह से होने वाली मौत का खतरा दो तिहाई कम किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने यह अध्ययन 20,000 लोगों पर किया है। शोधकताओं ने अध्ययन के दौरान पाया कि काँफी पीने से शरीर की प्रतिरोधकत क्षमता बढ़ती है। यह दिल की सेहत के लिए अच्छ है और कैसर से बचाव करती है। शोधकर्ता ने कहा कि लोगों को खुब काँफी पीनी चाहिए। इससे उनका दिल सेहतमंद रहेगा और कैसर का खतरा भी कम होगा। यह अध्ययन 20,000 लोगों पर 10 साल तक किया गया। इसके अलावा पिछले महीने

5,20,000 लोगों पर हुए एक अध्ययन में पाया गया कि काँफी लीवर की सेहत सुधारने में भी कारगर है। काँफी में दरअसल, कई तरह के यौगिक पाए जाते हैं, जो शरीर के संपर्क में आते ही एक एंटीऑक्सिडेंट की तरह काम करने लगते हैं हालांकि शोधकर्ताओं ने बहुत ज्यादा काँफी पीने से भी मना किया है। शोधकर्ताओं के अनुसार दिन में अर्धा?कतम 4 कप काँफी काफी है। इससे ज्यादा काँफी पीने से नुकसान पहुंच सकता है। यूरोपियन फूड सेफ्टी एजेंसी की सलाह मानें तो रोजाना किसी भी व्यक्तिध को 0.4 ग्राम से ज्यादा कैफीन का सेवन नहीं करना चाहिए। यानी आप अगर एस्प्रेस्सो काँफी पीते हैं तो दिन में 5 कप और अगर इंस्टैंट काँफी पीते हैं तो 4 कप से ज्यादा काँफी ना पीयें।



केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता अमित शाह ने अरब सागर में रु. 1800 करोड़ मूल्य के 300 किलोग्राम से अधिक मादक पदार्थ पकड़े जाने पर गुजरात एटीएस की प्रशंसा करते हुए बधाई दी है। इस संदर्भ में अमित शाह ने ट्वीट किया, जिसमें ने उन्हीं ने कहा नशा मुक्त भारत बनाने के निरंतर प्रयास में, अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा के पास रु. 1800 करोड़ मूल्य के 300 किलोग्राम मादक पदार्थ जब्त करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की गई।



कांग्रेस के यूपी प्रदेश अध्यक्ष अजय राय सोमवार को प्रयागराज पहुंचे। यहां कछना में हुई दलित की हत्या और जलाने के मामले में उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि आज बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती है और इसके एक दिन पहले प्रयागराज में एक दलित की बेरहमी से हत्या कर दी जाती है, इसकी जितनी भी निंदा की जाए कम है।

बीफ न्यूज

नरवाई जलाने पर की जाएगी दंडात्मक कार्रवाई

गुना। कलेक्टर किशोर कुमार द्वारा नरवाई में आग लगाने के संबंध में विभिन्न प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। जिसके तहत 2500 से लेकर 15000 रुपये तक अर्थदण्ड एवं पुलिस कार्यवाही की जावेगी। इसी क्रम में जिले में नरवाई जलाने पर विकासखण्ड चांचौड़ा में 02 प्रकरण एवं विकासखण्ड बमौरी में 01 प्रकरण में पंचनामा तैयार कर अर्थदण्ड लगाने की कार्यवाही की जा रही है। इसी प्रकार अन्य विकासखण्डों में भी कार्यवाही की जा रही हैं। कृषकों को भी नरवाई न जलाने के लिये जागरूक किया जा रहा है जिले में नरवाई जलाने की घटना संज्ञान में आने पर जिले में प्रकरण तैयार कर अर्थदण्ड की कार्यवाही की जा रही है। कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल द्वारा किसानों से अपील की गई है कि वे खेतों में नरवाई न जलाएं और पर्यावरण हितेषी, उन्नतखेती की ओर कदम बढ़ाएं। नरवाई जलाने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है सूक्ष्मजीव एवं लाभकारी जीव नष्ट हो जाते हैं मिट्टी सख्त या कठोर हो जाती है उसमें जलधारण क्षमता कम हो जाती है एवं वायुसंचार व जल संचार भी कम हो जाता है।

जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक 15 अप्रैल को

गुना। जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक 15 अप्रैल को सायं 6 बजे कलेक्टर कार्यालय के सभागृह कक्ष में आयोजित की जायेगी। कलेक्टर ने उक्त बैठक में निर्धारित दिनांक एवं समय पर संबंधितों को उपस्थित रहने हेतु निर्देशित किया गया है।

विश्व हिंदू परिषद मातृशक्ति दुर्गावाहिनी बहनों ने मिलकर किए सक्रोरे वितरण

गुना। ग्रीष्म ऋतु में तपती गर्मी के कारण पक्षियों को ध्यान में रखते हुए विश्व हिंदू परिषद मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी की बहनों ने मिलकर सानी कॉलोनी स्थित सपना शर्मा के निज निवास पर पक्षियों के लिए दाना पानी के लिए सक्रोरे वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद विभाग मंत्री उपस्थित रहे। उन्होंने मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी की महिलाओं की इस पहल की सराहना की एवं प्रशंसा की। इसके साथ ही उन्होंने आगे भी ऐसे ही कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मातृशक्ति दुर्गा वाहिनी कार्यकारिणी सदस्य सपना शर्मा, नीरज अवस्थी, नीति भागवत, संस्था शर्मा एवं मेधा जैन, तारिका जैन, सोनाली गोस्वामी, शिखा जैन, मेधा शर्मा, सलोनी जैन, रानी शर्मा, नीलम जैन, मोना जैन, अंजलि जैन, रिमझिम जैन, दीपिका जैन उपस्थित रही।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत निर्मित की मानव श्रृंखला

गुना। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जन जागरूकता हेतु संगोष्ठी आयोजित कर जल संरक्षण के लिये पुराना कुआँ बावड़ी तालाब की सफाई करने एवं दीवार लेखन कर जागरूक करने, निर्देश दिए गए। उक्त कार्यक्रम म.प्र.जन अभियान परिषद राधोगढ़ द्वारा शासकीय महाविद्यालय में किया इसके उपरान्त मानव श्रृंखला भी निर्मित की गई जिसमें जल ही जीवन है जल है तो कल है के स्लोगन बोले गए।

गुना। कलेक्टर किशोर कुमार द्वारा नरवाई में आग लगाने के संबंध में विभिन्न प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। जिसके तहत 2500 से लेकर 15000 रुपये तक अर्थदण्ड एवं पुलिस कार्यवाही की जावेगी। इसी क्रम में जिले में नरवाई जलाने पर विकासखण्ड चांचौड़ा में 02 प्रकरण एवं विकासखण्ड बमौरी में 01 प्रकरण में पंचनामा तैयार कर अर्थदण्ड लगाने की कार्यवाही की जा रही है। इसी प्रकार अन्य विकासखण्डों में भी कार्यवाही की जा रही हैं। कृषकों को भी नरवाई न जलाने के लिये जागरूक किया जा रहा है जिले में नरवाई जलाने की घटना संज्ञान में आने पर जिले में प्रकरण तैयार कर अर्थदण्ड की कार्यवाही की जा रही है। कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल द्वारा किसानों से अपील की गई है कि वे खेतों में नरवाई न जलाएं और पर्यावरण हितेषी, उन्नतखेती की ओर कदम बढ़ाएं। नरवाई जलाने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है सूक्ष्मजीव एवं लाभकारी जीव नष्ट हो जाते हैं मिट्टी सख्त या कठोर हो जाती है उसमें जलधारण क्षमता कम हो जाती है एवं वायुसंचार व जल संचार भी कम हो जाता है।

गुना। कलेक्टर किशोर कुमार द्वारा नरवाई में आग लगाने के संबंध में विभिन्न प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। जिसके तहत 2500 से लेकर 15000 रुपये तक अर्थदण्ड एवं पुलिस कार्यवाही की जावेगी। इसी क्रम में जिले में नरवाई जलाने पर विकासखण्ड चांचौड़ा में 02 प्रकरण एवं विकासखण्ड बमौरी में 01 प्रकरण में पंचनामा तैयार कर अर्थदण्ड लगाने की कार्यवाही की जा रही है। इसी प्रकार अन्य विकासखण्डों में भी कार्यवाही की जा रही हैं। कृषकों को भी नरवाई न जलाने के लिये जागरूक किया जा रहा है जिले में नरवाई जलाने की घटना संज्ञान में आने पर जिले में प्रकरण तैयार कर अर्थदण्ड की कार्यवाही की जा रही है। कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल द्वारा किसानों से अपील की गई है कि वे खेतों में नरवाई न जलाएं और पर्यावरण हितेषी, उन्नतखेती की ओर कदम बढ़ाएं। नरवाई जलाने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है सूक्ष्मजीव एवं लाभकारी जीव नष्ट हो जाते हैं मिट्टी सख्त या कठोर हो जाती है उसमें जलधारण क्षमता कम हो जाती है एवं वायुसंचार व जल संचार भी कम हो जाता है।



जुलूस पर पथराव के बाद तीसरे दिन भी गुना में तनाव, कर्नलगंज क्षेत्र में कई घरों में पथराव

पहले हाट रोड, फिर दुर्गा मंदिर तिराहा, फिर हनुमान चौराहे पर लाठी चार्ज कर भीड़ को खदेड़ा

सत्ता सुधार ■ गुना

हनुमान जयंती के जुलूस पर हुए पथराव की घटना के बाद गुना शहर में तीसरे दिन भी तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। सोमवार को विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए प्रदर्शन किया। स्थिति उस समय और अधिक बिगड़ गई जब प्रदर्शनकारियों की एक भीड़ विवादित क्षेत्र की ओर बढ़ने लगी। पुलिस ने हालात संभालने के लिए हल्का बल प्रयोग कर भीड़ को तितर-बितर किया। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने उस रास्ते में जाने का प्रयास किया जहां शनिवार को जुलूस पर पथराव हुआ था। पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन माहौल तनावपूर्ण होता चला गया। यहां बड़ी संख्या में लोगों को पुलिस ने रतखी ज्वेलर्स हाट रोड पर रोका। लेकिन यहां कार्यकर्ता धरने पर बैठ गए। बाद में पुलिस ने बल प्रयोग किया तो भीड़ तीतर-बीतर हो गई और जगदीश कॉलोनी, शांति पब्लिक स्कूल रोड से कर्नलगंज की ओर बढ़ने लगी। यहां पुलिस ने छात्रावास-दुर्गा मंदिर तिराहे पर लाठी-चार्ज कर भीड़ को खदेड़ा। इस दौरान स्वयं एसपी संजीव सिन्हा और एसडीएम मौजूद रहें। लेकिन उसके बाद भी भीड़ का कुछ हिस्सा दुर्गा कॉलोनी, त्रिमूर्ति कॉलोनी से होते हुए कर्नलगंज के संवेदनशील गलियों में घुस गई। यहां डाकघर के सामने स्थित धोबी गली क्षेत्र में उपद्रवियों ने कुछ घरों पर पथराव और तोड़फोड़ कर दी। पुलिस और प्रशासन पहले से ही मस्जिद चौराहे पर तैनात था, इसी का फायदा उठाकर उपद्रवियों ने पीछे के रास्तों से पथराव कर दिया। दोपहर में कलेक्टर किशोर कन्याल एवं एसपी संजीव सिन्हा ने कर्नलगंज क्षेत्र का दौरा कर मौका मुआयना किया।

इधर भीड़ का एक हिस्सा हनुमान चौराहे से होते हुए कलेक्टोरेट पहुंचा। यहां मुख्य जुलूस में शामिल विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ता निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कलेक्टोरेट पहुंचे और



वहां प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। कार्यकर्ताओं की मांग थी कि आरोपियों के खिलाफ बुलडोजर जैसी सख्त कार्रवाई की जाए। इस दौरान ज्ञापन देकर लौट रही भीड़ एक बार फिर हनुमान चौराहे पर एकत्रित होकर धरना देने की तैयारी करने लगी। यहां आसपास खुली दुकानों को भी जबरन बंद कराने की कोशिश हुई। जिसके बाद पुलिस ने सख्ती दिखाते हुए लाठीचार्ज किया और भीड़ को खदेड़ दिया। भीड़ ने फिर तेलधानी चौराहे पर हंगामा करने की कोशिश की। यहां सुभाष कॉलोनी की गलियों से पुलिस पर पत्थरबाजी हुई। जिसके बाद एसपी ने स्वयं पैदल मार्च किया।

महिलाओं ने भी जताया विरोध, सुरक्षा की मांग- इधर कर्नलगंज की गलियों में पथराव की घटनाओं के बाद बड़ी संख्या में महिलाएं कोतवाली पहुंचीं। उन्होंने पुलिस और प्रशासन पर भेदभावपूर्ण कार्रवाई का आरोप लगाते हुए कहा कि उनके घरों पर हमला हुआ है, लेकिन उनकी शिकायतों को नजरअंदाज किया जा रहा है। महिलाओं ने मांग की कि उन्हें सुरक्षा दी जाए और हमलावरों पर त्वरित कार्रवाई हो। इसके पूर्व रविवार रात को भी पायगा मोहल्ले में दो पक्ष आपस में भिड़ गए। जिसके बाद यहां तनाव के बाद बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात कर दिया गया। इधर नानाखेड़ी मंडी क्षेत्र में दो परिवारों के साथ भीड़ द्वारा मारपीट का मामला



सामने आया है।

कलेक्टोरेट पहुंचा विशाल जनसमुदाय, विहिप ने की सख्ती कार्रवाई की मांग

कलेक्टोरेट पहुंचकर विहिप एवं बजरंगदल ने ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया गया कि हमले में हनुमान वेशधारी युवक पर भी हमला किया गया और जुलूस में अफरा-तफरी मच गई। परिषद ने घटना को पूर्व नियोजित बताते हुए मांग की है कि हमले में शामिल आरोपियों और साजिशकर्ताओं की पहचान कर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए। साथ ही, मस्जिदों की छतों पर जमा पत्थरों और ईंटों की भी जांच कर

जिले के 1103 बूथों पर हर्षोल्लास से मनी संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती

सत्ता सुधार ■ गुना

भारत रत्न और संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती सोमवार को जिलेभर में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। बाबा साहब के विचारों और योगदान को स्मरण करते हुए भारतीय जनता पार्टी द्वारा जिले के 1103 बूथों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह सिकरवार ने भाजपा जिला कार्यालय, हाट रोड पर डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, बाबा साहब ने भारत को सामाजिक न्याय, समानता और समावेशी विकास का जो रास्ता दिखाया, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उनके सिद्धांत आत्मनिर्भर भारत के निर्माण को दिशा देने वाले हैं।

विधायक व वरिष्ठ नेताओं ने जताई श्रद्धा- भाजपा कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में गुना विधायक पन्नालाल शाक्य, पूर्व जिलाध्यक्ष राधेश्याम पारीक, प्रदेश सदस्य अरुण चतुर्वेदी, पूर्व



विधायक गोपीलाल जाटव, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष राजेंद्र सिंह सलूजा, वर्तमान नपाध्यक्ष सविता अरविंद गुप्ता, वरिष्ठ भाजपा नेता रमेश मालवीय, अनुसूचित जाति मोर्चा जिला अध्यक्ष मातादीन धनवारिया सहित अनेक वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया और उनके विचारों को आत्मसात करने का आह्वान किया।

अंबेडकर भवन तक पैदल मार्च, प्रतिमा पर माल्यार्पण- जयंती समारोह के बाद भाजपा

कार्यकर्ताओं द्वारा कार्यालय से अंबेडकर भवन तक पैदल मार्च निकाला गया। वहां बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम का संचालन भाजपा जिला महामंत्री संतोष धाकड़ ने किया, जबकि मंडल अध्यक्ष परेश भागवत ने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी विकास जैन ने जानकारी दी कि बाबा साहब की जयंती जिले के सभी 1103 बूथों पर श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई।

कुएं से बाहर निकलते समय युवक की गिरकर मौत

गुना। जिले के कैंट थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम बेंटा घाट में सोमवार सुबह एक मजदूर की कुएं में गिरकर मौत हो गई। मृतक युवक बैतूल जिले का रहने वाला था और गांव में कुआं खुदाई के कार्य में लगा हुआ था। हादसा उस समय हुआ जब वह टोचन (रस्सी और पुली की सहायता से खींचने की तकनीक) के जरिए कुएं से बाहर आ रहा था, तभी टोचन अचानक टूट गई और युवक सीधा नीचे जा गिरा। जानकारी के अनुसार, मृतक की पहचान कृष्णा काजले पिता सुखराम, निवासी टिमरनी, जिला बैतूल के रूप में हुई है। वह अपने कुछ साथियों के साथ बेंटा घाट गांव में मजदूरी करने आया था और कुएं की खुदाई का कार्य कर रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, सुबह करीब 8:30 बजे कृष्णा खुदाई के बाद टोचन के सहारे ऊपर आ रहा था, लेकिन अचानक तकनीकी गड़बड़ या रस्सी के कमजोर होने के कारण टोचन टूट गई और वह गहराई में गिर पड़ा। साथी मजदूरों ने तुरंत उसे बाहर निकालकर जिला अस्पताल पहुंचाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

धूमधाम से मनी डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती शहरभर में कार्यक्रम और जुलूसों का आयोजन

सत्ता सुधार ■ गुना

संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती पर गुना शहर में विविध सामाजिक और राजनीतिक आयोजनों की धूम रही। शहर के अंबेडकर भवन में बाबा साहब की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए लोगों का तांता लगा रहा। सुबह से ही विभिन्न संगठनों और आमजन ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

इस अवसर पर बहुजन समाज पार्टी द्वारा शहर में एक भव्य जुलूस निकाला गया, जिसमें बड़ी संख्या में समर्थकों ने भाग लिया। जुलूस के माध्यम से बाबा साहब के विचारों और सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। वहीं भाजपा द्वारा जिले के सभी 1103 बूथों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें कार्यकर्ताओं और नागरिकों ने डॉ. अंबेडकर को याद करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

अजाक्स कार्यालय में हुआ



-गरिमायमी आयोजन- अखिल भारतीय अजा कर्मचारी संघ (अजाक्स) कार्यालय पर भी डॉ. अंबेडकर की जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत बाबा साहब के चित्र पर मोमबतियां जलाकर और माल्यार्पण कर की गई। इस दौरान विभिन्न कर्मचारी संगठनों के वक्ताओं और शिक्षकों ने बाबा साहब के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके विचारों को वर्तमान समय में बेहद प्रासंगिक बताया। कार्यक्रम को रा.शि.संघ के प्रांतीय उपाध्यक्ष नरेंद्र भागवत, संयुक्त मोर्चा जिला अध्यक्ष आलोक नायक, कर्मचारी कांग्रेस जिला अध्यक्ष प्रमोद रघुवंशी, रा.शि.संघ जिला अध्यक्ष दामोदर धाकड़, मप्र शिक्षक संघ जिला अध्यक्ष धर्मेन्द्र रघुवंशी, शिक्षक संघ के नरेंद्र भारद्वाज और प्रोफेसर मनोज थिरोरिया ने संबोधित किया। कार्यक्रम में अजाक्स के जिलाध्यक्ष रमेश अहिरवार ने सभी अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। संचालन संतोष अहिरवार ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन कार्यकारी जिला अध्यक्ष गुलसिंह हिहोरे ने व्यक्त किया।

धारा 370 हटाना बाबा साहब के दृष्टिकोण की जीत: मोहन नारायण गिरी

गुना। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती की पूर्व संस्था पर भविष्य का भारत विषय पर स्थानीय होटल में आयोजित प्रबुद्धजन गोष्ठी में राष्ट्रवादी चिंतक मोहन नारायण गिरी ने कहा कि धारा 370 को हटाना जाना बाबा साहब के सपनों की पूर्ति है। उन्होंने बताया कि अंबेडकर न केवल धारा 370 के विरोध में थे, बल्कि उसे संविधान में शामिल करने से स्पष्ट इनकार कर चुके थे। उनका मानना था कि एक देश में दो प्रकार की नागरिकता या विशेषाधिकार नहीं हो सकते। गोष्ठी का आयोजन स्व. नाथूलाल मंत्री जनकल्याण न्यास द्वारा किया गया था, जिसमें मुख्य अतिथि जिला

अभियोजन अधिकारी हजारीलाल रहे। उन्होंने कहा कि बाबा साहब ने अपने जीवन में 32 द्विग्रियां अर्जित कीं और वे समस्त समाज के लिए समर्पित थे। मोहन नारायण गिरी ने अपने 70 मिनट के भाषण में अंबेडकर के विचारों, उनके शोध और उनकी निर्भीकता का उल्लेख करते हुए कहा कि लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में उनका पहला शोध भारत की लूट पर केंद्रित था, जिससे अंग्रेजी हुकूमत की असलियत उजागर हुई। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि बौद्ध धर्म स्वीकारना अंबेडकर की सामाजिक पीढ़ा का परिणाम था, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वे सनातन धर्म के विरोधी थे।





मल्टी-सिस्टम इन्फ्लैमेटरी सिंड्रोम नई चिंता, कैसे निपटें

कोरोना वायरस की रपतार कम होने लगी है लेकिन अन्य गंभीर बीमारियां बढ़ीं से लेकर बच्चों में पाई जा रही है। बड़ों में अलग किस्म की जीवनघातक बीमारियां हो रही है तो दूसरी ओर बच्चों में कोविड के बाद मल्टी-सिस्टम इन्फ्लैमेटरी सिंड्रोम (एमआईएस-सी) बीमारी पाई जा रही है। पिछले साल 2020 के मुकाबले इस साल 2021 में बच्चों में कोविड-19 और एमआईएस-सी के केस लगातार सामने आ रहे हैं। आइए जानते हैं क्या है मल्टी-सिस्टम इन्फ्लैमेटरी सिंड्रोम, लक्षण और उपाय।

मल्टी-सिस्टम इन्फ्लैमेटरी सिंड्रोम क्या है ?

यह बीमारी कोविड-19 से ठीक होने के बाद बच्चों में पाई जा रही है या परिवार में कोई संक्रमित हो गया था उनसे भी दूरी बनाकर एहतियात बरतने के लिए कहा जा रहा है। कोविड-19 से संक्रमित बच्चों के ठीक होने के बाद परिजन को कम से कम 6 से 8 सप्ताह तक बच्चों की अच्छे से देखभाल करना है। क्योंकि यह बीमारी कोविड-19 से ठीक होने के बाद जन्म ले रही है। कोविड-19 से ठीक होने के बाद जब रक्षा प्रणाली शरीर में अति सक्रिय हो जाती है।

जिससे पाचन तंत्र, हृदय, फेफड़े, ब्लड वेसल, दिमाग जैसे अंगों पर इसका प्रभाव पड़ता है और यह सूजने लग जाती है। इस बीमारी के अमेरिका और यूके में अधिक केस सामने आ रहे थे। लेकिन अब भारत में भी इसका प्रभाव बढ़ता दिख रहा है।

मल्टी-सिस्टम इन्फ्लैमेटरी सिंड्रोम के लक्षण

तेज बुखार, पेट दर्द, हार्ट, फेफड़ों में समस्या होना, मस्तिष्क प्रभावित होना। इसी के साथ शरीर पर लाल चकते होना, आंखें लाल होना, जीभ लाल पड़ना। यह बीमारी एकदम पकड़ में नहीं आती है।

मल्टी-सिस्टम इन्फ्लैमेटरी सिंड्रोम से बचाव के उपाय

यूरोप के नेशनल हेल्थ मिशन के मुताबिक इस बीमारी के बताए गए लक्षण दिखने पर तुरंत हॉस्पिटल ले जाना चाहिए। इस बीमारी से ठीक होने के लिए इंद्रवीनस इम्यूनोग्लोबुलिन एंटीबॉडी और एस्पिरिन दो तरह की दवा दी जाती है। डॉक्टर लक्षण के मुताबिक कॉर्टिकोस्टेरॉयड्स भी देते हैं। लेकिन सभी अलग-अलग लक्षण के अनुसार दी जाती है।



ग्रीन टी से ज्यादा लाभकारी है नीली चाय

ग्रीन टी और ब्लैक टी के बारे में तो आप जानते ही हैं, और इनका सेवन भी करते ही होंगे, लेकिन क्या कभी ब्लू टी यानि नीली चाय पी है आपने? अगर नहीं पी है तो एक बार जरूर ट्राय कीजिए, क्योंकि सेहत और ब्यूटी के लिए बेहद फायदेमंद है ये नीली चाय

अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर ये चाय नीली कैसे होती है, तो हम आपको बता दें कि ये चाय अपराजिता के खूबसूरत नीले फूलों को उबालकर बनाई जाती है, इसलिए इसका रंग नीला होता है। इसे बटरफ्लाई टी भी कहा जाता है। जानिए इसे बनाने की विधि और 5 गजब के फायदे –
विधि – इस चाय को बनाने के लिए आपको चाहिए, अपराजिता के नीले फूल, पानी और स्वाद अनुसार नमक, शकर या नींबू। सबसे पहले पानी उबाल लें और उसमें अपराजिता के फूल डालें। जब इसका रंग नीला हो जाए, तो इसमें नमक या शकर डालें और कुछ बूंद नींबू की डालकर छान लें। अब यह पीने के लिए तैयार है। अब जानिए इसके फायदे –

डिटॉक्स टी

आपके शरीर से अवांछित तत्वों को बाहर निकालकर ये चाय बॉडी को डिटॉक्स करती है और शरीर की आंतरिक सफाई करती है।

इम्युनिटी बूस्टर

यह एक बेहतरीन इम्युनिटी बूस्टर की तरह काम करती है और इम्युनिटी को बढ़ाकर बीमारियों से आपकी रक्षा करती है।

डायबिटीज

यह नीली चाय डायबिटीज के रोगियों के लिए बेहद फायदेमंद है। यह शुगर के लेवल को मैनेज करने में काफी मददगार होती है।

ब्यूटी बेनिफिट्स

खूबसूरती को और निखारना चाहते हैं तो नीली चाय एक बढ़िया विकल्प है। यह चेहरे के दाग, धब्बे और झाड़्यों को मिटाकर रंगत निखारने में सहायक है।

माइग्रेन

माइग्रेन के मरीजों के लिए सुबह इस चाय का सेवन फायदेमंद साबित हो सकता है। यह दर्द के अलावा दिमागी थकान को भी दूर करती है।



पुरुषों के मुकाबले यह समस्या ज्यादातर महिलाओं में अधिक होती है। इसका मुख्य कारण उनके हार्मोन्स में अधिक उतार-चढ़ाव आना है। यह छाले अपने आप ही कुछ दिनों में ठीक हो जाते हैं। इनके निकलने के कई कारण हो सकते हैं। पेट के साफ न होने और खाना खाते समय अचानक दांतों से मुंह के अंदर की झिल्ली के कट जाने से छाले हो जाते हैं। मासिक धर्म या मेनापॉज के

सामय हार्मोन्स में बदलाव तथा वायरस, बैक्टीरिया या फंगस संक्रमण से निकल सकते हैं। इसके अन्य कारणों में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होना, एलर्जी होना भोजन में विटामिन सी और बी12 की कमी होना आदि शामिल हैं। कुछ दवाओं के साइड इफेक्ट के रूप में भी मुंह में छाले निकल सकते हैं।

हलवा देता है पौष्टिक फायदे

- सूजी का हलवा बना रहे हैं तो सूजी के दाने थोड़े मोटे ही लें, एकदम बारीक नहीं। यह पाचन तंत्र के लिए बेहतर होता है।
- अगर आटे का हलवा बना रहे हैं तो ध्यान रखें कि आटा जरा मोटा पिसा हुआ हो, ये चिपकेगा नहीं और स्वाद व पाचन दोनों के लिए अच्छा रहेगा।
- अगर नुक्सान से बचना चाहते हैं, तो डालड़ा या बाजार के घी के बजाए देसी घी या गाय के शुद्ध घी का प्रयोग



- करें। देशी घी में बना हलवा त्रिदोषों का संतुलन करता है।
- हलवे को सूर्योदय के पहले उठकर मुंह धोकर पकाते हुए तुरंत गर्मा-गरम खाना चाहिए।
- हलवा टंडा करके न खाएं, इसे गर्मागर्म ही परोसें ताकि सिरदर्द या न्यूरो वेस्कुलर डिसऑर्डर जैसी समस्याओं में फायदा मिल सके।
- हलवा खाने के तुरंत या कुछ देर बाद तक भी टंडा पानी न पिएं, वरना आप इसके फायदों को नहीं पा सकेंगे। आधे घंटे बाद ही पानी पिएं।
- हलवा पचने में बहुत हल्का होता है, इसलिए इसे सर्जरी के बाद, प्रसव के बाद, कमजोरी में, बीमारी से उबरने में और कम वजन वाले लोगों को भी दिया जा सकता है।
- हलवे में केसर, इलायची और थोड़े से सूखे मेवों का प्रयोग किया जा सकता है।
- देशी घी में बना हलवा त्रिदोषों का संतुलन करता है और हमें स्वस्थ बनाता है।
- शकर की जगह गुड़ का प्रयोग करेंगे, तो स्वाद और सेहत दोनों के फायदे पा सकेंगे। अगर आपको शकर ही डालना है, तो ब्राउन शुगर भी यूज कर सकते हैं।

नोट : मधुमेह रोगियों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

कमर दर्द से छूटकारा पाने के लिए जरूर अपनाए ये घरेलू उपाय

आजकल ज्यादातर लोगों में कमर दर्द की समस्या बढ़ती जा रही है जिसकी चपेट में बड़ी उम्र के लोग ही नहीं, बल्कि युवा के लोग भी आ रहे हैं। कमर दर्द के होने का मुख्य कारण बदलती जीवनशैली के साथ ऑफिस में घंटों गलत पॉश्चर बैठे रहना है। यह समस्या अब न केवल उम्र से जुड़ी है बल्कि इससे लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी भी तकलीफदेह साबित हो रही है। कमर दर्द से छूटकारा पाने के लिए आप कई तरह के घरेलू उपचार करते हैं लेकिन इसका प्रभाव मात्र कुछ समय के लिए ही रहता है। आइए आज हम आपको कुछ घरेलू उपायों के बारे में बता रहे हैं जिसे अपनाने से जल्दी ही छूटकारा पा सकती है। कमर दर्दकमर दर्द से छूटकारा पाने के लिए आप एक खड़ाई में सरसी का तेल डालकर उसमें लहसुन की तीन-चार कलियों के साथ अजवाइन

को डालकर गर्म कर लें। टंडा होने पर इस तेल से कमर की मालिश करें। इस उपाय से आपको जल्द ही राहत मिलेगी। कढ़ाई में दो-तीन चम्मच नमक डालकर इसे अच्छी तरह से गर्म कर लें। अब इस गर्म नमक को किसी सूती कपड़े में बांधकर पोटली बना लें। और इस पोटली से कमर की सिकाई करें काफी जल्द ही आराम मिलने लगेगा। ऑफिस में काम करते समय ज्यादा देर तक एक ही पोजीशन में ना। हर चालीस मिनट में अपनी कुर्सी से उठकर थोड़ी देर टहल लें। कैल्शियम की कम मात्रा से भी हड्डियां कमजोर होने लगती हैं, जो कमर के दर्द का प्रमुख कारण बनती है इसलिए कैल्शियमयुक्त चीजों का सेवन करें। अजवाइन को तब पर डालकर धीमी आंच पर सेंके और टंडा होने पर धीरे-धीरे चबाते हुए निगल जाएं। इसके नियमित सेवन से कमर दर्द में लाभ मिलता है।



कोरोना वैक्सीन से पहले और बाद में बिल्कुल न करें ये काम

18 से अधिक उम्र वालों का वैक्सीनेशन शुरू हो गया है। युवाओं में कुछ आदतें ऐसी होती हैं जिसका उन्हें वैक्सीनेशन के दौरान ध्यान रखना जरूरी है। लापरवाही बरतने पर यह बातें भारी भी पड़ सकती हैं। वैक्सीनेशन के कुछ नियम हैं जिन्हें फॉलो करना जरूरी है। ध्यान नहीं देने पर वैक्सीनेशन का असर विपरीत भी पड़ सकता है। इसलिए इन बातों का ध्यान रखें।

शराब का सेवन न करें

वैक्सीनेशन से पहले भूलकर भी शराब का सेवन नहीं करें। इससे वैक्सीन का प्रभाव कम हो सकता है। हालांकि वैक्सीनेशन से पूर्व आप खूब सारा पानी पिएं और पेट भरकर खाना खा कर जाएं।

दर्द निवारक दवा नहीं लें

वैक्सीन लगवाने के पूर्व किसी भी प्रकार की दर्द निवारक दवा नहीं लें। अगर आपको मामूली सा दर्द है तो घरेलू उपाय भी कर सकते हैं। कुछ दवा वैक्सीन के प्रति विपरीत रिएक्ट भी कर सकती हैं। इसलिए वैक्सीनेशन के 24 घंटे पूर्व कोई पेन किलर नहीं लें, बाद में भी दवाई डॉक्टर की सलाह के बाद ही लें।

यात्रा करने से बचें

वैक्सीनेशन के बाद बेफिक्र होकर बिल्कुल भी नहीं घूमें। यह भ्रम नहीं पाले कि वैक्सीनेशन हो गया है तो अब हमें कोरोना नहीं होगा। बल्कि वैक्सीनेशन के बाद आप किसी भी तरह की यात्रा नहीं कर सकते हैं। अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन की गाइडलाइन के मुताबिक वैक्सीनेशन के बाद यात्रा नहीं करने की सलाह दी गई है।

मैथीदाने का प्रयोग आप खाने के स्वाद को बढ़ाने में करते हैं, लेकिन इसके सेहत और सौंदर्य लाभ आपको हैरत में डाल देंगे। आइए जानते हैं इनके अनमोल गुण।

- मैथीदाने का चूर्ण प्रतिदिन खाने से आपको वजन नियंत्रित रहता है और वसा की मात्रा धीरे-धीरे कम हो जाती है। इस तरह से आप अपना वजन भी कम कर सकते हैं।
- मैथीदाने का नियमित सेवन दिल की बीमारियों को भी दूर रखने में भी मदद करता है। यह दिल का दौरा पड़ने की आशंका को बेहद कम कर देता है और आप अपने हृदय को रख सकते हैं बिल्कुल स्वस्थ।
- मधुमेह के मरीजों के लिए मैथीदाना बहुत फायदेमंद होता है। इसको रोज रात में भिगाकर रखने के बाद रोज सुबह चबाकर खाने से और इसके पानी के सेवन से लाभ मिलता है।
- बालों की खूबसूरती के लिए भी मैथीदाना फायदेमंद है। इसका पेस्ट बनाकर बालों में लगाने से बालों से रूखापन गायब होता है, साथ ही बाल मजबूत बनते हैं।
- चेहर की खूबसूरती बढ़ाने में भी यह

सिगरेट का सेवन न करें

आज के युवा वर्ग चाय के साथ सिगरेट का इस्तेमाल अधिक करते हैं लेकिन अब आपको इससे दूरी बना लेना चाहिए। वैक्सीनेशन के बाद आप सिगरेट का भी सेवन नहीं कर सकते हैं और ना ही शराब का। इन दोनों के सेवन से आपके फेफड़े पहले ही प्रभावित रहते हैं। इसलिए वैक्सीनेशन से पहले और बाद में कुछ दिन तक किसी तरह के नशे का सेवन नहीं करें।

देर रात तक ना जागे

भरपूर नींद आपको हमेशा स्वस्थ रखती है। इसलिए वैक्सीनेशन से पहले और बाद में पूरा आराम करें। देर रात तक मोबाइल का इस्तेमाल नहीं करें। अच्छी नींद से वैक्सीन का अच्छा रियास मिलता है।

भीड़ वाली जगह में नहीं जाएं

वैक्सीन लगवाने के बाद आपको घर में ही रहना है। भीड़ वाली जगह पर भूलकर भी नहीं जाएं। यह वैक्सीनेशन के नियमों के खिलाफ है। आपको घर पर रहकर आराम करना है। वैक्सीनेशन के 2 से 3 दिन बाद तक कहीं भी नहीं जाएं।

तुरंत काम नहीं करें

कई लोगों को वैक्सीनेशन के बाद ज्यादा कुछ भी महसूस नहीं होता है। इसलिए वे लोग काम करने लग जाते हैं। लेकिन ऐसी गलती नहीं करें। अगर आपको ठीक लग रहा है तब भी काम नहीं करें। बॉडी को आराम दें। जिससे आपको वैक्सीन अधिक लाभ देगा। वैक्सीनेशन के पहले और बाद के यह नियम हैं जिन्हें सभी को फॉलो करना जरूरी है। यह सभी नियम सुरक्षा की दृष्टि से ही बनाए हैं ताकि किसी तरह की परेशानी न हो। यह कुछ सामान्य से नियम ही हैं और इन्हें फॉलो भी किया जा सकता है।

मैथीदाना के 5 फायदे आपको पता होना चाहिए

मैथीदाना कुछ कम गुणवान नहीं है। इसे पीसकर चेहरे पर लगाने से त्वचा में चमक के साथ कसाव आता है। इसके अलावा रूखी त्वचा वालों के लिए यह बहुत लाभप्रद है, क्योंकि यह त्वचा को नमी प्रदान करता है।





अपनी जिंदगी के इन पलों को दोबारा जीना चाहते हैं राजकुमार राव

अभिनेता राजकुमार राव की आने वाली कॉमेडी ड्रामा फिल्म 'भूल चूक माफ' का ट्रेलर आज रिलीज हो गया है। फिल्म टाइम लूप की कहानी पर आधारित है। जिसमें राजकुमार राव की शादी होनी है। फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट के दौरान राजकुमार राव ने बताया कि वो अपने जीवन के किन पलों को दोबारा जीना चाहेंगे। इसमें उन्होंने अपनी पहली फिल्म से लेकर 'स्त्री 2' तक के समय का जिक्र किया।

इन पलों को दोबारा जीना चाहेंगे राजकुमार

ट्रेलर लॉन्च इवेंट में बात करते हुए राजकुमार राव ने बताया कि वो अपने जीवन के इन पलों को दोबारा जीना चाहेंगे। अभिनेता ने कहा, किसी भी बाहर से आने वाले एक्टर के लिए पहली फिल्म मिलना काफी बड़ी बात होती है। मेरे साथ 2010 में ऐसा हुआ था। मैं उस पल को बार-बार जीना चाहूंगा। मैं उस पल को दोबारा जीना चाहूंगा जब मेरी मां मेरे साथ थीं। जब मैंने पहला राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था। फिर जब स्त्री 2 रिलीज हुई और पहले दिन बॉक्स ऑफिस के जो आंकड़े आए मैं चौंक गया था। हम सोच में पड़ गए कि क्या हो गया। शादी के दिन को बार-बार जीने की इच्छा अभिनेता ने आगे कहा, मैं उस दिन को भी बार-बार जीना चाहूंगा जब 2021 में मैंने पत्रलेखा से शादी की थी। मेरी शादी के तीनों दिन बहुत खुबसूरत थे और मैं इसे बार-बार जीना चाहूंगा। फेर बहुत खूबसूरत थे। इसके अलावा पहली बार जब मैंने पत्रलेखा को गलियारे में चलते देखा, तो मैं उसे फिर से जीना चाहूंगा।

9 मई को रिलीज होगी 'भूल चूक माफ'

राजकुमार राव और वामिका गब्बी स्टारर 'भूल चूक माफ' 9 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म का निर्देशन करण शर्मा ने किया है। जबकि फिल्म का निर्माण दिनेश विजन के मेडॉक फिल्मस ने किया है। मेडॉक और दिनेश विजन के साथ राजकुमार राव की ये आठवीं फिल्म है। इसको लेकर राजकुमार राव काफी उत्साहित हैं।



सीरीज द रॉयल्स को लेकर उत्साहित हैं भूमि पेडनेकर

बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर इन दिनों अपनी आगामी वेब सीरीज द रॉयल्स को लेकर लगातार सुर्खियों में बनी हुई हैं। इस सीरीज में अपने रोल से लेकर सीरीज के बारे में भूमि ने कई बातों से पर्दा उठाया है। द रॉयल्स में भूमि एक ग्लैमरस और ताकतवर उद्यमी का किरदार निभा रही हैं। यह उनकी पहले की फिल्मों से बिल्कुल अलग है। भूमि की सीरीज का टीजर हाल ही में रिलीज किया गया, जिसे देखने के बाद फैंस की उम्मीदें इस सीरीज से और अधिक बढ़ गई हैं। हिंदी सिनेमा में 10 साल पूरे करने के बाद भूमि अब ओटीटी पर कदम रख रही हैं। द रॉयल्स में भूमि के अलावा ईशान खट्टर भी नजर आएंगे। इस सीरीज में उनका किरदार नया और

बिल्कुल अलग है। एक खबर के मुताबिक भूमि ने कहा, वह इस सीरीज को लेकर उत्साहित हैं, लेकिन अपनी उम्मीदें कम रखती हैं। उन्हें अब तक दर्शकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली है और लोग उन्हें ईशान के साथ देखने के लिए उत्सुक हैं। भूमि और ईशान की जोड़ी को फैंस पसंद कर रहे हैं। भूमि का कहना है कि दर्शकों का प्यार देखकर खुशी होती है। अपने 10 साल के करियर पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि दम लगा के हईशा से लेकर द रॉयल्स तक का सफर उनके लिए खास रहा है। भूमि ने आगे कहा कि वह अपने किरदारों के लिए बदलाव करने को तैयार रहती हैं। द रॉयल्स के साथ भूमि ओटीटी पर कदम जमाने वाली हैं। यह सीरीज नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी।

‘अकाल’ में करण जौहर के साथ काम कर उत्साहित हूं

निर्देशक-अभिनेता और गायक गिष्पी ग्रेवाल की पीरियड ड्रामा 'अकाल - द अनकॉन्कर्ड' गुरुवार को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। उन्होंने बातचीत के दौरान बताया कि करण जौहर बेहतरीन फिल्म निर्माता और इंसान हैं। अकाल के लिए उनके साथ हाथ मिलाकर एहसास हुआ कि उनकी फिल्म भाषा की सीमाओं को पार कर देशभर के दर्शकों को देखने को मिलनी चाहिए। गिष्पी ने कहा, हमें लगा कि हमारी फिल्म सीमाओं से बाहर निकलनी चाहिए। इसे पंजाबी दर्शकों के साथ ही देश भर के दर्शक देख सकें। इसलिए, हमने फिल्म को हिंदी में रिलीज किए जाने का फैसला लिया। पंजाब में हम तमिल और तेलुगु फिल्मों हिंदी में देखते हैं। तो, हमारी फिल्मों की भी लोग देख सकें। उन्होंने आगे बताया, करण जौहर बेहतरी निर्माता हैं। हमने पहली मीटिंग में ही सब कुछ तय कर लिया था। इसलिए, करण के साथ अगली मीटिंग में काम और भी तेजी से हुआ। गिष्पी ने कहा कि करण जौहर के बेनर धर्मा प्रोडक्शंस के माध्यम से फिल्म हिंदी में प्रस्तुत की जा रही है, जो इसकी विशेषता को बढ़ाने वाली है। करण के साथ

काम करके काफी उत्साहित हूं। सभी को लगता है कि फिल्म को लेकर हमारी पहुंच बढ़ गई है। फिल्म को लोग हिंदी में भी देख सकेंगे। बाकी, तो सबकुछ फिल्म की कहानी और कलाकारों पर ही निर्भर करता है। अकाल - द अनकॉन्कर्ड फिल्म 1840 दशक के पंजाब पर आधारित है।



विजय सेतुपति की फिल्म में अहम किरदार में नजर आएंगी तब्बू

साउथ फिल्मों में बॉलीवुड अभिनेत्रियों के काम करने का चलन काफी पुराना है, जिसमें कियाया आडवाणी से लेकर कई अभिनेत्रियों के नाम शामिल हैं। हाल ही में फिल्म देवरा पार्ट 1 जान्हवी कपूर ने लीड रोल निभाया था। वहीं अब एक और अभिनेत्री हैं, जो विजय की फिल्म में नजर आएंगी। हालांकि, वह पहले भी कई साउथ फिल्मों में अपना हुनर दिखा चुकी हैं।

एक खबर के मुताबिक, विजय सेतुपति और पुरी जगन्नाथ की आगामी फिल्म की घोषणा कुछ दिन पहले हुई थी। अब फिल्म को लेकर अपडेट आया है कि इस फिल्म में बॉलीवुड अभिनेत्री तब्बू अहम किरदार में नजर आएंगी। बहरहाल, इस फिल्म को लेकर तब्बू से बातचीत चल रही है।

इंस्टाग्राम पर शेयर किया था फिल्म को लेकर विजय ने पोस्ट

विजय सेतुपति ने आज से छह दिन पहले उगादि के अवसर पर अपनी नई फिल्म की घोषणा एक तस्वीर शेयर करके की थी, जिसमें विजय के साथ पुरी नजर आए। विजय ने

कैप्शन में लिखा, एक सनसनीखेज सहयोग के साथ एक नए रोमांचक अध्याय की शुरुआत। शानदार निर्देशक पुरीजगन्नाथ और दमदार कलाकार मछलसेल्वन ने सभी भारतीय भाषाओं में एक शानदार फिल्म के लिए हाथ मिलाया है। फिल्म की शूटिंग जून में शुरू होगी।

पहले भी कई साउथ फिल्मों में नजर आ चुकी हैं तब्बू

तब्बू ने कई साउथ फिल्मों में काम किया है, जिनमें कुली नंबर 1 तेलुगु फिल्म है, जिसमें तब्बू ने वेंकटेश के साथ काम किया था। निन्ने पेल्लदथा और आविदा मां आविदे तेलुगु फिल्म हैं, जिनमें तब्बू ने नागार्जुन के साथ काम किया है। प्रियुरलु पिलीचिडी भी एक तमिल फिल्म है, जिसमें तब्बू ने काम किया है। अला वैकुण्ठपुरमुलु भी एक तेलुगु फिल्म है, जिसमें तब्बू ने अल्लु अर्जुन के साथ काम किया है। हाल ही में तब्बू बॉलीवुड फिल्म वरु और हॉलीवुड सीरीज ड्यून- प्रोफेसी में नजर आईं। इसके अलावा वह अक्षय कुमार की आगामी फिल्म भूत बगला में नजर आएंगी।



सोचता हूं कि अपने ही देश में डरकर वयों जी रहा हूं, यहां ऐसे जीना खलता है

वेब सीरीज स्टैक 1994 में हर्षद मेहता के रूप में अपने अभिनय की चमक बिखेरने वाले ऐक्टर प्रतीक गांधी अब दो और महान हस्तियों को पर्दे पर जीने जा रहे हैं। इनमें एक तो हंसल मेहता की वेब सीरीज गांधी है, जिसमें वह महात्मा गांधी के रूप में दिखेंगे। वहीं, फिल्म फुले में वह महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले की भूमिका में हैं।

हेरत की बात है कि ज्योतिबा फुले जैसे महान समाज सुधारक पर पॉपुलर सिनेमा में इतने वक्त बाद फिल्म बन रही है? उनका किरदार निभाते हुए आपने उनके व्यक्तित्व से सीखा? यह बहुत वाजिब सवाल है कि अब तक फिल्म वयों नहीं बनी। वैसे, हैरानी तो इस बात पर भी होनी चाहिए कि उन्होंने अपने जीवन का जो सबसे पहला स्कूल खोला था, वह इतनी जर्जर हालत में है कि देखकर लगेगा कि वह कभी भी टूट सकता है। किसी को यह विचार नहीं आया कि इस धरोहर को संभालकर रखना चाहिए। बहरहाल, मैंने तो बहुत सारी चीजें सीखीं। सबसे बड़ी बात जो मुझे लगी है वो यह कि आप सेल्फलेस होकर कैसे जी सकते हैं। उन्होंने अपने बारे में कभी नहीं सोचा। दूसरे, जो बात सच लगे उसके साथ बिना डरे खड़ा होना। मतलब, किसी चीज को पूरा समाज सही मानता है, मगर वो आपको गलत लगती है

तो उसे गलत कहने की हिम्मत रखना। आज के समय में इसकी बहुत जरूरत है। अभी अहिंसा में कोई यकीन नहीं रखता। अभी तो कोई चीज बुरी लगी मतलब खत्म। मुझे यह सब देखकर बहुत दुख होता है। पता नहीं ये कैसे बदलेगा, मगर उम्मीद है कि एक दिन आएगा, जब सब अच्छा होगा। फुले के अलावा, वेब सीरीज गांधी में आप महात्मा गांधी की भूमिका भी निभा रहे हैं। जबकि, गांधी पर इतनी नामी फिल्में बन चुकी हैं। आप लोग क्या नया दिखा रहे हैं? स्टैक 1994 के बाद हंसल मेहता संग दोबारा जुड़ने का अनुभव कैसा रहा?

यह सही है कि महात्मा गांधी पर कई फिल्में बहुत बनी हैं, मगर सीरीज पहली बार बनेगी। मेरे हिसाब से गांधी जी का जीवन सफर लॉन्ग फॉर्मेट में ही सबसे अच्छे से दर्शाया जा सकता है। इतनी बड़ा जीवन, इतना सारा काम है उनका। हमारा प्रयास गांधी जी के पूरे जीवन को शुरुआत से अंत तक दिखाने का है। हमने अभी पहला सीजन ही खत्म किया है, दो और सीजन अभी शुरू भी नहीं हुए हैं। रही बात हंसल सर के साथ काम करने की, तो वह बहुत मजेदार अनुभव रहा। हम बिना कुछ बोले भी एक दूसरे को समझ लेते हैं। उनके साथ मैं खुद को अच्छे से एक्सप्लोर कर पाता हूं, चैलेंज कर पाता हूं। उनकी स्टोरी टेलिंग मुझे वैसे ही बहुत पसंद है, जो बहुत नेचुरल है। यह मेरे जीवन का अब तक का सबसे बड़ा और सबसे मजेदार एक्सपीरियंस था।

ज्योतिबा फुले के साथ उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले हमेशा कंधे से कंधा मिलाकर चलीं। इस मामले में आपको पत्नी भूमिनी को आपके जीवन में कितना योगदान रहा?

बहुत बड़ा योगदान है। इतने सालों से मैं जो इतनी अलग-अलग चीजें कर पाया, वह उसके योगदान और सहारे के बिना नहीं हो सकता था। कई बार इतनी सारी चीजें एक साथ करने में आप सिर्फ भाग ही रहे हैं। हम बहुत कुछ अचीव करना चाहते हैं, उसमें कहीं न कहीं घर पीछे छूट जाता है। हम उतना समय नहीं दे पाते हैं। ऐसे समय में अपने जीवन साथी से आपको सिर्फ यही अपेक्षा रहती है कि वे आपको समझे और साथ दे। यह बहुत स्वार्थी सोच भी हो सकती है, मगर भूमिनी ने उस वक्त में हंसते हुए मेरा साथ दिया और इतना इतना धैर्य रखा, जो बहुत बड़ी बात है। वरना हम यहां तक नहीं पहुंच पाते। महात्मा ज्योतिबा फुले जैसे महान समाज सुधारक को पर्दे पर जीना कितनी बड़ी जिम्मेदारी थी? उनके किरदार में ढलने के लिए क्या तैयारी रही? हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह थी कि हमें इतिहास को बिना बदले एकदम ईमानदार तरीके से उनकी बात आप तक पहुंचानी थी, क्योंकि वह सिर्फ एक व्यक्तित्व नहीं हैं। उन्हें समाज का एक पूरा वर्ग भगवान मानता है और सही कारणों से मानता है। हमारी कोशिश यह रही कि हम ना उन्हें किसी तरह से जज कर रहे हैं, न उन्हें अपने रंग में ढाल रहे हैं। हम सिर्फ उनकी बात आप तक पहुंचा रहे हैं। वहीं, बतौर एक्टर मेरी तैयारी का सबसे बड़ा पार्ट यह था कि मुझे उनके बारे में वे चीजें भी जाननी, समझनी थी, जो स्क्रिप्ट में नहीं लिखी थीं। मुझे उनके व्यक्तित्व को समझना था ताकि बिना कुछ बोले भी अगर स्क्रीन पर खड़ा हूं तो लोगों को लगे कि वे ज्योतिबा फुले को देख रहे हैं और यह सिर्फ बाहरी दिखावे, फिजिकल ट्रांसफॉर्मेशन से या कपड़ों से नहीं संभव था। उस पर चुनौती ये थी कि उनको जानने-समझने के लिए हमारे पास न कोई विडियो थे, न उनके कोई ऑडियो थे। तस्वीरें भी जो हैं, वे सिर्फ पेंटिंग हैं। हमारे पास किताबों में लिखा मटीरिअल ही था, जिससे राइटर-डायरेक्टर अनंत महादेवन ने पूरी स्क्रिप्ट तैयार की।



रश्मिका मंदाना ने सोशल मीडिया पर शेयर की थामा की शूटिंग अपडेट

पुष्पा फेम अभिनेत्री रश्मिका मंदाना इन दिनों अपनी आगामी हॉरर फिल्म थामा की शूटिंग में व्यस्त हैं। थामा एक हॉरर कॉमेडी फिल्म है, जिसमें उनके साथ आयुष्मान खुराना नजर आएंगे। आज थामा की अभिनेत्री रश्मिका ने सोशल मीडिया पर फिल्म की शूटिंग को लेकर एक अहम जानकारी शेयर की है और साथ ही अपने फैंस से एक खास सवाल का जवाब भी मांगा है। रश्मिका मंदाना ने हाल ही में अपना 29वां जन्मदिन मनाया। वहीं वह इस दौरान अपनी आगामी हॉरर फिल्म थामा की शूटिंग में व्यस्त हैं। इसी फिल्म को लेकर रश्मिका ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर किया है और साथ ही अपने प्रशंसकों से फिल्म को लेकर एक खास सवाल भी पूछा है, जिसे देखने के बाद रश्मिका के फैंस की उत्सुकता फिल्म को लेकर और अधिक बढ़ गई है।

रश्मिका ने इंस्टाग्राम पर थामा के लोकेशन की एक तस्वीर शेयर की और साथ ही नोट भी लिखा। रश्मिका ने घने पेड़ों के बीच दूबते हुए सूरज की एक तस्वीर शेयर की है और साथ ही लिखा, कुछ दिनों के लिए रात में शूटिंग। आपको इस पोस्ट में सिर्फ चांद या फिर कैमरे की लाइट और सितारे ही दिखाई देंगे। इस नोट के साथ रश्मिका ने अपने फैंस से एक सवाल भी पूछा। क्या आप बता सकते हैं कि यह कौन सा शहर है, जो दिखाई नहीं दे रहा। क्या आप सहमत हैं?

हॉरर फिल्म थामा इस दिवाली सिनेमाघरों में रिलीज हो जाएगी। आदित्य सरणोतदार द्वारा निर्देशित इस फिल्म में रश्मिका मंदाना के अलावा आयुष्मान खुराना भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इस फिल्म का निर्माण मेडॉक फिल्मस और जियो स्टूडियोज मिलकर कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, रश्मिका मंदाना फिल्म थामा के अलावा कुबेर नाम की फिल्म में नजर आएंगी। इस फिल्म में रश्मिका के साथ साउथ अभिनेता धनुष नजर आएंगे। कुबेर इस साल 20 जून को रिलीज होगी। यह फिल्म शेखर कम्मला द्वारा निर्देशित एक ड्रामा तमिल फिल्म है।

ब्रीफ न्यूज

आरपीआईए में रवि
करोसिया को मिली प्रदेश
स्तर की जिम्मेदारी



इंदौर। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया (आठवले) के प्रदेश प्रभारी मोहम्मद इरफान ने प्रदेश स्तरीय कार्यकारिणी भंग कर रवि करोसिया को प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है। उन्होंने यह घोषणा इंदौर के एक निजी होटल में आयोजित प्रेस वार्ता में की।

बोले- सभी जिलों,संभाग आरपीआईए के नियुवत करेगे पदाधिकारी

इरफान ने कहा कि हर 3 साल में नई कार्यकारिणी का गठन किया जाता है। उन्होंने कहा कि हम बड़े स्तर पर काम कर रहे हैं और कार्यकारिणी में युवाओं को अवसर दिया जा रहा है। प्रदेश प्रभारी इरफान ने कहा कि आंबेडकर जयंती पर राष्ट्रीय अध्यक्ष मंत्री आठवले द्वारा महू में बीस साल से कार्यक्रम आयोजित किया जा है, उसी के उपलक्ष में आंबेडकर जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, रैली निकाली जाएगी। भोजन वितरण की भी व्यवस्था रहेगी।

आरपीआईए के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष रवि करोसिया ने कहा कि आगामी दिनों में हम मप्र के 55 जिलों, 10 संभागों, 17 नगर निगम, 99 नगर पालिका और 428 तहसीलों में अपने पदाधिकारी नियुक्त करेंगे। अभी 10 जिलों और तहसीलों में हमारे पदाधिकारी नियुक्त हैं।

बाइक टकराने के विवाद में चाकू से किया हमला, एक की मौत

इंदौर। इंदौर के खुडैल थाना क्षेत्र में मामूली विवाद के बाद एक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। घटना उस समय हुई जब युवक अपने दो दोस्तों के साथ तालाब से लौट रहा था। रास्ते में बाइक टकराने की बात पर आधा दर्जन से ज्यादा युवकों से उनका विवाद हो गया, जिसके बाद आरोपियों ने चाकू से हमला कर दिया। तेजाजी नगर के नायता मुंडला में रहने वाला सलमान खान अपने दो दोस्तों छोटा सलमान और एक अन्य के साथ सनावदिया गांव के पास स्थित तालाब में नहाने गया था। लौटते वक़्त खुडैल-सनावदिया रोड पर अज्ञात बाइक सवारों से उनकी बाइक की टक्कर हो गई। इसी बात को लेकर कहासुनी शुरू हुई, जो देखते ही देखते हिंसक झगड़े में बदल गई। विवाद के दौरान आरोपियों ने सलमान पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। उसके पेट, हाथ और पैर में गंभीर चोटें आईं। बीच-बचाव करने गए छोटा सलमान की भी चाकू लग गया। दोनों को गंभीर हालत में एमबाय अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान रात में सलमान की मौत हो गई। परिजनों के मुताबिक, सलमान निजी कंपनी में काम करता था। वह अपने दो भाइयों-सोहेल और साहिल के साथ इंदौर में किराए से रहता था। पिता शहाबुद्दीन मूलतः कन्नोद गांव में रहते हैं। बड़ा भाई सोहेल ऑटो रिक्शा चलाता है। एक साल पहले काम की तलाश में तीनों भाई मां के साथ इंदौर आकर बस गए थे। घटना के बाद खुडैल पुलिस ने सलमान के दोनों दोस्तों को पूछताछ के लिए थाने बुलाया है। आरोपियों की पहचान और गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।

मंदिर में फूल बंगला सजेगा, अभिषेक के बाद भगवान का होगा मनमोहक शृंगार

रणजीत हनुमान मंदिर पर भंडारा आज, 1 लाख से ज्यादा भक्त लेंगे प्रसादी

सत्ता सुधार ■ इंदौर

रणजीत हनुमान मंदिर पर मंगलवार को चलित भंडारा होगा। एक लाख से ज्यादा भक्तों के लिए प्रसादी की व्यवस्था रहेगी। सोमवार सुबह भट्टी पूजन हुआ और प्रसादी बनना शुरू हो गई। मंगलवार को मंदिर में फूल बंगला सजेगा। भगवान का सुंदर शृंगार होगा। मंदिर में लगातार बढ़ती भक्तों की संख्या को देखते हुए इस बार भी चलित भंडारा करने का निर्णय लिया है, ताकि भक्तों को कई घंटों का इंतजार न करना पड़े।

मंदिर के मुख्य पुजारी पं. दीपेश व्यास ने बताया मंगलवार को मंदिर पर

चलित भंडारा होगा। शाम को भगवान की आरती और छप्पन भोग अर्पित करने के बाद भंडारे की शुरुआत होगी। इस बार भक्तों को पैकेट में प्रसादी दी जाएगी। जिससे वे अपने घर भी प्रसादी ले जा सकेंगे। मंदिर के ग्राउंड में बैठकर प्रसादी खिलाने की व्यवस्था नहीं रहेगी। क्योंकि इससे मंदिर के बाहर भक्तों की भीड़ ज्यादा बढ़ जाती है और उन्हें घंटों प्रसादी के लिए इंतजार करना पड़ता है। इसलिए इस बार भी चलित भंडारे का निर्णय लिया है।

पं. दीपेश व्यास ने बताया कि मंगलवार को सुबह 10 बजे बाबा का

अभिषेक होगा। इसके बाद विशेष शृंगार किया जाएगा। मंदिर में फूल बंगला सजेगा। फूल बंगले में मोगरा, रजनीगंधा, गुलाब, कट फ्लावर आदि फूलों से मंदिर को सजाया जाएगा। गर्मी को देखते हुए फूल बंगले का आधा काम सोमवार रात को बाकी काम मंगलवार सुबह किया जाएगा। शाम को साढ़े 5 बजे भगवान की आरती होगी। छप्पन भोग और भंडारे के लिए तैयार प्रसादी का भोग अर्पित होगा। परंपरानुसार शहर के 101 मंदिरों में प्रसादी को भेजा जाएगा। शाम 6 बजे के बाद मंदिर के ग्राउंड में चलित भंडारे की शुरुआत होगी।



रामभाजी. नुवती और पूरी का खास पैकेट

पंडित ने बताया कि भक्तों को चलित भंडारे में प्रसादी देने के लिए पैकेट की व्यवस्था रहेगी। ग्राउंड में आने के साथ ही एक काउंटर से भक्तों को एक पैकेट मिलेगा जो तीन खन का रहेगा। दूसरे काउंटर से रामभाजी, अगले काउंटर से चार से पांच पूरी और चौथे काउंटर से नुवती उस पैकेट में परोसी जाएगी। इस पैकेट में ही उसका ढक्कन भी होगा, जिसे बंद करने के बाद भक्त आसानी से उसे ले जा सकेंगे। इस तरह के पैकिंग होने से भक्त अपने घर भी ले जाकर प्रसादी ग्रहण कर सकेंगे या मंदिर परिसर के बाहर भी प्रसादी ग्रहण कर सकेंगे।

इंदौर मेट्रो सुबह 8 से रात 8 बजे तक चलेगी, किराया 20 से 80 रुपए

पहले सप्ताह नि:शुल्क सफर कर सकेंगे यात्री, यलो लाइन का रूट 5.9 किमी

सत्ता सुधार ■ इंदौर

इंदौर मेट्रो को प्रायोरिटी कॉरिडोर पर चलाने के लिए एमपी मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने अपनी तैयारी तेज कर दी है। इंदौर में मेट्रो के कॉर्पोरेशन रन की तारीख अभी तय नहीं हुई है, लेकिन मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने मेट्रो का किराया, किस रूट पर चलेगी, मेट्रो कितना समय लेगी, कितने बजे से चलना शुरू करेंगे, कितनी बजे इसका आखिरी फेरा लगेगा, यह तय कर दिया है।

सीएमआरएस की टीम ने पिछले दिनों ही इंदौर मेट्रो को हरी झंडी दिखाते हुए अपनी ओके रिपोर्ट दे दी थी। मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन से मिली जानकारी के अनुसार इंदौर मेट्रो प्रायोरिटी कॉरिडोर पर गांधी नगर से स्टेशन नंबर 3 तक चलेगी। इस दौरान मेट्रो दोनों तरफ से 25-25 फेरे लगाएंगी, यानी की मेट्रो दोनों तरफ के मिलाकर कुल 50 फेरे लगाएंगी। इंदौर मेट्रो दोनों तरफ से एक साथ चलना शुरू होगी यानी गांधी नगर स्टेशन और सुपर कॉरिडोर स्टेशन नंबर 3 से एक साथ चलेगी। इंदौर मेट्रो दोनों स्टेशन से सुबह 8 बजे से चलना शुरू होगी और आखिरी फेरा रात 8 बजे लगाएगी। मेट्रो के कॉर्पोरेशन रन के दौरान हर 30 मिनट के अंतराल पर एक मेट्रो कोच सेट का संचालन किया जाएगा। यात्रियों की संख्या के आधार पर इस समय को बढ़ाया या घटाया जा सकेगा।



5 ज़ोन में बांटा गया है इंदौर मेट्रो का किराया : मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने इंदौर मेट्रो का किराया 5 ज़ोन में बांटा है। इस 5 ज़ोन के तहत इंदौर मेट्रो के 28 स्टेशन आएंगे। न्यूनतम किराया 20 रुपए रहेगा जबकि अधिकतम किराया 80 रुपए रखा गया है। वहीं शुरुआती प्रायोरिटी कॉरिडोर की बात करें तो इसका न्यूनतम किराया 20 रुपए और अधिकतम किराया 30 रुपए रहेगा।

आम लोगों को मिलेगी मेट्रो की कनेक्टिविटी : रेंडिसन चौराहा, विजयनगर यात्री ई-बस में बैठकर सुपर कॉरिडोर के स्टेशन नंबर 3 तक पहुंचेंगे। एससी 3 से गांधी नगर स्टेशन से यात्री मेट्रो में बैठकर सफर करेंगे। गांधी नगर से एयरपोर्ट व बड़ा

गणपति यात्री गांधी नगर स्टेशन से ई-बस में बैठकर एयरपोर्ट व बड़ा गणपति चौराहे तक की यात्रा करेंगे।

कॉर्पोरेशन रन में सिर्फ 2 से 5 मिनट लगेगे : इंदौर में यलो लाइन का प्रायोरिटी रूट कुल 5.9 किमी का है। इसमें 5 स्टेशन रहेंगे। कॉर्पोरेशन रन के दौरान हर स्टेशन पर मेट्रो सिर्फ 2 से 5 मिनट के अंदर पहुंचेगी। अभी पांच स्टेशन मेट्रो डिपो से लेकर सुपर कॉरिडोर स्टेशन नंबर 3 के आगे तक टेस्टिंग हो रही है, जो दिन और रात दोनों समय की जा रही है। बताया जा रहा है कि कॉर्पोरेशन रन के दौरान जब इस रूट पर मेट्रो चलेगी तो वह हर 2 से 5 मिनट में एक स्टेशन पर पहुंच जाएगा।

पहले सप्ताह नि:शुल्क यात्रा

इंदौर मेट्रो के कॉर्पोरेशन रन के दौरान मेट्रो प्रबंधन ने यात्रियों को आकर्षित करने और प्रचार-प्रसार के लिए टिकट पर छूट देने की घोषणा की है। पहले सप्ताह 100 प्रतिशत छूट। दूसरे सप्ताह टिकट पर 70 प्रतिशत छूट। तीसरे सप्ताह टिकट पर 50 प्रतिशत छूट। चौथे सप्ताह से 3 महीने तक टिकट पर 25 प्रतिशत छूट रहेगी।

पीएम मोदी दिखा सकते हैं हरी झंडी : मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इंदौर मेट्रो के कॉर्पोरेशन रन को हरी झंडी दिखाने पीएम नरेंद्र मोदी आ सकते हैं, एमपी सरकार की मंशा है कि इस रन के शुरू होने के दौरान पीएम मोदी मौजूद रहें। बताया जा रहा है कि सब कुछ क्लियर होने के बाद मेट्रो अफसर ने इस संबंध में सरकार को पत्र लिख दिया है, जिसमें कॉर्पोरेशन रन शुरू करने की बात कही गई है। वहीं अब सरकार पीएम नरेंद्र मोदी से समय लेगी और जैसे ही तारीख मिलती है, कॉर्पोरेशन रन यानी आम जनता के लिए मेट्रो शुरू कर दी जाएगी। यात्रियों के लिए मेट्रो चलाने की मेट्रो प्रबंधन की पूरी तैयारी है। सुपर प्रायोरिटी कॉरिडोर के पांचों मेट्रो स्टेशन पर स्टाफ, टिकट काउंटर सहित अन्य इंतजाम भी हो चुके हैं। ऐसे में प्रदेश सरकार चाहेगी तो जल्द ही मेट्रो का कॉर्पोरेशन रन शुरू किया जा सकेगा।

आबकारी विभाग ने की सवा लाख से ज्यादा की शराब जब्त



सत्ता सुधार ■ इंदौर

इंदौर में महंगी शराब के शौकीनों के लिए हरियाणा से शराब लाकर घरों से बेची जा रही है। शराब की होम डिलीवरी भी की जा रही है। आबकारी विभाग को इस संबंध में लगातार मिल रही शिकायत के बाद विभाग ने दो पॉश इलाकों के दो फ्लैट्स पर एक साथ छापा मारते हुए प्रीमियम शराब जब्त कर आरोपी को हिरासत में लिया।

सहायक आयुक्त तिवारी ने बताया कि बोटलों की जांच में सामने आया है कि वह मध्यप्रदेश

कई बार ग्राहक बनकर बुलाया, लेकिन नहीं आया

आबकारी अधिकारियों ने बताया कि हरप्रीत घर से भी अपने ग्राहकों को शराब बेचता था। बड़े ग्राहकों को शराब घरों या होटलों तक भी पहुंचाता था। इसके लिए कई बार हरप्रीत को ग्राहक बनकर फोन भी किया, लेकिन वह नहीं आया। वह सिर्फ अपनी जान-पहचान के विश्वसनीय ग्राहकों से ही डील करता था, इसलिए उसके घर का पता लगाकर कार्रवाई की गई। आरोपी हरप्रीतसिंह को आबकारी अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

की नहीं हैं। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वो ये बोटलें हरियाणा से कम कीमत में लाकर इंदौर में बेचता था। इस आधार पर जांच करवाई

जा रही है कि बोटलें कहाँ की हैं। जांच में यह भी प्रमुखता से देखा जा रहा है कि कहीं यह नकली शराब तो नहीं है।

हरियाणा सेवा आश्रम भक्त निवास का भूमि पूजन संपन्न

उज्जैन। नृसिंह घाट स्थित हरियाणा सेवा आश्रम में भक्त निवास का भूमिपूजन अनंत श्री विभूषित 1008 महामंडलेश्वर श्री ज्योति गिरी जी महाराज, महंत कृष्ण गिरी जी आश्रम संस्थापक, श्री बालयोगी उमेश नाथ जी महाराज राज्यसभा सांसद, श्री महावीर नाथ जी, महापौर श्री मुकेश टटवाल, निगम अध्यक्ष श्रीमती कलावती यादव,नगर उपाध्यक्ष श्री जगदीश पांचाल, श्री विनोद लाला के आतिथ्य में संपन्न हुआ भूमि पूजन लेकर सुपर कॉरिडोर स्टेशन नंबर 3 के आगे तक टेस्टिंग हो रही है, जो दिन और रात दोनों समय की जा रही है। बताया जा रहा है कि कॉर्पोरेशन रन के दौरान जब इस रूट पर मेट्रो चलेगी तो वह हर 2 से 5 मिनट में एक स्टेशन पर पहुंच जाएगा।

पार्षद जीतू यादव ने चबूतरा बनाने वाले से कहा-

हिंदू होकर पूरे मोहल्ले को मुसलमान बनाओगे?

सत्ता सुधार ■ इंदौर

पार्षद जीतू यादव कुलकर्णी नगर में निरीक्षण के लिए पहुंचे थे। यहां उन्होंने दरगाह के पास अतिक्रमण होते देखा, तो नाराज हो गए।

इंदौर के बीजेपी पार्षद कमलेश कालरा कांड के बाद पार्टी से निष्कासित पूर्व एमआईसी मेंबर जीतू यादव का एक वीडियो सामने आया है। इसमें वे इंदौर के कुलकर्णी नगर में बनी एक दरगाह के अतिक्रमण को लेकर उग्र होते दिख रहे हैं। नगर निगम सूत्रों के मुताबिक वीडियो रविवार का है। इसमें जीतू यादव नगर निगम कर्मचारियों और एक स्थानीय व्यक्ति को फटकारते हुए नजर आ रहे हैं। वे कहते हैं- अभी मैं जिंदा हूं, कहीं गया नहीं हूं, अभी यहीं हूं।



रहवासी से बोले- बंद करो दुकानदारी : निगम सूत्रों के मुताबिक रविवार को पार्षद जीतू यादव कुलकर्णी नगर में निरीक्षण के लिए पहुंचे थे। यहां उन्होंने दरगाह के पास अतिक्रमण होते देखा। इस दौरान वे एक युवक से कहते हुए दिख रहे हैं- यह बंद करो, तुम्हारी दुकानदारी। मैं कई बार हिंदी में समझा चुका हूं। आप पिताजी की उम्र के हो, इसलिए कुछ बोलता नहीं हूं। आपको क्या लगा, मैं चला

गया? अभी मैं जिंदा हूं और यहीं हूं। जरा सी दरगाह थी, अब इतना बड़ा चबूतरा बना दिया। इसे खजराना और आजाद नगर बना दोगे क्या? शर्म आनी चाहिए तुम्हें, हिंदू होकर मुसलमान बन गए। क्या पूरे मोहल्ले को मुसलमान बनाओगे?

निगमकर्मियों से बोले- पैसे लेकर काम करते हो : वीडियो में जीतू यादव निगम कर्मचारियों पर भी नाराजगी जताते नजर आते हैं। वे कहते हैं- तुम यहां किससे पूछकर आ गए हो? जेसीबी किससे पूछकर लाए? मेरे बिना पूछे कैसे आए? मैं तुम्हारी शिकायत महापौर और कमिश्नर से करूंगा। पैसे लेकर काम करते हो यहां। वहां लोग बुलाते हैं तो चार-चार दिन लग जाते हैं, और यहां बिना पूछे चले आए?

महापौर ने किया नर्मदा पपिंग स्टेशन का निरीक्षण

इंदौर।

तड़के सुबह महापौर पुष्पमित्र भार्गव ने नर्मदा पंप स्टेशन का औचक निरीक्षण किया। महापौर द्वारा बिजलपुर नर्मदा पम्प स्टेशन, पानी की टंकियों में वितरण के सिस्टम को मॉनिटरिंग व्यवस्था का अवलोकन किया। उन्होंने वाचू पॉइंट से आने वाले पानी कम क्यों आ रहा है इसको लेकर अधिकारी, कर्मचारियों से जानकारी ली। संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर इसके लिए जांच के निर्देश भी दिए, इंदौर तक आने वाले पानी की चोरी को चेक करने के लिए जांच के निर्देश दिये। महापौर ने चंदन नगर क्षेत्र में बनी पानी की टंकी का भी निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। औचक निरीक्षण के दौरान जल कार्य प्रभारी अभिषेक शर्मा बबलू एवं अपर आयुक्त अभिलाष मिश्रा भी उपस्थित थे। महापौर पुष्पमित्र भार्गव ने कहा कि मेरे लिए पूरा शहर एक समान है इसलिए टंकियों में पानी के वितरण में कोई भी अधिकारी, पार्षद पक्षपात न करे।



सत्ता सुधार ■ इंदौर

शासन ने 9 आईएसएस अधिकारियों के तबावले किए उसमें उज्जैन कलेक्टर भी चपेट में आए, जिन्हें हटाए जाने की सुनगुणाहट बोते कई समय से चल रही थी। मगर अभी जो ताजा विवाद उनके बंगले पर घटित हुआ उसके बाद कल ही शासन ने उन्हें हटा दिया। वहीं इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह को उज्जैन सिंहस्थ की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई और उन्हें फिलहाल मेला अधिकारी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। फिलहाल इंदौर से ही उज्जैन सिंहस्थ की मॉनिटरिंग की जाएगी।

कलेक्टर आशीष सिंह का कहना है कि बाबा महाकाल ने उन्हें एक बार फिर सेवा का मौका दिया है और वे मुख्यमंत्री के

अम्बेडकर जयंती के कार्यक्रम के बाद उज्जैन जाएंगे और वहां चल रही सिंहस्थ की गतिविधियों की जानकारी लेंगे। इसके पूर्व भी वे सिंहस्थ से जुड़ी महत्वपूर्ण बैठकों में शामिल होते रहे हैं और चूँकि पूर्व में उज्जैन कलेक्टर के रूप में भी काम कर चुके हैं। महाकाल कॉरिडोर का अधिकांश काम उनके ही कार्यकाल में पूरा हुआ था। लिहाजा उज्जैन सिंहस्थ से जुड़ी तैयारियों की भी उन्हें पूरी जानकारी है और इंदौर से भी उसकी मॉनिटरिंग करते रहेंगे। कल ही राज्य शासन ने जो तबावले किए उनमें इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह को उज्जैन सिंहस्थ

के मेला अधिकारी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। मुख्यमंत्री अभी तक उज्जैन सिंहस्थ की तैयारियों से संतुष्ट नहीं हैं,



जिसके चलते वे आशीष सिंह जैसे काबिल अधिकारी को पूरा जिम्मा सौंपना चाहते हैं और कुछ माह बाद कलेक्टर का प्रमोशन भी

सचिव के लिए हो जाएगा और तब उन्हें उज्जैन का संभागायुक्त बनाकर सिंहस्थ-2028 की समस्त बागडोर सौंपी जा सकती



संविधान निर्माता का जन्मदिन धूमधाम से मना, निकला विशाल चल समारोह



सत्ता सुधार ■ मुरैना
सोमवार 14 अप्रैल को संविधान रचयिता डॉ भीमराव अंबेडकर का जन्मदिन पूरे देश के साथ मुरैना मुख्यालय पर भी दलित वर्ग के साथ सर्वहारा वर्ग के लोगों ने धूमधाम से मनाया एवं विशाल चल समारोह निकला। जिसमें दलित वर्ग बाबा साहब के प्रति अभिमान और श्रद्धा व्यक्त करते

हुए झूमते-नाचते व गाते हुए खुशी जाहिर कर रहे थे। सोमवार की दोपहर बैरियर स्थित स्टैडियम से विशाल चल समारोह निकला, जिसमें हजारों की संख्या में दलित एवं सर्वहारा वर्ग के लोग शामिल थे, पूरी एमएस रोड पर लोग ही लोग दिखाई दे रहे थे और नीला झंडा एवं नीला रंग सड़कों पर नजर आ रहा था। चल समारोह में बाबा साहब की कई

झाकियां प्रदर्शित की गईं एवं उनके गीतों पर दलित समाज के लोग नाचते गाते धूम रहे थे। चल समारोह को देखते हुए पुलिस प्रशासन द्वारा कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए एवं भारी पुलिस फोर्स रैली में चल रही थी, जिससे किसी प्रकार का खलल रैली में ना पड़े। चल समारोह के दौरान एमएस रोड पर स्वागत करने वाले राजनीतिक दलों के नेताओं के

टेंट व तंबू इतनी संख्या में लगे थे कि कहीं भी जगह नहीं थी और रैली में चल रहे लोगों का जगह-जगह अग्रवाल महासभा के रमेश चंद गर्ग तथा सदस्यों सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के कार्यकर्ता व पदाधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा शीतल पेय पदार्थ व स्वल्पाहार के साथ भव्य स्वागत किया गया।



हर्षोल्लास के साथ मनाई गई डॉक्टर बाबासाहब अंबेडकर की 134 वीं जयंती

कैलारस। भारतीय संविधान के शिल्पकार आधुनिक राष्ट्रीय निर्माता व भारत रत्न वोधिसत्त्व डॉ बाबासाहब अंबेडकर की 134 वीं जयंती अम्बेडकर मार्ग कैलारस में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जयंती चल समारोह शुगर फैक्ट्री से प्रारंभ किया गया, जिसमें हजारों समाज सेवी उपस्थित होकर शहर के मुख्य मार्गों से गुजरते हुए, पुरानी सड़की मंडी चौराहा, चौड़ा खरंजा, गौंधी मार्ग से गुजरते हुए अम्बेडकर मार्ग तक पहुँची एवं अनाज मंडी प्रांगण में रैली का समापन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित समाज सेवी माखन लाल अर्गल द्वारा बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनके चरणों में पुष्प अर्पित किए। कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने अनाज मंडी प्रांगण में मंच पर उपस्थित होकर बाबा साहब के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला और उनके मार्ग विह्वल पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

सबलगढ़ कांग्रेस ने हर्षोल्लास से मनाई डॉ भीमराव अम्बेडकर जयंती

सबलगढ़। कांग्रेस पार्टी ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के द्वारा संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर जी की जयंती बेनीपुरा में बाबासाहब डॉ भीमराव अम्बेडकर पार्क पर बड़ी धूम धाम से मनाई गई। जिसमें राजेन्द्र सिंह जादौन (ब्लॉक अध्यक्ष कांग्रेस कमेटी सबलगढ़) एवं कमल सिंह रावत (पूर्व जिला पंचायत सदस्य) के द्वारा बाबासाहब की प्रतिमा पर पुष्पहार पहनाकर कार्यक्रम को संचालित किया गया। इस मौके पर राजेन्द्र सिंह जादौन के द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित जन समूह को संबोधित करते बाबासाहब के जीवन के बारे में बताया कि किन कठिन परिस्थितियों में भी बाबासाहब ने योग्यता के आधार पर द्वा इच्छाशक्ति से हिन्दुस्तान में ही नहीं अपितु विश्व में भी विशिष्ट पहचान बनाई तथा कांग्रेस पार्टी ने हमेशा बाबासाहब के सम्मान में कोई कमी नहीं छोड़ी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से त्रिलोक चौधरी वरिष्ठ कांग्रेस नेता, जगदीश बंसल (जिला कार्यकारी अध्यक्ष), अजयप्रताप सिंह एवं सैकड़ों पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।



ब्रीफ न्यूज

जल गंगा अभियान के तहत साफ सफाई का कार्य किया

मुरैना। जल गंगा संवर्धन अभियान 2025 के अंतर्गत अम्बाह शाखा नहर की आर.डी. 4470 मी. पर जंगल सफाई का कार्य किया गया। जल संसाधन संभाग मुरैना के अधीन जल संसाधन ए.बी.सी. उपसंभाग क्र. 1 सबलगढ़ के कर्मचारियों के द्वारा 13 अप्रैल 2025 को जल गंगा संवर्धन अभियान-2025 के अंतर्गत अम्बाह शाखा नहर की आर.डी. 4470 मी. पर से जंगल सफाई का कार्य जन भागीदारीध्जन सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में उनके साथ विभागीय श्रमिक एवं गणमान्य नागरिकों ने भी भाग लिया, सभी ने एक जुट होकर श्रमदान किया।

स्वास्थ्य विभाग ने जारी की लू से बचने की एडवाइजरी

मुरैना। वर्तमान में बढ़ते तापमान को देखते स्वास्थ्य विभाग ने लू (तापघात) से बचने की एडवाइजरी जारी की है। मुख्य विकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पंचेश उपाध्याय ने जानकारी देते हुये बताया है कि लू (तापघात) से गंभीर स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न हो जाती है, जिसमें बुद्धजन, बच्चे, महिलायें, धूप में काम करने वाले मजदूर ज्यादा प्रभावित होते हैं। लू एवं तापघात से बचाव के लिये गर्मी के दिनों में धूप में बाहर जाते समय हमेशा सफे द या हल्के रंग के ढीले सूती वस्त्रों का प्रयोग करें, भोजन करके एवं पानी पीकर ही बाहर निकले, गर्मी के मौसम में गर्दन के पिछले भाग कान व सिर को गमछे या तौलिये से ढककर ही धूप में निकलें, रंगीन चरमे व छतरी का प्रयोग करें।सीएमएचओ डॉ. उपाध्याय ने बताया कि गर्मी में हमेशा पानी अधिक मात्रा में पिये एवं पेय पदार्थों का अधिक से अधिक मात्रा में सेवन करें। बाहर जाते समय अपने साथ पानी अवश्य रखें। गर्मी के दिनों में बच्चों का विशेष ध्यान रखें। बच्चों को सिरधारी कि जब भी उन्हें अधिक गर्मी महसूस हो तो वे तुरंत घर के अंदर आएं। गर्मी के दिनों में बुजुर्गों का भी विशेष ध्यान रखें। उन्हें धूप में घर से बाहर न निकलने दें, उन्हें समय-समय पर पानी पीने के लिए प्रेरित करें। गर्मी के दिनों में ठण्डे मौसमी फलों का सेवन करें, गर्मी के दिनों में तीव्र धूप को अंदर आने से रोकें।

पुलिस की हैवानियत: अवैध वसूली के लिए नाबालिक एवं उसके भाई को पीटकर किया अधमरा

चक्का जाम के मामले में लोगों को चिन्हित कर उठा रही पुलिस, कर रही अवैध वसूली, थाना दिमनी का मामला

सत्ता सुधार ■ मुरैना

भाजपा शासन में पुलिस किस तरह बे-लगाव होकर अवैध वसूली कर रही है। इसका जीता जागता उदाहरण रविवार की देर शाम देखने को मिला। जिले के दिमनी थाना की पुलिस चक्का जाम करने वालों में शामिल लोगों को अब वसूली का टारगेट बना रही है। पुलिस कर्मचारियों द्वारा एक नाबालिक को जुते की दुकान से उठाया और उसके भाई को हलवाई की दुकान से उठाकर थाने ले आई और फिर लाठी एवं पट्टे के द्वारा बेरहमी से मारपीट की गई, जिससे दोनों के शरीर पर नील पड़ गए हैं और नाबालिक की हालत काफी गंभीर बनी हुई है। दोनों भाइयों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जाता है



कि पुलिस कर्मचारियों द्वारा घायल दोनों भाइयों के परिवार वालों से रूपयों की डिमांड की गई है और चक्का जाम में शामिल प्रत्येक व्यक्ति से डरा धमका कर अवैध वसूली की जा रही है।

उल्लेखनीय है कि 8 अप्रैल की देर शाम को जिले के दिमनी थाना क्षेत्र में एक सड़क दुर्घटना के दौरान महिला की मौत हो गई थी, जिस पर आक्रोशित भीड़ ने वहां पर चक्का जाम कर दिया था। घटना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और वाहन

चालक के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया तो वहीं चक्का जाम करने वालों के विरुद्ध भी मामला दर्ज कर लिया गया, जिसमें अनगिनत लोग शामिल हैं। अब पुलिस द्वारा चक्का जाम में शामिल लोगों को चिन्हित कर उठाया जा रहा है और उनसे 5 से 10,000 तक की अवैध वसूली की जा रही है। उक्त आरोप घायल अजय केवट ने लगाया है। बताया जाता है कि रविवार की शाम 6:30 बजे के आसपास अजय पुत्र सुंदर सिंह केवट 19 निवासी चांदपुर

डाक का पुरा हलवाई की दुकान पर काम कर रहा था, तभी थाने की पुलिस वहां पहुंची और उसे उठाकर ले आई और फिर उसके बाद अजय के छोटे भाई आशीष पुत्र सुंदर सिंह केवट 14 निवासी डाक का पुरा जो जुता की दुकान पर बैठ था, उसे भी उठा लिया और थाने लाकर दोनों को डंडों एवं पट्टों से बेरहमी से मारपीट कर दी। पुलिस कर्मचारियों ने इतनी मारपीट की कि उनके शरीर पर नील पड़ गए हैं। इस मारपीट में नाबालिक की हालत काफी गंभीर बताई गई है। जब लोग एकत्रित होकर वहां पहुंचे और दबाव बनाया, तब उन्हें अस्पताल ले जाया गया। अजय ने बताया कि पुलिस कर्मचारियों द्वारा उनके परिवार वालों से रूपयों की डिमांड की गई,

यही नहीं अब पुलिसकर्मी चक्का जाम में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को चिन्हित कर उठा रही है और अवैध वसूली कर रही है।

भाजपा शासन में निष्क्रिय पुलिस अधिकारियों के कारण जिले के अधिकांश थानों की पुलिस पूरी तरह बेलागम हो चुकी है और लगातार उल्टे सोधे कारनामों को अंजाम दे रही है। पूर्व में भी पुलिस के कई अमानवीय चेहरे सामने आ चुके हैं, लेकिन जिले के पुलिस कप्तान खाकी वर्दी को दामदार करने वाले पुलिस कर्मचारियों पर कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं, जिससे जनता में आक्रोश बढ़ रहा है और पुलिस पर से विश्वास उठता जा रहा है।

20 दिन से पहले फोन कम्पनी ने लाइन विछाने कि लिए खुदवाये गड्डे, हादसे की आशंका

युवराज सिंह जादौन ■ सबलगढ़

इन दिनों सुन्हेरा मेन रोड पर करीब 10 फुट गहरा गड्ढा खोद रखा है जिससे कभी भी कोई गंभीर हादसा हो सकता है। पैदल चलता कोई भी राहगीर इस गड्ढे में गिर सकता है। संकरे खुदे गड्ढे में नीचे पानी भी भरा हुआ है। खासतौर से अंधेरे में गिरने की अधिक आशंका है क्योंकि यहां न तो कोई चेतावनी का बोर्ड लगावा गया है और न ही रोशनी का कोई प्रबंध है। अगर नगर पालिका की ओर से परमिशन देकर किसी फोन कंपनी द्वारा खुदवाए गये इस गड्ढे में कोई गिरा तो इसमें उसकी जान को खतरा हो सकता है। जानकारी के भाजपा मण्डल अध्यक्ष अवदेश गोयल के घर से थोड़ा आगे फोन कंपनी को गड्ढा खोदने की इजाजत नगर पालिका ने नहीं दी है। करीब 20 दिन से इस खुदे हुए गड्ढे में न तो कोई तारें इत्यादि डाली जा रही हैं और न ही इसे बंद किया जा रहा है। कंपनी किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रही है। विदित हो कि नगर पालिका से फोन कंपनियों द्वारा कोई परमिशन नहीं ली गई है लेकिन इसका संबंधित विभाग मौके का जाकर कभी जायजा भी नहीं लेता, जिसके चलते कंपनियां अपनी



मनमानी करती हैं। बीते दिनों कई ऐसे हादसे पेश आए, जिसमें कंपनियों ने गड्ढे खोद दिये और जहां हादसे भी हुए। 10 फुट गहरे गड्ढे में अच्छा खासा पानी भी भरा हुआ है क्योंकि देखने पर ऐसा लग रहा है कि पानी इत्यादि की पाइप लाइन नीचे से गुजर रही है। खुदाई के दौरान कई जगह तो कंपनियों द्वारा पानी की पाइप लाइन तोड़ दी गई है, गनीमत यह रही कि अब तक कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ है। सुन्हेरा रोड पर टम-टम और पैदल सहित मोटरसाइकिल व अन्य वाहन निकलते हैं। इन गड्ढों में गिरने से बड़ी घटना हो सकती है।

इनका कहना है..

■ मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है, आपने बताया है तो गड्ढों को दिखावा लेता हूं और कंपनी ने नगर पालिका से कोई परमिशन नहीं ली है। इसलिये मंगलवार को नोटिस निकालता हूं।

—प्रीतम मांडी सीएमओ, नगर पालिका सबलगढ़

■ नगरपालिका को कई बार बताने के बाद भी इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कोई बड़ा हादसा होने का इंतजार कर रहे हैं। सुन्हेरा रोड पर टम-टम और पैदल सहित मोटरसाइकिल व अन्य वाहन निकलते हैं। इन गड्ढों में गिरने से बड़ी घटना हो सकती है।

—राकेश सिंह जादौन, पूर्व पार्षद

अधिकारियों की लापरवाही को उजागर करता है।

टीएल बैठक आज

मुरैना। कलेक्टर अंकित अस्थाना की अध्यक्षता में टीएल बैठक 15 अप्रैल, 2025 को दोपहर बाद 3 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में आयोजित की गई है। बैठक में समस्त अधिकारी समय पर उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

जिला चिकित्सालय मुरैना में पित्त की थैली का दूरबीन से हुआ सफल आपरेशन

मुरैना। जिला चिकित्सालय मुरैना में अम्बाह निवासी 28 वर्षीय सपना पत्नी मनोज का सर्जरी विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप मिश्रा एवं टीम द्वारा दूरबीन से पहला पित्त की थैली का ऑपरेशन किया गया। जिसमें डॉ. बृजमोहन शर्मा एवं नर्सिंग ऑफिसर आरती, संगीता, मनोज कुमारी दोहरे आदि उपस्थित थे। जिला चिकित्सालय में आयोजित वृहद स्वास्थ्य शिविर में दूरबीन द्वारा पहली बार दूरबीन पद्धति द्वारा ऑपरेशन किये। अगर यह ऑपरेशन प्राइवेट हॉस्पिटल में होता तो हजारों रुपए तक का खर्चा होता। यह ऑपरेशन जिला चिकित्सालय मुरैना में निःशुल्क किया गया।

बानमौर नगरीय निकाय ने शासन प्रशासन को दिखाया ठेंगा 5 वर्ष में 600 मीटर सड़क नहीं, हुआ भुगतान

सत्ता सुधार ■ मुरैना

जिले की बानमौर नगरीय निकाय के मुख्य कार्यपालिका अधिकारी की लापरवाही एवं मनमानी के कारण 600 मीटर की सड़क 5 वर्ष में भी निर्मित नहीं हो पाई है, जिससे मुक्तिधाम का रास्ता आम जनता के लिए परेशानी का शोब बना हुआ है। तमाम शिकायत एवं कलेक्टर के पत्र के बाद कई बैठके आयोजित होने के पश्चात भी मुख्य कार्यपालिका अधिकारी द्वारा ना तो टेंडर निरस्त किया गया है और ना ही नए टेंडर जारी किए गए हैं, उल्टा ठेकेदार को भुगतान भी कर दिया गया है। इस पूरे मामले की शिकायत रामऔतार द्वारा की गई थी तथा पार्षद द्वारा भी मामले को जनता के साथ कई बार उठाया गया।

मिली जानकारी के अनुसार नगर परिषद बानमौर जिला मुरैना की पीआईसी के संकल्प क्र. 54, 28 सितंबर 2020 के क्रम में देव काटिकेशन ग्वालियर को कायादेश श्रीराम स्टोन इन्टरप्राइजेज के पीछे से मुक्तिधाम तक 600 मीटर डबल्यूबीएम रोड का दिया गया, जिसके क्रम में मात्र गिट्टी विखंडर मोटा भुगतान प्राप्त कर ठेकेदार



अधूरा कार्य छोड़कर भाग निकला है। ठेकेदार द्वारा सड़क का 150 मीटर लगभग भाग दूसरे की निजी भूमि में निर्माण किया था, जो एक सहभूमि स्वामी द्वारा तोड़ दिया गया। सीएमओ द्वारा दो बार राजस्व विभाग से शासकीय रास्ता सर्वे क्र. 329 का सीमांकन कराया गया, जिसके अनुसार दिये ले-आउट पर कार्य नहीं किया गया है।

क्षेत्र के जागरूक लोगों द्वारा कलेक्टर मुरैना को जनसुवाई में 5 सितंबर 2023, 13 फरवरी 2024 एवं अन्य आवेदन प्रधान मंत्री, मुख्यमंत्री तक भेजे, जिसके क्रम में सीएमओ द्वारा अपने पत्र क्र. 1147, 09 अगस्त 2024 को सीएम हेल्पलाइन के

क्रम में कलेक्टर को भेजे उक्त पत्र में आश्वत किया कि परिषद की बैठक में ठेका निरस्त कर नये टेण्डर द्वारा कार्य करा दिया जायेगा। स्थानीय निवासी शिकायतकर्ता रामऔतार ने सीएम हेल्पलाइन पर बताया कि पार्षद बीरेंद्र सिंह यादव उर्फ भोलू द्वारा भी जनता के साथ कई बार मांग करने पर सीएमओ ने अपने पत्र के क्रम में परिषद की कई बैठकें होने के बाद भी ठेका निरस्त न कर नये टेण्डर न निकालकर सीएम, कलेक्टर के आदेश की भी ठेंगा दिखाया है। आगामी समय में मानसून आरंभ हो जाएगा, तब नगर की जनता को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

नवनीत धार्मिक संस्कार शिविर के प्रभारी नियुक्त, मई जून में लगेंगे शिविर

मुरैना। ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविरों के लिए जैन विद्वत नवनीत शास्त्री को प्रभारी नियुक्त किया गया है। विगत वर्षों



शिविर प्रभारियों के साथ पहुंचे। पूजा मुनि सुधासागर महाराज ने बताया कि बच्चों के अंदर संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए अनिवार्य रूप से सभी जैन मंदिरों में अनिवार्य रूप से शिविर लाना चाहिए, मां जिनवाणी का प्रचार प्रसार होना चाहिए। यह शिविर जीवन के चहुँमुखी विकास के लिए धार्मिक संस्कारों पर आधारित होते हैं। सांगानेर संस्थान द्वारा संपूर्ण चम्बल संभाग का प्रभारी विद्वत नवनीत जैन शास्त्री को बनाया गया। शास्त्री नवनीत जैन चम्बल संभाग में अनेक वर्षों से वृहद स्तर पर शिविरों को लगाकर धर्म प्रभावना करते आ रहे हैं।

सत्ता सुधार ■ गुना

भारतीय संविधान के शिल्पकार, सामाजिक न्याय के प्रबल पक्षधर और महान विचारक डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में आज आकाशवाणी गुना केन्द्र में अधिकारियों एवं उपस्थितजनों द्वारा डॉ. अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. अंबेडकर के विचारों पर आधारित वक्तव्य से हुई। वक्ताओं ने उनके जीवन, संघर्ष और सामाजिक समरसता के लिए किए गए अभूतपूर्व कार्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर सहायक निदेशक सुनील जैन ने कहा, डॉ.



अंबेडकर ने समानता, शिक्षा और अधिकारों की जो मशाल जलाई थी, वह आज भी हमारे मार्गदर्शन का स्रोत है। हमें उनके विचारों को अपने कार्य और व्यवहार में उतारने की जरूरत है। प्रसारण निष्पादक श्री राघवेंद्र सिंह नेगी ने अपने वक्तव्य में डॉ. अंबेडकर के द्वारा भारत के संविधान में किए गए योगदान पर प्रकाश डाला तथा उनके विचारों से भी उपस्थितजनों को अवगत कराया। इस अवसर पर अभियांत्रिकी सहायक के. पी.मीना, अर्चना रघुवंशी, राजकुमार प्रजापति, राजेंद्र गोस्वामी, हरिशंकर शिवहरे, रामगोपाल चिहदार, अनिल कुशवाह उपस्थित रहे।

ब्रीफ न्यूज

नये कलेक्टर होंगे सिद्धार्थ जैन

हरदा । नये कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने बताया कि कार्यभार ग्रहण कर किसानों की समस्याओं का समाधान नहर से पानी और ब्लास्ट प्रभावितों को मदद देने के मुद्दों को प्राथमिकता देंगे।

जिला कलेक्टर श्री सिंह का कार्यकाल अविस्मरणीय रहा

हरदा । जिला कलेक्टर आदित्य सिंह का कार्यकाल अविस्मरणीय रहा 14 माह 4 दिन के कार्यकाल में नर्मदा के नाभिकुणह को तीर्थ स्थल के रूप में शामिल करने की पहल

करने के साथ-साथ कुपोषण कम करने, ब्लास्ट प्रभावितों को मुआवजा देने, सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण में जिले को नंबर वन लाने, रेवा शक्ति अभियान चलाकर लिंगानुपात को बराबर करने, कुपोषण कम करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास करके उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है जो अनुकरणीय और उल्लेखनीय है।

मोरगढी में डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई



हरदा/मोरगढी। डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती भारत के लिए गौरव का दिन है। हर साल 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई जाती है। डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के कारण 14 अप्रैल का दिन हर भारतीय के लिए गौरव का दिन बन गया है। 14 अप्रैल को पूरा भारत डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती मना रहा है। डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर पूर्व जनपद सदस्य हजारीलाल धुवें ने बताया कि डॉ. भीमराव अंबेडकर को ठीक-ठीक जानना भी जरूरी है। डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर पूरे गर्व के साथ कहा जा सकता है कि डॉ. भीमराव अंबेडकर एक महानतम नेता तथा सच्चे राष्ट्रभक्त थे।

डॉ. अंबेडकर से जुड़े हुए हैं तीन बड़े प्रेरक प्रसंग : भारत रत्न डा. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर पूरा विश्व उन्हें नमन कर रहा है। डा. अंबेडकर ने अपने जीवनकाल में न केवल दलित, बल्कि समाज के अन्य शोषित वर्गों के उत्थान के लिए भी कार्य किया है। यह है ही उन्हें महान बनाते हैं। यह आजादी के पहला की घटना है। वर्ष- 1943 में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर को वाइसराय कार्डिसल में शामिल किया गया और उन्हें श्रम मंत्री बना दिया गया। इसके साथ ही लोक निर्माण विभाग भी उन्हीं के पास था। इस विभाग का बजट उस समय भी करोड़ों में था और ठेकेदारों में इसका ठेका लेने की हड़ल लगी रहती थीं। इसी लालच में दिल्ली के एक बड़े ठेकेदार ने अपने पुत्र को बाबासाहेब के पुत्र यशवंत राव के पास भेजा और बाबासाहेब के माध्यम से ठेका दिलवाकर पर अपना पॉर्टर बनाने और 25 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक का कमीशन देने का प्रस्ताव दिया। यशवंत राव उसके झांसे में आ गए और अपने पिता को यह सन्देश देने पहुंच गए। जैसे ही बाबासाहेब ने ये बात सुनी वे आग-बबूला हो गए।

बिरसा मुंडा मेडिकल कॉलेज में मनाई जयंती

सत्ता सुधार ■ शहडोल

बिरसा मुंडा मेडिकल कॉलेज में अधिष्ठाता डॉ. जीबी रामटेके के मार्गदर्शन और अस्पताल अधीक्षक डॉ. नागेंद्र सिंह के नेतृत्व में भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। शहडोल जिले के बिरसा मुंडा मेडिकल कॉलेज में अधिष्ठाता डॉ. जीबी रामटेके के मार्गदर्शन और अस्पताल अधीक्षक डॉ. नागेंद्र सिंह के नेतृत्व में भारत रत्न डॉ. भीमराव आंबेडकर की 134वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों और स्टॉफ ने शामिल होकर बाबा साहब के आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई।

अतिथियों के स्वागत के बाद अधिष्ठाता डॉ. रामटेके ने उपस्थित छात्रों से अपील की कि वे बाबा

साहब के पद चिन्हों पर चलें। उन्होंने कहा, डॉ. आंबेडकर ने समाज में शिक्षा के महत्व को बहुत अच्छे से समझाया है। हमें उनके आदर्शों को अपनाकर एक ऐसा भारत बनाना है, जो रूढ़ीवादी परंपराओं से मुक्त हो। इस अवसर पर अस्पताल अधीक्षक डॉ. नागेंद्र सिंह ने अपने व्याख्यान में डॉ. आंबेडकर के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा, बाबा साहब का योगदान केवल एक विशेष जाति या धर्म के लिए नहीं है। उनके द्वारा बनाए गए संविधान ने सभी धर्मों, जातियों और समाजों के लोगों को समानता, स्वतंत्रता और समरसता का अधिकार दिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए अस्पताल प्रबंधक डॉ. साबिर खान ने भी महत्वपूर्ण विचार साझा किए। उन्होंने कहा, बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि तभी मिलेगी, जब हम अपने समाज से छुआछूत और आर्थिक असमानता को समाप्त करेंगे।



डॉ. राजेश टेंडुनिकर ने इस कार्यक्रम में डॉ. आंबेडकर की व्यक्तित्व और उनके योगदान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा, आज के समाज में बाबा साहब का दृष्टिकोण और मूल्य अधिक प्रासंगिक हैं। हमें उनकी शिक्षाओं को अपनाने की

आवश्यकता है, ताकि हम एक समान और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकें। छात्रों ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किए। कई छात्रों ने कविता और भाषण के माध्यम से बाबा साहब की शिक्षाओं का उल्लेख किया और समाज में उनके सिद्धांतों को

वेयरहाउस स्टॉक में मिट्टी वाली नकली मूंग का भंडाफोड़



स्टॉक की जांच से खुलेगी नकली मूंग की पोल

सत्ता सुधार ■ हरदा

हरदा और नर्मदापुरम जिले में लाखों टन नकली मिट्टी वाली मूंग वेयरहाउस में होने का मामला प्रकाश में आया है। इसका भंडाफोड़ करते हुए डी.एस. चौहान ने कमिश्नर से उच्च स्तरीय जांच पड़ताल की कार्यवाही करने का कार्य की है।

वेयरहाउस में रखी मूंग की बोरियों के सेंपल की जांच पड़ताल की जाये तो दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा। गुपचुप तरीके से उच्चाधिकारियों की आंख धूल झाँककर ऐसा



गोलमाल किया गया है। जिससे शासन को करोड़ों की क्षति हुई है।

स्टॉक के सैम्पल से खुलेगी पोल

स्टॉक में रखे मूंग की बोरियों के सेंपल लिया जाये तो सब कुछ आइने की तरह स्पष्ट हो जायेगा। तहसीलदार ने एक बगैर दस्तावेज के मूंग का टुक पकड़ा तो वेयरहाउस की जांच शुरू कर दी। स्टॉक की जांच करवाई जाये तो खरीदी में जो नौटंकी हुई है। इसका भंडाफोड़ हो जायेगा और इसमें जो-जो शामिल है उनका नाम भी जग जाहिर हो जायेगा बहुत बड़े स्तर का भ्रष्टाचार सामने आयेगा जो सबको चौंका देगा।

मिट्टी वाली नकली मूंग चर्चा में

पूर्व में सिवनी मालवा में मिट्टी वाली नकली मूंग चर्चा में थी। जिसको गंभीरता से

लेकर जांच पड़ताल में कहीं ना कहीं कोताही बरती गई जिसके कारण वेयरहाउस में बड़े पैमाने पर मिट्टी वाली मूंग का स्टॉक है। जिसके खुलासे के बाद जांच पड़ताल में उदासीनता बरती जा रही है।

राजनीतिक दलालों का हाथ

वेयरहाउस संचालकों ने राजनीतिक दलालों के साथ एम.पी.एगो कॉर्रोप्शन की मिली भगत से लाखों किलो टन मूंग की खरीदी हरदा और नर्मदापुरम जिले में की गई है। इसका खुलासा होने पर हरदा जिले की मूंग की बोरी को भी बदला जा रहा है ताकि सच्चाई सामने न आ सके।

2024 की मूंग का स्टॉक

जिले के वेयरहाउस में 2024 की मूंग का स्टॉक वेयरहाउस में है। जो संबंधित

राजस्व या फिर दूसरे विभाग से करवाई जाय जांच - खोरे

राष्ट्रीय किसान-मजदूर महासंघ के पूर्व जिलाध्यक्ष रामनिवास खोरे ने मांग की है कि वेयरहाउस स्टॉक में मिट्टी युक्त मूंग की जांच सहकारिता, एम.पी. एगो कॉर्रोप्शन और कृषि विभाग के अधिकारियों से जांच न करावा कर दूसरे विभाग या फिर राजस्व विभाग के अधिकारियों से स्टॉक की जांच वीडियोग्राफी के माध्यम से करवाई जाय ताकि सब कुछ सामने आ सके।

अधिकारियों की देन है। समर्थन मूल्य पर खरीदी में घोर अनियमितता जग जाहिर है। तौल में गड़बड़ी के साथ-साथ खरीदी में तमाम अनियमितताएं की गई हैं। किसानों के साथ धोखाधड़ी की गई है। व्यापारियों को लाभ पहुंचाया गया है। व्यापारी किसान बनकर खरीदी में भाग लेकर समर्थन मूल्य का फायदा लेते हैं। इधर-उधर से खराब मूंग को अच्छे रेट पर बेचकर व्यापारी दिन दूना रात चौगुना प्रगति कर रहे हैं और किसान आर्थिक तंगी के कारण आत्महत्या करने को मजबूर है और समूचा प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है। जानकारी के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है।



दोपहर में जिले की सड़कें हुई वीरान, शाम को बड़ी चहल-पहल

गर्मी से बचने हेतु गमछे और शीतलपेय की बड़ी मांग

सत्ता सुधार ■ हरदा

शहर में इन दिनों मौसम में उतार-चढ़ाव बना हुआ है। सुबह सामान्य मौसम रहने के बाद दोपहर को तेज धूप से चुपन महसूस होने लगी है।

वहीं गर्मी बढ़ने की वजह से कूलर की मांग बढ़ गई है। लोग धूप से बचने हेतु स्कार्फ का सहारा लेकर चल रहे हैं। मार्च महीना बीत चुका है और अप्रैल माह की शुरुआत हो गई है। वहीं इस वर्ष फरवरी माह से ही जल स्तर गिरने के चलते गर्मी बढ़ती जा रही थी। जिसकी वजह से मार्च में ही धूप चुपने लगी है। तेज धूप की वजह से दोपहर के वक्त हरदा, टिभरनी, खिड़किया, सिराली सहित जिले की सड़कें भी वीरान होनी शुरू हो गई है। लोग धूप से बचने देर शाम के बाद खरीददारी के लिए निकल रहे हैं।

शीतल पेय का सहारा : शहर में बढ़ती गर्मी के बीच जगह-जगह गन्ना रस, नींबू पानी और लस्सी की दुकानें भी लगना शुरू हो गई है। वहीं नागरिक धूप से बचने के लिए ठंडे पेय पदार्थों का सेवन भी कर रहे हैं। खासकर नींबू पानी और गन्ने रस की दुकानों पर भीड़-पनजर आ रही है, जो इस गर्मी में लोगों को राहत दे रही है।

खस की मांग बढ़ी : जिले में



बढ़ती गर्मी के बीच घरों में कूलर चलना शुरू हो गये है। वहीं जगह-जगह चोकर-चोरवाहों पर कूलर के खस बदलाने भी लोग पहुंच रहे हैं। कूलर की ठंडकता बनाए रखने के लिए बाजार में भी अलग-अलग खस की डिमांड बढ़ती जा रही है। जिसमें प्राकृतिक घास का वृद्धल, खस और हलिकांम्बल कूलिंग पेड बाजार में उपलब्ध है।

बाजार में स्कार्फ की मांग: इन दिनों दोपहर की तेज धूप से बचने के लिए महिलाएं चेहरे को स्कार्फ से ढंककर निकल रहे हैं। वहीं बाजार में धूप से बचने के लिए गमछे और स्कार्फ की मांग भी बढ़ने लगी है। शहर के कई जगहों पर स्कार्फ, गमछे और धूप के चशमों की दुकानें सजी हुई हैं।

तरल पदार्थ के सेवन की सलाह : गर्मी और लू से बचने के लिए विभिन्न चिकित्सकों द्वारा भी लोगों को अधिक से अधिक अपने शरीर को कपड़ों से ढंककर चलने, तरल पदार्थ का सेवन करने के साथ ही अधिक पानी पीने की सलाह दे रहे हैं।

थाना सोहागपुर पुलिस द्वारा किया गया 24 घण्टे के अंदर लूट का खुलासा, 1 लाख 50 हजार का मसरूका सहित 3 आरोपी गिरफ्तार

शहडोल । पुलिस अधीक्षक शहडोल द्वारा जिले में लंबित चोरी के प्रकरणों के संबंध में लगातार समीक्षा कर चोरी लूट के बरामदगी के सार्थक प्रयास हेतु थाना प्रभारियों एवं राजपत्रित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है। घटना के क्रम में फरियादी अभिषेक कुमार लखेरा निवासी पुरानी मार्केट मोरवा जिला सिंगरौली का दिनांक 10. 04.2025 को रिपोर्ट लिखाई कि दिनांक 09.04.2025 के रात 09.30 बजे पाली रोड से रेल्वे स्टेशन जाने के लिए एक मौ.सा. वाले से लिफ्ट मांगी। जिस पर उन्होंने मौ.सा. में बैठकर कच्ची सड़क से सूनसान रास्ते में ले गए और रात्रि करीबन 11.00 बजे मेरे 02 नग टच स्क्रीन मोबाइल व स्वाइप मशीन को लूट लिए और मुझे वही छोड़कर भाग गए जिसकी रिपोर्ट पर थाना सोहागपुर में तीन अज्ञात व्यक्तियों के विरुद्ध लूट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना के दौरान आरोपियों की पता तलाश में संदेही गौरव केवट, रोहित ढीमर व सत्यम सिंह सेंगर तीनों निवासी ब्यूरीही जिला शहडोल को दस्तयाव किया गया जो उक्त संदेहियों की पहचान फरियादी द्वारा आरोपियों के रूप में की गई आरोपियों से पूछताछ कर प्रकरण सदर में लूटा गया माल 02 नग टच स्क्रीन मोबाइल फोन व स्वाइप मशीन एवं घटना में प्रयुक्त मौ.सा. कुल कीमती करीब 1,50,000 रुपये जप्त किया गया। आरोपियों को माननीय न्यायालय के आदेश पर न्यायिक अभिरक्षा में जिला जेल शहडोल में निरुद्ध किया गया।



साहब ने नौकर से दर्ज करवाई एफआईआर

सत्ता सुधार ■ शहडोल

शहडोल में डीएसपी योगेंद्र सिंह के सरकारी आवास में चोरी की वारदात हुई है। रीवा गए डीएसपी के घर से चोर लैपटॉप और घड़ी चुरा ले गए। लौटने पर टूटी खिड़की और सामान गायब मिला। नौकर की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। शहडोल जिले में लगातार चोरी की घटनाएं हो रही हैं। पुलिस अधिकारी के घर हुई चोरी ने कोतवाली पुलिस पर अब सर्वाध्याय निशान खड़े कर दिए हैं। उप पुलिस अधीक्षक योगेंद्र सिंह रीवा गए हुए थे, तभी उनके सरकारी आवास में चोरी की घटना को चोरों ने अंजाम दिया है। घटना की शिकायत उनके नौकर ने कोतवाली में दर्ज करवाई है। इसमें लैपटॉप और



एक घड़ी अलमारी से चोरों ने पार कर दिया है। जब उप पुलिस अधीक्षक रीवा से अपने सरकारी आवास वापस लौटे तो देखा तो उनके घर चोरी की वारदात हो गई थी। कोतवाली पुलिस ने बताया कि योगेंद्र सिंह विशेष शाखा शहडोल में उप पुलिस अधीक्षक के पद पर पदस्थ हैं। दर्ज रिपोर्ट के अनुसार योगेंद्र सिंह रीवा गए हुए थे, जब वापस लौटे तो उनके घर में रखी अलमारी से लैपटॉप एवं एक घड़ी गायब थी। काफी तलाश करने के बाद भी लैपटॉप एवं घड़ी उन्हें नहीं मिली। सरकारी आवास की

खिड़की टूटी हुई दिखाई दी, जिससे उन्हें इसका एहसास हो गया कि उनके घर में चोरी की वारदात को चोरों ने अंजाम दिया है। यह चोरी की घटना कोतवाली थाना क्षेत्र के जेल बिल्डिंग के पीछे सरकारी आवास से हुई है। पुलिस अधिकारी के यहां काम करने वाले कहैया लाल सोंधिया ने कोतवाली थाने में चोरी की घटना पर शिकायत दर्ज करवाई है। जिस पर कोतवाली पुलिस ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध चोरी का मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार खिड़की तोड़कर चोर अंदर घुसे होंगे और इस चोरी की वारदात को चोरों ने अंजाम दिया है, जब डीएसपी वापस लौटे और उन्हें लैपटॉप और घड़ी की आवश्यकता पड़ी तो वह गायब मिले, जिससे यह चोरी की बात सामने आई और इस मामले पर रिपोर्ट दर्ज करवाई गई।

बाबा साहेब के संविधान ने बढ़ाया भारत का मान

भाजपा ने बूथ स्तर पर मनाई बाबा साहेब की जयंती

खरगोन। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की महिमा निरंतर बढ़ती जा रही है। उनके बनाए संविधान पर आज देश सफलतापूर्वक चलकर विकास की ओर तेजी से अग्रसर है। यह बात कांग्रेस को हजम नहीं हो रही है। इसलिए वह भाजपा पर संविधान बदलने का मनगढ़ंत आरोप लगाती रहती है। हर बार कांग्रेस का दांव उल्टा पड़ जाता है क्योंकि संविधान की शपथ लेकर चलने वाले संविधान कैसे बदल सकते हैं। यह हमारे लिए रामायण, गीता से कम नहीं है। यह बाद विधायक बालकृष्ण पाटीदार ने संविधान निर्माता व भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह में कहा। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी प्रकाश भावसार ने

बताया 14 अप्रैल को जिलेभर में बूथ स्तर पर बाबा साहेब की जयंती मनाई गई। प्रातः नौ बजे खरगोन भाजपा पूर्वी व पश्चिम नगर मंडल के तलावधान में कार्यक्रमों व पदाधिकारियों द्वारा जिला कार्यालय से रहीमपुरा स्थित बाबा साहेब के प्रतिमा स्थल तक वाहन रैली निकालकर माल्यापर्ण किया गया। तत्पश्चात सब्जी मंडी पाया बाबा साहेब की प्रतिमा व चित्र पर माल्यापर्ण किया गया। यहां हुए समारोह में जिलाध्यक्ष नंदा ब्राह्मणे ने कहा बाबा साहेब ने शिक्षित बनने, संगठित रहने व मेहनत करने का संदेश दिया था। इस दौरान बड़ी संख्या में कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित थे।

गरमाया मामला

महिलाओं और एसडीएम के बीच हुआ विवाद, 8 से अधिक लोगों पर मामला दर्ज, नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता भी नामजद

महिलाएं मांग रही थीं जीवनदायिनी बूंदें, प्रशासन ने दर्ज कराई एफआईआर

सत्ता सुधार ■ खंडवा

भीषण गर्मी और जल संकट से जूझ रहे खंडवा शहर में पानी की मांग को लेकर उठी जनता की आवाज अब प्रशासनिक कार्रवाई की चपेट में आ गई है। रविवार को बाहेती कॉलोनी की महिलाओं और स्थानीय रहवासियों ने पीने के पानी की मांग करते हुए मुख्य सड़क पर चक्का जाम करने का प्रयास किया था। यह विरोध प्रदर्शन एक भावुक गुहार था - जीवनदायिनी पानी के लिए। लेकिन इस आंदोलन का जवाब एफआईआर के रूप में मिला।

प्रदर्शन की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे खंडवा एसडीएम बजरंग सिंह बहादुर ने पहले समझाझझ देने की कोशिश की, लेकिन स्थिति तनावपूर्ण हो गई। स्थानीय महिलाओं के साथ एसडीएम की तीखी बहस हुई, जिसमें एफआईआर की धमकी दी गई। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो सोशल



मीडिया पर वायरल हो गया, जिसने लोगों में नाराजगी और चिंता की लहर पैदा कर दी। **नेता बोले - जनता की आवाज को दबाया जा रहा है:** नेता प्रतिपक्ष मल्लू राठौर ने प्रशासन की कार्रवाई को अन्यायपूर्ण बताते हुए कहा, मैं और कांग्रेस कार्यकर्ता मौके पर सिर्फ इसलिए पहुंचे थे ताकि प्रशासन और जनता के बीच की दूरी मिटा सकें। अगर पानी मांगना अपराध है, तो फिर लोकतंत्र का क्या अर्थ रह गया?

जल संकट की गंभीर स्थिति: खंडवा



शहर इन दिनों पानी के भीषण संकट से गुजर रहा है। विश्वा कंपनी द्वारा की जा रही पेयजल आपूर्ति व्यवस्था पूरी तरह चमत्भूर हुई है। आए दिन पाइपलाइन फटने की घटनाएं हो रही हैं, जिससे कई कॉलोनियों में कई दिनों तक पानी नहीं पहुंच पाता। बाहेती कॉलोनी समेत अन्य क्षेत्रों के लोग मजबूरन टैंकों और हैंडपंपों पर निर्भर हैं, वह भी कई बार खाली हाथ लौटते हैं।

जनता में आक्रोश और भय का माहौल: F.I.R की खबर के बाद रहवासियों

में आक्रोश और भय दोनों देखा गया। लोगों का कहना है कि जब सरकार बुनियादी सुविधाएं नहीं दे पा रही, तब जनता की आवाज को इस तरह दबाना लोकतंत्र के खिलाफ है।

क्या पानी मांगना अपराध है? : खंडवा की यह घटना केवल एक विरोध प्रदर्शन नहीं, बल्कि उस प्यासे शहर की गूंज है, जहां नागरिक पानी के लिए सड़कों पर उतरने को मजबूर हैं। अब सवाल यह है - क्या पीने के पानी की मांग करना लोकतंत्र में अपराध बन गया है?

बाबा साहब ने न्याय की स्थापना के लिए जीवन समर्पित किया: पूर्व विधायक पाठक

■ डॉ. अम्बेडकर की जयंती पर संगोष्ठी एवं सम्मान हुआ, संविधान की रक्षा का लिया संकल्प

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारतीय इतिहास के एक ऐसे पुरुष थे, जिन्होंने समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति को आवाज दी, अधिकार दिलाया और आत्मसम्मान सिखाया। वे केवल एक व्यक्ति नहीं, एक विचारधारा हैं, सामाजिक न्याय, समानता और लोकतंत्र की। उनका जीवन हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है जो अन्याय के खिलाफ खड़ा होना चाहता है। उनके सिद्धांतों का अनुकरण करके ही एक सशक्त, समान और समावेशी भारत का निर्माण संभव है। यह बात पूर्व विधायक एवं कांग्रेस के प्रदेश महासचिव प्रवीण पाठक ने संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंती पर सामुदायिक



भवन, जवाहर कॉलोनी में आयोजित संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र शर्मा ने की। इसके अलावा संगठन मंत्री इब्राहिम खां पठान, जिला उपाध्यक्ष भैयालाल भटनागर, मेहबूब खां चैनवाले, एमआईसी मंत्री प्रेमलता धर्मेन्द्र जैन, पार्षद अनीता मुकेश धाकड़, समाजसेवी राजेश ऐन, ब्लॉक अध्यक्ष अब्दुल हमीद खां, कार्यक्रम संयोजक डॉ. जितेंद्र सिंह

राजावत मंचासीन रहे। श्री पाठक ने कहा कि बाबा साहब ने देश में सामाजिक न्याय की बात बुलंद की और अपना पूरा जीवन देश में न्याय की स्थापना के लिए समर्पित किया। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक बदलाव का सबसे बड़ा हथियार माना। डॉ. जितेंद्र सिंह राजावत ने कहा कि बाबा साहब ने हमें एक ऐसा संविधान दिया, जो सामाजिक समता, न्याय और स्वतंत्रता का प्रतीक है। आज का युवा यदि उनके विचारों को आत्मसात करता है, तो वह



निश्चित ही एक सशक्त राष्ट्र निर्माण में सार्थक योगदान दे सकता है। इस मौके पर मुख्य अतिथि के साथ कार्यक्रम संयोजक डॉ. जितेंद्र सिंह राजावत ने विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वालों को सम्मान दिया। वहीं संविधान की आजीवन रक्षा करने का संकल्प भी लिया। संचालन विजय शर्मा ने एवं आधार संजय फडतरे ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में देशराज भार्गव, आरतनएस भदौरिया, प्रताप राव महाडिक, शिखा शर्मा, दीपांशु दुबे, जेपी

चिंड़ारिया, भारत वारसी, शेखर टेलर, उपेन्द्र शंकरण, रहीश खान पटेल, रमेश खरे, शिवप्रताप सिंह (सोनु), ओमप्रकाश सिकरवार, मेहराजू कुरैशी, सतीश शर्मा, कासिम कुरैशी, डॉ. तसलीम खान, अबरार कुरैशी, शिल्पा डोंगरा, वसीर कुरैशी, वासुदेव शर्मा, राकेश शर्मा, जीवाजी राव मांडोले, रामवीर सिंह, कपिल पाल, सब्बर खान, शिवचरण शंकरण, ओमप्रकाश माहौर, जगदीश पवैया आदि उपस्थित थे।

अजाक्स ने बाबा साहब के बताए मार्ग पर चलने का लिया संकल्प



सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

म.प्र. अनुसूचित जाति - जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ (अजाक्स) के प्रांताध्यक्ष चौ. मुकेश मौर्य की अध्यक्षता में अजाक्स कार्यालय थाटीपुर पर धूमधाम से मनाई गई। राष्ट्र निर्माता, भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर अति विशिष्ट अतिथि के रूप में कटनी से आए रामकिशोर दाहिया, स्टेट समीक्षक एवं प्रदेश अध्यक्ष पेंशनर्स एसोसिएशन अजाक्स ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने संघर्ष के दौर में अनेकों प्रकार की परेशानियों और उनके समक्ष उत्पन्न की गई समस्याओं को नजर अंदाज कर सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रहित में राष्ट्र को समर्पित कर दिया। उसी प्रकार

हम सभी का ध्येय भी राष्ट्र हित ही सर्वोपरि होना चाहिए तभी बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मनीष राजौरिया वरिष्ठ समाजसेवी ने बाबा साहब के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. राजेश कटारे समरसता प्रमुख ने अजाक्स की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बाबा साहब के जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेकर उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प दिलाया। अजाक्स के प्रांताध्यक्ष चौ. मुकेश मौर्य ने कहा कि अजाक्स हमेशा से सामाजिक सद्भावना और समरसता का पक्षधर रहा है हम अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के सम्मान और हित-संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध हैं और हमेशा रहेंगे।

इस अवसर पर रामेश्वर पटेल प्रदेश उपाध्यक्ष अजाक्स, मुरारीलाल लिथोरिया, किशोर चौहान प्रांतीय महासचिव दिनेश उमरैया प्रांतीय सचिव, कमलेश जाटव प्रांतीय कोषाध्यक्ष, शांति प्रकाश राजौरिया पूर्व जिलाध्यक्ष अजाक्स, मनोहर कटारिया जिलाध्यक्ष अजाक्स, गजेन्द्र राजौरिया, नैत्रपाल सिंह, राजवीर सिंह राजे, जसवंत कौशिक, धर्मेन्द्र सिंह, वृन्दावन, राजकुमार आर्य, इंजी. जे. पी. पारा, बी. डी. कुबेर, दीपक खरे, विजय सिंघानिया, मनीष कन्नौजिया, महीप सिंह, इंजी. बृजविहारी चांसोलिया, इंजी. यशवंत मैकले, डॉ. गवेन्द्र नौक्रे, भागवती प्रसाद, सुशील आर्य, रामसेवक कटारे आदि उपस्थित थे।

संविधान निर्माता की जयंती पर किया माल्यार्पण



सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

डॉ. भीमराव अंबेडकर स्मारक हरावली मुरार पर संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती पर माल्यार्पण कर नमन किया। इस मौके पर म.प्र. स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के संभागीय अध्यक्ष महादेव सिंह गोयल, म. प्र. संविदा आउटसोर्स स्वास्थ्य कर्मचारी संघ प्रदेश अध्यक्ष कोमल सिंह, पूर्व सरपंच हाकिम सिंह, सुनील पवैया, रामेश्वर केन, मनोज पांडे, राम सुमन, मनीष रिजौरिया, समिति अध्यक्ष महाराज सिंह कौशल सहित अन्य लोग मौजूद थे।

चक्षुदर्शी के लिए सप्त ऋषि सम्मान

ज्वालियर। यूट्यूब पोर्टल चक्षुदर्शी के प्रधान संपादक राकेश अचल को गत दिवस इंदौर में आयोजन मप्र स्टेट प्रेस क्लब के सम्मेलन में राज्य स्तरीय सप्त ऋषि सम्मान से अलंकृत किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रेस क्लब अध्यक्ष आईडिया के अध्यक्ष गौतम लहरी, महाराष्ट्र जनसंपर्क के संचालक गणेश मुले, किशन गंगराडे और स्टेट प्रेस क्लब के अध्यक्ष प्रवीण खारीवाल विशेष रूप से उपस्थित थे।

भाजपा युवा कार्यकर्ताओं ने शरवत वितरण कर मनाई अंबेडकर जयंती

ज्वालियर। डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर भारतीय जनता पार्टी के युवा कार्यकर्ताओं द्वारा जनसेवा का परिचय देते हुए शरवत वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जनमानस में सेवा, समरसता और डॉ. अंबेडकर के विचारों का प्रचार-प्रसार करना रहा। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया, जिला मंत्री अमित जादौन, डॉ. भीमराव अम्बेडकर मण्डल अध्यक्ष प्रवीण भारद्वाज, वार्ड 24 के पार्षद नागेंद्र राणा, जिला संयोजक सोशल मीडिया अरविंद रघुवंशी, भाजपा जिला सह संयोजक आई.टी. अमित श्रीवास्तव, जिला कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती तुषि भटनागर, मंडल प्रभारी जसवंत कुशवाह, मंडल संयोजक अनिल सोनी, जिला महामंत्री (ग्रामीण) नमो नमो मोर्चा योगेश दंडोतिया, श्रीमती भारती श्रीवास्तव, जिला संयोजक चिकित्सा प्रकोष्ठ नमो नमो मोर्चा राजीव श्रीवास्तव, मंडल मंत्री नमो नमो मोर्चा कृष्णा थानेश्वर, सत्येंद्र सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

डॉ. मनमोहन बत्रा का मानना था संगठन का कोई भी कार्य बड़ा और छोटा नहीं होता: शैजवलकर

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

भारतीय जनता पार्टी वरिष्ठ नेता एवं पूर्व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर के आरोग्य भारती के अस्थाई जिला कार्यालय स्वास्थ्य सदन में उनका नगर भ्रमण के अवसर पर आत्मीय सम्मान किया गया। इस अवसर पर आरोग्य भारती जिला इकाई के अध्यक्ष राजेश शर्मा ने पूर्व सांसद श्री शेजवलकर सहित अन्य अतिथियों का अंगवस्त्र पहनाकर सम्मान किया। सचिव डॉ. आमोद गुप्ता ने सबका तिलक कर पारंपरिक स्वागत किया वहीं संस्था के उपाध्यक्ष डा श्रीराम सबिता ने हार पहनाकर सम्मान किया। इस अवसर पर श्री शेजवलकर ने भाजपा के वरिष्ठ नेता स्व. डॉ.



मनमोहन बत्रा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की तथा संगठन विस्तार पर चर्चा की। इस अवसर पर पूर्व सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. मनमोहन बत्रा के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ.

मनमोहन बत्रा आदर्शवादी कार्यकर्ता थे। वे पार्टी की सेवा आजीवन करते रहे। उन्होंने कहा कि संगठन द्वारा उन्हें जो भी कार्य दिया गया उस कार्य को और मेहनत और ईमानदारी से करते थे। डॉ. मनमोहन बत्रा संगठन के किसी भी कार्य को

छोटे और बड़े काम में अंतर नहीं करते थे। उन्होंने संगठन के कार्य में वृद्धावस्था को कभी आड़े नहीं आने दिया। उनका सारा जीवन पार्टी कार्य को समर्पित रहा। कार्यकर्ताओं को उनके जीवन से प्रेरणा लेना चाहिए। स्व. डॉ. बत्रा मुखर्जी भवन के आजीवन ट्रस्टी बने रहे। आरोग्य भारती के प्रांत संरक्षक डॉ. एसपी बत्रा ने आरोग्य भारती के कार्यों तथा कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला। भाजपा प्रदेश सह मीडिया प्रभारी जवाहर प्रजापति, मंडल अध्यक्ष सतपाल जादौन, पार्षद संजीव केलकर, भूषण नारले, डालचंद वर्मा, बजरंग सेंगर आदि बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

डॉ. अंबेडकर के संविधान ने भारत का सर्वांगीण विकास किया: सांसद कुशवाह

■ डॉ. अंबेडकर जयंती पर अजाक्स कार्यालय पर किया पौधारोपण

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

म.प्र. अनुसूचित जाति जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ (अजाक्स) के तत्वाधान में अजाक्स कार्यालय 27ए रैसकोर्स रोड मेला ग्राउंड के सामने डॉ. अंबेडकर जयंती पर संविधान निर्माता बाबा डॉ. बीआर अंबेडकर की प्रतिमा पर अतिथियों ने पुष्पांजलि देते हुए माल्यार्पण किया। जिसमें मुख्य अतिथि सांसद भारत सिंह कुशवाह थे, अध्यक्षता विधायक सतीश सिकरवार ने की। मुख्य वक्ता प्रदेश कार्यसमिति सदस्य आशीष प्रताप रावैड़ एवं विशिष्ट अतिथि विधायक साहब सिंह गुर्जर, जिला पंचायत अध्यक्ष दुर्गा कुंवर सिंह, चेंबर अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल, जेएच अधीक्ष डॉ. सुधीर सक्सेना, पुरुषोत्तम

कदम सिंह, डॉ. नवीन नगर, संजय अगरैया, मीडिया प्रभारी ओपी सिंह, जिला संयुक्त सचिव फूलसिंह बमरोलिया, राकेश नरवरिया, डॉ. ओपी जाटव प्राध्यापक मेडिसिन जीआरएमसी, डॉ. रवि अम्बे प्राध्यापक बाल रोग विभाग जीआरएमसी, डॉ. देवेंद्र दौनरिया सह प्राध्यापक फार्माकोलॉजी जीआरएमसी, डॉ. अवधेश दिवाकर प्राध्यापक पीएसएम विभाग, डॉ. कुसुम इंदौरिया ब्लॉक अध्यक्ष मुरार, प्रदीप पलिया ब्लॉक भितरवार, रमेश सोलंकी, झड़ा सिंह गोयल, हरनाम सिंह, रामावतार मौर्य, राहुल सारवान, ओपी केन, इंजी. ज्योति दोहरे, डॉ. अमित सिसौदिया, प्रो.पीसी जाटव, प्रो. शान्तिदेव सिसौदिया, ओपी केन, गोपाल भोसले, कामता प्रसाद मरैया, इंजी. हेमंत गुरैया, जगदीश राजौरिया, बलवीर सिंह अटल, विमलेश शाक्य आदि उपस्थित थे।

डॉ. अम्बेडकर की जयंती पर हिन्दू महासभा ने किया माल्यार्पण

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने प्रदेश महामंत्री विनोद जोशी के निर्देशन, संभागीय महामंत्री मनोज कुमार जाटव के मुख्य आतिथ्य एवं युवक हिन्दू महासभा के जिला अध्यक्ष पवन माहौर की अध्यक्षता में भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की 134 वीं जयंती पर अंबेडकर पार्क, प्रतिमा स्थली फूलबाग पहुँचकर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्य वक्ता मनोज जाटव ने कहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सपना था कि भारत में सभी नागरिकों को बराबरी का अधिकार मिले और समाज में कोई भेदभाव न हो। हमें उनके विचारों



को अपने सिद्धांतों का हिस्सा बनाकर देश को मजबूत और एकजुट रखने के प्रयास करने चाहिए। माल्यार्पण करने वालों में युवक हिन्दू महासभा के जिला अध्यक्ष पवन माहौर, हेमराज

जाटव, वीर आंबेडकर सेना के राष्ट्रीय नेता एवं रिटायर्ड सीआरपीएफ सब इंस्पेक्टर हरीशचंद्र वंशकार, अशोक मौर्य, अजय कुशवाह, महावीर जाटव, त्रिलोक माहौर शामिल थे।

फिर एक प्रयास संस्था ने लगाया निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

सत्ता सुधार ■ ज्वालियर

फिर एक प्रयास संस्था द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन गोल पहाड़िया, लेले साहब की बगिया स्थित डॉ. भीमराव आम्बेडकर पुस्तकालय पर किया गया। इस शिविर में डॉ. जे.पी जोशी, डॉ. अरवि जोशी, डॉ. सूरज दुबे एवं लाल पथोर्लाजी द्वारा अपनी सेवाएं दी गईं। शिविर में आये हुए मरीजों को संस्था द्वारा जन औषधि की दवाइयां भी वितरित की गईं। इसके अलावा संस्था द्वारा शिविर के समापन पर सभी डॉक्टर एवं मेहेश पाल व मोहित जोशी को पूर्व सांसद विवेक शेजवलकर एवं पूर्व सभापति राकेश माहौर द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर का शुभारम्भ प्रातः 8:00 बजे क्षेत्रीय पार्षद अंजलि राजू पलेया द्वारा डॉ. अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करके



किया गया। इस अवसर पर संस्था के सचिन श्रीवास्तव, महेश पाल, सुनील यादव, उत्तम कुशवाह, लक्ष्मी सत्यावली, राजेंद्र सिंह, पूजा शर्मा, मोहित जोशी, निखिल इंग्ले, उपेंद्र शर्मा, विकास कुशवाह, अनिल कुशवाह, कुलदीप त्रिवेदी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संस्था संस्थापक पं. अंकित शर्मा द्वारा किया गया।

संबंधविच्छेद सूचना

सर्व संबंधित को सूचित किया जाता है कि मैं सुनील विश्वकर्मा पुत्र बाबूलाल विश्वकर्मा निवासी देवास नाक निरंजनपुर इंदौर म.प्र. हालनिवास दीदार कॉलोनी डबरा जिला ज्वालियर म.प्र.का रहने वाला हूँ। मेरे परिवार में मेरे पत्नी सुखदेवी, पुत्र अश्व, प्रशांत एवं पुत्री शिवली है मेरा पुत्र कोमल अपराधिक किस्म का व्यक्ति हो गया है और उसका बाल चरन भी खराब हो चुका है तथा लोगों से लेन देन करता रहता है इसलिए मेरे द्वारा अपने पुत्र कोमल को अपनी चल अवत संपत्ति से बेदखल कर दिया गया है अब मेरा व मेरे सभी परिवारजन का कोमल विश्वकर्मा से कोई लेना देना व संबंध नहीं रहा है भविष्य में कोमल विश्वकर्मा किसी भी प्रकार का कोई कृत्य करता है, या किसी भी व्यक्ति के आदि से लेन देन करता है तो उसके लिये यह स्वयं जिम्मेदार होगा उसके लिये मैं व मेरे उक्त परिवारजन जिम्मेदार नहीं होंगे। कोमल विश्वकर्मा द्वारा किये जाने वाले कृत्यों को लेकर हम सभी को परेशान नहीं किया जावे इसलिये यह सूचना प्रकाशित कराई जा रही है

अतः सर्व संबंधित, पुलिस प्रशासन, निकाय बैंक संस्था को सूचित किया जा रहा है। सभी सूचित रहे। प्रशांत दिनांक

सूचनाकर्ता
सुनील विश्वकर्मा पुत्र सुनील विश्वकर्मा निवासी देवास नाक निरंजनपुर इंदौर म.प्र. हालनिवास दीदार कॉलोनी डबरा जिला ज्वालियर म.प्र.

मो. 8827176466

बीफ न्यूज

पीएसएल में विंस ने लगाया तीसरा सबसे तेज शतक, इनाम में मिला हेयर ड्रायर

कराची। पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) में शतक लगाने पर एक खिलाड़ी को इनाम में हेयर ड्रायर मिला है जिससे देखकर सभी हैरान हो गये। कराची के नेशनल स्टेडियम में कराची किंग्स और मुल्तान सुल्तान्स के बीच मैच में अपनी शानदार पारी के लिए बल्लेबाज जेम्स विंस को हेयर ड्रायर मिला है। विंस को मैच के सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी के तौर पर ये हेयर ड्रायर इनाम में मिला। इस इनाम को देखकर विंस भी हंस्ने लगे। विंस ने इस मैच में 43 गेंदों पर ही शतक लगा दिया। इस क्रिकेटर ने 14 चौके और चार छक्के लगाकर 101 रन बनाये। विंस की इस पारी के बल पर कराची किंग्स ने 236 रनों का लक्ष्य छह विकेट पर ही हासिल कर लिया। विंस ने 42 गेंदों पर ही शतक लगाया। ये पीएसएल इतिहास में तीसरा सबसे तेज शतक है। पीएसएल में सबसे तेज शतक लगाने का रिकॉर्ड उस्मान खान के नाम पर है, जिन्होंने 2023 के सत्र में क्रेटा ग्लैंडिएटर्स के खिलाफ 36 गेंदों पर ही शतक लगा दिया था।

नई गेंद बनी दिल्ली की हार का कारण: सिद्धू

नई दिल्ली। आईपीएल में मुंबई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स के बीच मुकाबले में दिल्ली जीत के करीब पहुंचकर भी हार गयी। इस मैच में मुम्बई ने नई गेंद मंगवाई जिससे मुकाबला पलट गया। पूर्व क्रिकेटर से कमेंटेटर बने नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि मैच में मुम्बई के नई गेंद लेने से करुण आऊट हुए जिससे मुम्बई की टीम मैच में वापसी में सफल रही। मैच के 14वें ओवर में गेंद बदली गयी। जिसके बाद करुण नायर 89 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। दिल्ली को जीत के लिए 56 गेंदों में 70 रन चाहिए थे पर करुण के बाद केएल राहुल, ट्रिस्टन स्टब्स और कसान अपर पटेल रन नहीं बना पाये। सिद्धू के अलावा वीरेंद्र सहवाग ने कहा कि गेंद का बदलना दिल्ली के लिए नुकसानदेह रहा। सहवाग वे कहा, - गेंद का बदलना दिल्ली पर भारी पड़ गया। हर बार आपको आशुतोष शर्मा मैच नहीं जिता सकते। आज किसी और का दिन था। गेंद बदलने के बाद ही राहुल, स्टब्स ने अपने विकेट गंवा दिये। इस मैच में मुंबई इंडियंस के इपैक्ट खिलाड़ी कर्ण शर्मा ने चार ओवर में 36 रन देकर तीन विकेट लिये। करुण और बुमराह में हुआ विवाद

नई दिल्ली। मुंबई इंडियंस और दिल्ली कैपिटल्स के बीच यहां हुए आईपीएल मैच में करुण नायर और जसप्रीत बुमराह के बीच विवाद हो गया। इस मैच में करुण ने 89 रन बनाये। बल्लेबाजी के दौरान करुण ने बुमराह की जमकर पिटाई की और उनके एक ही ओवर में 18 रन बना दिये। इसके बाद बुमराह, करुण पर भड़क गये। ये मामला तब का है जब करुण ने अपना अर्धशतक पूरा किया। उसी दौरान दोनों ही आपस में टकरा गए थे।बुमराह की अंतिम गेंद पर करुण ने दो रन लिए और अर्धशतक लगाया जब वह दूसरा रन लेने के लिए दौड़ रहे थे।



कतर में मोटो जीजी एस में जीत के बाद डुकाटी लेनेवो के मार्क मार्क्वीज ट्रॉफी के साथ पोज़ियम में जश्न मनाते हुए।

रोहित का लगातार रन नहीं बना पाना चिन्ताजनक : मांजरेकर

मांजरेकर ने कहा, ‘रोहित शर्मा एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जिससे साफ है कि वह पहले वाले रोहित नहीं रहे

एजेंसी ■ अहमदाबाद

पूर्व बल्लेबाज संजय मांजरेकर ने कहा है कि आगामी भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा लगातार रन नहीं बना पाना चिन्ताजनक है। भारतीय टीम आईपीएल के बाद इंग्लैंड दौरे पर भी जाना है उसको देखते हुए रोहित का फार्म हासिल करना जरूरी है। मांजरेकर ने कहा कि टेस्ट ओर टी20 प्रारूप अलग होता है पर इसके बाद भी रन बनने से खिलाड़ी की लय बनी रहती है और उसका मनोबला बढ़ा हुआ रहता है। मांजरेकर ने कहा कि रोहित आईपीएल में भी अब तक रन नहीं बना पाये हैं। इससे साफ है कि अब हालात उनके नियंत्रण से बाहर होते जा रहे हैं। ऐसे में अब उन्हें बेहतर प्रदर्शन के लिए पूरी ताकत लगाकर प्रयास करना होगा। हर सुबह अपना सब कुछ लगाना होगा तभी वह लय हासिल कर सकते हैं। वह आईपीएल के मैचों में सहज नहीं दिखे। मांजरेकर ने कहा, ‘रोहित शर्मा एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जिससे साफ है कि वह पहले वाले रोहित नहीं रहे। अब वह अपने करियर के उस जगह पर हैं जहां उन्हें हर सुबह अपना सब कुछ लगाना होगा। कड़ी ट्रेनिंग करनी होगी और फिटनेस के सर्वश्रेष्ठ स्तर पर पहुंचना होगा तभी वह



कुछ कर पायें। वह अब भी अपनी नैसर्गिक प्रतिभा पर भरोसा कर रहे हैं जबकि अब वह नहीं रही। वहीं पिछले दो मैच में रोहित की टीम मुम्बई के प्रदर्शन का आंकलन करते हुए मांजरेकर ने कहा, ‘ इस टीम से खेल रहे दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी रेयान रिक्लेटन को भारतीय पिचों पर ढलने में समय लगेगा। साथ ही कहा कि एबी डिविलियर्स और हेनरिक क्लासेन को छोड़कर बहुत कम दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाजों ने भारतीय पिचों पर

सफलता हासिल की है इसलिए हमें उन्हें समय देना होगा। उन्होंने कहा, ‘इसके अलावा तिलक वर्मा और सूर्यकुमार यादव, रोबिन मिंज और कुछ अन्य खिलाड़ियों के साथ मिलकर बल्लेबाजी क्रम बनाते हैं। हालांकि मुझे लगता है कि यह अब भी पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं है और उनमें से बहुत से खिलाड़ी ऐसी पिचों पर निर्भर करते हैं जहां गेंद बल्ले पर अच्छी तरह से आती है। ऐसे में इन खिलाड़ियों को परेशानी आ सकती है।

विश्व तीरंदाजी : भारत के धीरज को मिला कांस्य

ऑर्बनडेल। भारत के धीरज बोम्मदेवरा ने यहां हुई विश्वकप तीरंदाजी के चरण एक के व्यक्तिगत रिकर्व वर्ग में कांस्य पदक जीता है। वहीं इस टूर्नामेंट में भारतीय पुरुष रिकर्व टीम को भी रजत पदक मिला है। इसके अलावा मिश्रित टीम स्पर्धा में कांस्य पदक मिला था। इस प्रकार भारत को इस टूर्नामेंट में कुल मिलाकर चार पदक मिले हैं। धीरज ने कांस्य पदक के लिए खेले गए मैच में 2-4 से पीछे होने के बाद शानदार वापसी करते हुए स्पेन के एंज्रेस टेमिनो मेंडिएल को पांच सेट के मुकाबले में 6-4 से हराया। धीरज को हालांकि सेमीफाइनल में विश्व के चौथे नंबर के खिलाड़ी जर्मनी के फ्लोरियन उनरुह से 1-7 से हार का सामना करना पड़ा। धीरज , तरुणदीप राय और अतनु दास के साथ टीम स्पर्धा के फाइनल में चीन से 1-5 से हारे थे जिससे भारत को रजत पदक ही मिल पाया था। वहीं इससे पहले भारत को मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण और कपांडउ पुरुष टीम स्पर्ध में कांस्य पदक मिला था।

आक्रामक पारी के बाद भी टीम को जीत नहीं दिला पाने से निराश हैं करुण



एजेंसी ■ नई दिल्ली

बल्लेबाज करुण नायर की आक्रामक पारी के बाद भी दिल्ली कैपिटल्स को आईपीएल में मुम्बई इंडियंस के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा है। इस सत्र में ये दिल्ली की पहली हार है। इससे निराश करुण ने कहा कि अगर रन

बनाने के बाद भी टीम नहीं जीतती है तो अच्छी पारी खेलने का भी कोई मतलब नहीं है। करुण ने इस मैच में 12 चौके और 5 छक्के की मदद से 40 गेंद में 89 रनों की पारी खेलकर शानदार वापसी की है। इससे पहले के मैचों में वह कुछ खास नहीं कर पाये थे। घरेलू

क्रिकेट में काफी रन बनाने के बाद करुण को आईपीएल में अवसर मिला था। इस बल्लेबाज ने दिल्ली कैपिटल्स के लिए आईपीएल इतिहास की सबसे अच्छी पारियों में से एक खेली। 205 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए वह इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर उतरे थे। इस दौरान करुण ने जसप्रीत बुमराह तक की गेंदों पर भी जमकर स्टोक खेले। करुण साल 2022 वह पहली बार आईपीएल में खेल रहे थे। करुण ने कहा, -हम मैच जीतने के लिए खेलते हैं, इसलिए मैं निराशा है क्योंकि हम चाहे कितना भी स्कोर करें अगर टीम नहीं जीतती है तो उसका कोई अर्थ नहीं है।



मैनचेस्टर में महिला एफए कप के सेमीफाइनल में खेलती हुई मैनचेस्टर सिटी और मैनचेस्टर यूनाइटेड की टीमें।

धोनी अब संन्यास लेकर कमेंट्री करें : हेडन

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर और चैनर्न सुपर किंग्स (सोएसके) में रहे मैथ्यू हेडन ने कहा है कि विकेटकीपर-बल्लेबाज महेन्द्र सिंह धोनी को अब संन्यास लेकर कमेंट्री करनी चाहिये। हेडन ने कहा कि धोनी अब अपने करियर के अंतिम चरण में हैं। इसलिए उन्हें वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिये। आईपीएल के इस सत्र में धोनी का प्रदर्शन अब तक उम्मीद के अनुसार नहीं रहा है और वह एक भी मैच में बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं। धोनी बल्लेबाज के लिए निचले क्रम पर भी उतरते हैं। इसके पीछे का कारण कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने ये बताया है कि धोनी का शरीर अब पहले जैसा नहीं है।

दैनिक

सत्ता सुधार

समाचार एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

विनोद तिवारी

जिला ब्यूरो प्रमुख दमोह

मो. 6266038075

योगदान सराहनीय योगदान के लिए देश के सबसे बड़े सम्मान नाइटहुड से सम्मानित किया गया नाइटहुड से सम्मानित होने वाले 13 वें क्रिकेटर हैं एंडरसन

एजेंसी ■ लंदन

इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर जेम्स एंडरसन को खेल के क्षेत्र में उनके सराहनीय योगदान के लिए देश के सबसे बड़े सम्मान नाइटहुड से सम्मानित किया गया है। एंडरसन इंग्लैंड की ओर से टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। एंडरसन ने अपने करियर में कुल 188 टेस्ट मैच खेले हैं। ये किसी तेज गेंदबाज द्वारा खेले गए टेस्ट मैचों की सबसे ज्यादा संख्या है। एंडरसन 13वें क्रिकेटर हैं जो खेल में योगदान देने के लिए नाइटहुड उपाधि से सम्मानित हुए हैं। अब तक ये सम्मान सर विली हेमिंग्स (1954), सर डिक हार्टले- (1958), सर एडगर फ्राय (1959), सर वॉरेन बर्ड (1961), सर क्लाइव लॉयड (1983), सर इयान बॉथम (2007), सर ज्योफ बॉब (1999),सर जॉन रिक्लेट्स (2007),सर ग्रांट लॉब (2012), सर जॉन टेरर (2015), सर ब्रायन लारा (2019), सर माइकल क्लार्क (2020)। एंडरसन



साल 2000 से यह सम्मान पाने वाले पांचवें खिलाड़ी हैं। उनसे पहले इयान बॉथम (2007), बॉयकाट (2019), कुक (2019) और स्ट्रॉस (2019) को यह सम्मान मिला था। जेम्स एंडरसन ने अपना अंतिम टेस्ट मैच जुलाई 2024 में वेस्ट इंडीज के खिलाफ लॉर्ड्स में खेला था। मई 2003 में यहीं पर एंडरसन ने जिम्बाब्वे के

खिलाफ डेब्यू किया था। एंडरसन ने साल 2015 से ही सीमित ओवरों में नहीं खेला है। इसके बाद भी वह एकदिवसीय में सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। उन्होंने टी20 में भी 18 विकेट लिए हैं और उनके नाम कुल 991 विकेट हैं। एंडरसन के अलावा पांच अन्य लोगों के लिए भी नाइटहुड सम्मान मिला है।

कोहली डिहाइड्रेशन से परेशान हुए

जयपुर। आईपीएल में यहां राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु (आरसीबी) के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली तेज गरमी के कारण परेशान दिखे। इस कारण बीच में मैच भी रोकना पड़ा। मैच में अचानक ही विराट ने राजस्थान के कप्तान संजु सैमसन से धड़कन देखने को कहा। सैमसन इसके बाद विराट के पास पहुंचे। इसी बीच मेडिकल टीम भी मैदान पर आ गयी। ये टीम विराट के पास पहुंची और उनकी जांच की। इसमें पाया गया कि वह पानी की कमी से बेचेन हुए हैं। वहीं कमेंटेटर नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि दोपहर की तपती गर्मी के कारण कोहली डिहाइड्रेशन का शिकार हो गए थे। उन्हें जल्दी हाइड्रेट किया गया, जिसके बाद वह फिर से खेलने लगे। उन्होंने खेल फिर से शुरू किया। विराट ने इस मैच में अर्धशतक लगाते ही एक अहम उपलब्धि हासिल कर ली। वह टी20 में 100 अर्धशतक लगाने वाले पहले एशियाई बल्लेबाज बन गए हैं। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज डेविड वानरन टी20 क्रिकेट में 100 अर्धशतक लगाने वाले पहले क्रिकेटर हैं।

लॉर्ड कृष्णा पब्लिक हाई स्कूल

Play group, Nursery, LKG, UKG, Ad to 10th classes

ADMISSION OPEN

LKG's makes education easier and better

विद्या नगर, गुल्बर गांव दरगार के पास, सती गेट, सिवपुरी (म.प्र.)

Mobile: 9425488667, 8770753472, 7874832538

मोहन भागवत ने प्रदेश के पहले संघ भवन का किया उद्घाटन

बोले- भारत हिंदू समाज का घर है और संघ जीवन

सत्ता सुधार ■ कानपुर

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक डॉ. मोहन मधुकर भागवत ने सोमवार को कारवालोनगर में नवनिर्मित प्रदेश के पहले संघ भवन का उद्घाटन किया। इस दौरान बड़ी संख्या में संघ कार्यकर्ता मौजूद रहे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए समाज को कार्य करना होगा। भारत हिंदू समाज का घर है। संघ जीवन है। संघ का कार्य सबके जीवन में



सुचिता और करुणा लाना है। भागवत ने बाबा साहब को याद करते हुए कहा कि उन्होंने हिंदू समाज को विषमता से बाहर लाने का काम किया। भागवत पांच दिन शहर में ही प्रवास करेंगे। अपनी इस

यात्रा के दौरान वह क्षेत्र और कानपुर प्रांत से जुड़े प्रचारकों के साथ बैठक कर अक्टूबर में होने वाले संघ के शताब्दी वर्ष की कार्ययोजना तैयार करेंगे। इसे पूरे देश में अभियान के तौर पर लागू किया जाएगा।

प्रचारकों के साथ करेंगे बैठक

शाम को वह क्षेत्र, प्रांत, विभाग, जिला प्रचारकों के साथ बैठक कर सेवा, समरसता, पर्यावरण के क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यों पर भी चर्चा करेंगे। इसमें घर-घर तुलसी वितरण, प्लास्टिक के प्रयोग से होने वाली हानियों पर भी बातचीत की जाएगी। वह 15 तथा 16 अप्रैल को संघ के छह आयाम में से एक सेवा विभाग के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करेंगे। इसके बाद 15

राजस्थानी लाल पत्थरों से बना है संघ भवन

नवनिर्मित चार मंजिल संघ भवन में राजस्थान से लाए गए लाल पत्थरों का प्रयोग किया गया है। भवन की पेंटिंग गोबर मिश्रित विशेष पेंट से कराई गई है। भवन का मुख्य द्वार और चारदीवारी भी लाल पत्थर से बनाई गई है। भवन के बेसमेंट में पार्किंग के अलावा एक बड़ी लाइब्रेरी की स्थापना भी की गई है। यहां पर सभी हिंदू धर्मा, इतिहास को बताने वाले साहित्य और ज्ञानवर्धक पुस्तकें रखी गई हैं। भागवत ऐसे पहले सर संघ चालक हैं, जो उत्तर प्रदेश के किसी संघ भवन में पहली बार प्रवास कर रहे हैं। अभी तक जब भी उनका कानपुर या प्रदेश के किसी भी जिले में आना हुआ है, उनका प्रवास संघ कार्यालयों की जगह किसी अन्य स्थान पर ही रहा है। अभी तक प्रदेश में संघ की अपनी कोई ऐसी जगह नहीं थी।

को ही कोयला नगर और 16 को निराला नगर की शाखा में शामिल होने जाएंगे। 17 को संघ की प्रांत

कार्यकारिणी के साथ संघ शताब्दी वर्ष में संघ पंच परिवर्तन को लेकर चर्चा की जाएगी।

16 अन्य मंदिरों पर भी होगी स्थापना

राम मंदिर के गर्भगृह के मुख्य शिखर पर पूजन कर स्थापित किया कलश

18 महीने में तैयार होगी राम मंदिर की चार किलोमीटर लंबी सुरक्षा दीवार

सत्ता सुधार ■ लखनऊ

अयोध्या के राम मंदिर के गर्भगृह के मुख्य शिखर पर कलश की स्थापना कर दी गई है। इसी तरह परिसर में बन रहे अन्य मंदिरों पर भी कलश रखा जाएगा। राम मंदिर के मुख्य शिखर पर कलश स्थापना का काम शुरू कर दिया गया है। सतुआ संक्रांति के शुभ मुहूर्त पर राम जन्मभूमि मंदिर के गर्भगृह के मुख्य शिखर पर कलश पूजन विधि शुरू करके कलश स्थापित किया गया। तीन वैदिक आचार्यों ने कलश पूजन कराया।

राम मंदिर समेत जन्मभूमि परिसर में बन रहे अन्य 16 मंदिरों के शिखर पर भी अब कलश स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। जैसे-जैसे मंदिर के शिखर तैयार होते जाएंगे, उन पर कलश भी स्थापित होता जाएगा। राम मंदिर भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र ने सोमवार को बताया कि राम मंदिर के संपूर्ण परिसर में भवन निर्माण



समिति की ओर से किए जा रहे काम छह महीने में समापन की तरफ बढ़ रहे हैं। तीन आवश्यक कार्य ऐसे हैं, जिनको शुरू किया जाना अति आवश्यक है। इसके अलावा किसी भी तरीके के नए निर्माण का काम नहीं किया जाएगा। प्रमुख रूप से तत्काल सुरक्षा की दृष्टि से दीवार का निर्माण होना है, जो

लगभग चार किलोमीटर लंबी है और इसे 18 महीने में तैयार किया जाएगा। इसका निर्माण इंजीनियर इंडिया लिमिटेड की ओर से किया जाएगा। राम मंदिर की सुरक्षा दीवार के लिए ऊंचाई और उसके स्वरूप को लेकर अंतिम निर्णय ले लिया गया है। मिट्टी के सॉइल टेस्ट के साथ ही निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष ने बताया कि राम मंदिर में यात्री सुविधा केंद्र की क्षमता बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। इसको लेकर राम मंदिर परिसर में 10 एकड़ भूमि पर शुरू और 62 कांटर बनाए जा रहे हैं। इसमें यात्री अपनी सुविधा से सामान रख सकेंगे। राम मंदिर परिसर में 10 एकड़ पर साधना स्थल या यूं कहा जाए कि एक पार्क बनाया जा रहा है। इसका धार्मिक गतिविधि में इस्तेमाल किया जाएगा। इस पार्क में रामभक्त अपने आराध्य का पूजन अर्चन राम जन्मभूमि परिसर में कर सकेंगे।

मिट्टी वितरित किए जाने को लेकर दिया बयान

राम मंदिर परिसर में रामभक्तों को मिट्टी वितरित किए जाने को लेकर भवन निर्माण समिति के अध्यक्ष ने खंडन करते हुए बताया कि 10 एकड़ भूमि जहां पर साधना स्थल या पार्क बनाया जाएगा, उस स्थल पर पटाई की आवश्यकता और वहीं पर मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। जन्मभूमि की मिट्टी पूजनीय है और हम नहीं चाहते कि हमारी ओर राम भक्तों की आस्था को किसी तरीके की ठेस पहुंचे। इसलिए हम रामजन्म भूमि परिसर में ही इस मिट्टी का उपयोग करेंगे।

इसके साथ ही इस पार्क को कुबेर टीला स्थित पार्क से मिलाया जाएगा ताकि दोनों स्थलों पर हरियाली बनी रहे।

आंबेडकर जयंती पर अखिलेश बोले-देश संविधान से चलना चाहिए

कानपुर। डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती के मौके पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके साथ उन्होंने संविधान पर हमले की बात दोहराई। आंबेडकर जयंती के मौके पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव लखनऊ के हजरतगंज चौराहे पर लगी बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने पहुंचे। इस मौके पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि संविधान ही हमारा रक्षक है। समाज के निचले और कमजोर तबके की रक्षा संविधान ही करेगा।

मुख्यमंत्री योगी ने कैबिनेट के साथ डॉ. आंबेडकर को दी श्रद्धांजलि

माल्यार्पण कर उनके योगदान को किया याद

सत्ता सुधार ■ कानपुर

आंबेडकर जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर की हजरतगंज स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके योगदान को याद किया। आंबेडकर जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ के हजरतगंज स्थित डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उनके योगदान को याद किया।

इस मौके पर उनके साथ उनकी कैबिनेट के सहयोगी भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री योगी ने डॉ. आंबेडकर के योगदान को याद करते हुए एक्स पर कहा कि सर्वसमावेशी, सर्वहितग्राही, उत्कृष्ट लोकतांत्रिक मूल्यों से दीप्त, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को समृद्ध करते

भारतीय संविधान के शिल्पकार, बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की जयंती पर उन्हें



बुजुर्गों का सहारा बनेगा... 'डे केयर सेंटर', सीएम योगी करें लोकार्पण

गोरखपुर। सिविल लाइंस में नगर निगम की तरफ से दाईं करोड़ की लागत से डे केयर सेंटर का निर्माण कराया गया है। इस भवन में बुजुर्गों के मनोरंजन के लिए किताबें, पेंटिंग के सामान, योग, ध्यान और कार्डसिलिंग के अलावा चिकित्सकीय सुविधाएं भी मौजूद रहेंगी। नगर निगम की तरफ से सिविल लाइंस में बनवाए गए 'डे केयर सेंटर' का 19 अप्रैल को मुख्यमंत्री योगी लोकार्पण कर सकते हैं।

कोटि-कोटि नमन। वे सच्चे अर्थों में भारत रत्न एवं लोकतंत्र की जीवंत पाठशाला थे।

ग्वालियर में मेडिकल और इंजीनियरिंग की तैयारी के लिए छात्रों की पहली पसंद वरदानी क्लासेस

सत्ता सुधार ■ ग्वालियर

ग्वालियर के शैक्षणिक परिदृश्य में वर्धानी क्लासेस एक भरोसेमंद और लोकप्रिय नाम बन चुका है। संस्थापक एवं सीईओ डॉ. करण वर्धानी के मार्गदर्शन में यह संस्थान NEET और IIT-JEE जैसी कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं की प्रभावशाली तैयारी करवाता है।

सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां सिर्फ पढ़ाई नहीं, बल्कि छात्रों की सोच, आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को भी मजबूत किया जाता है। 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए यह संस्थान फाउंडेशन कोर्स के साथ-साथ बोर्ड और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए एक समग्र तैयारी

VARDHANI CLASSES
Founder & CEO: Dr. Karan Vardhani

BIOLOGY

NEET IT-JEE

9th 10th 11th 12th

Class Class Class Class

And Foundation Courses

MATHS PHYSICS CHEMISTRY

HUMANITIES AGRICULTURE

ARTS COMMERCE PAT

9144255864, +9181037 67908

12th 10th 9th 8th 7th 6th 5th 4th 3rd 2nd 1st

100% SCHOLARSHIP TEST

JOIN NOW

CORPORATE Gifting Solution

GIFTS

TOH SIRF HUMSE

+91 - 9993106789, 7771000255

giftslo123@gmail.com

OUR PRODUCTS

- Customised Wallet
- Customised Pen
- Customised Keychain
- Customised Bottle
- Customised Mug
- Customised Ring
- Customised Pendant
- Customised Passport Cover
- Customised Sunglasses Holder
- Customised Bracelet
- Customised Cap
- Customised Hampers

ALL TYPE OF CUSTOMISED ITEMS AVAILABLE

मिथिला नवतर्वष वमिथिला वैभव गाथा पुस्तक विमोचन समारोह अनुज कुमार झा बोले-

महाकवि विद्यापति ने तीन भाषाओं में किया साहित्य सृजन

सत्ता सुधार ■ लखनऊ

मिथिला मंच, लखनऊ के तत्वावधान में मिथिला नववर्ष तथा मिथिला वैभव गाथा पुस्तक विमोचन समारोह उद्यान निःशालय के सभागार में मुख्य अतिथि अनुज कुमार झा सचिव नगर विकास तथा निर्देशक सूडा एवं स्थानीय निकाय, लखनऊ, विशिष्ट अतिथि पि के ठाकुर ज्योतिष डायरेक्टर वरुण विभागा ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ

किया। समारोह में मिथिला गौरव सम्मान से केजीएमयू में चिकित्सा अध्ययन रत युवा को सम्मानित किया गया। वरिष्ठ पत्रकार तथा संपादक सुरेन्द्र अग्निहोत्री द्वारा संपादित 'मिथिला गौरव गाथा' पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि अनुज कुमार झा, पी के ठाकुर, सुरेन्द्र अग्निहोत्री, संचालन कर रहे वरिष्ठ कथाकार मुक्ति नाथ झा, मिथिला मंच के अध्यक्ष जितेंद्र झा, शिव शंकर द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अनुज कुमार झा ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें गौरव प्राप्त है कि हमारे पूर्वज महाकवि विद्यापति को बंगला भाषी, हिन्दी भाषी और

मैथिली भाषी अपना आदि कवि मानते हैं। तीन -तीन भाषाओं में अद्वितीय साहित्य सृजन किया गया है।आज जब लोक भाषा विलुप्त हो रही है तब पूरे कार्यक्रम का संचालन मैथिली में करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। मैथिल समाज की समृद्ध संस्कृति और खासगान को प्रचारित करने की जरूरत है। मैथिली वैभव गाथा पुस्तक निश्चित ही महत्वपूर्ण रहेगी। मंच के अध्यक्ष जितेंद्र झा ने स्वागत भाषण में मंच की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।मिथिली संस्कृति की झलक के रूप में ज्योति झा, सलोनी झा, अयोध्या से आए लव कुश ने राम कथा का गायन किया। कवियों ने शानदार प्रदर्शन किया।अंत में निमेष ठाकुर ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मुक्ति नाथ झा ने किया।

घर बैठे कमाए

सरकारी मान्य कंपनी द्वारा जमीन खेत प्लॉट छत पर 5g टावर लगवा कमाएं 30 से 60 लाख एडवांस 45000 किराया +नौकरी जमीनी नक्शा ऑफिस आये व घर बैठे ऑनलाइन सर्वे पास कराएं

8319401203 9407780635